दीय-कोष

AN ENCYCLOPAEDICAL AYURVEDIC-DICTIONARY



संकलन कर्ता—

बाबू रामजीत सिंह जी वैद्य

बाबू दलजीत सिंह जी वैद्य

॥ ओ३म् ॥

आयुर्वेदीयानुसंधान—ग्रन्थमाला का द्वितीय पुष्प

आयुर्वेदीय-कोष

An Encyclopaedical Ayurvedic Dictionary

(with full details of Ayurvedic, Unani and Allopathic terms)

अर्थात्—

आयुर्वेद के प्रत्येक अङ्ग प्रत्यङ्ग सम्बन्धी विषय यथा—निघण्टु, निदान, रोग विज्ञान, विकृति विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, कीटाणु विज्ञान आदि २ अनेक विषय के शब्दों एवं उनके अन्य भाषा के पर्याय का विस्तृत व्याख्या सहित अपूर्व संग्रह। व्याख्या में प्राचीन व अर्वाचीन मतों एवं चिकित्सा प्रणाली त्रय के अनुसार तुलनात्मक एवं गवेषणा पूर्ण विवेचन किया गया है। इसमें लगभग २००० वनस्पतियों, खनिज एवं प्राणिवर्ग की औषधियों के आजतक के शोधोंका सर्वांगीण वर्णन है, संक्षेप में आयुर्वेद सम्बन्धी कोई भी विषय नहीं चाहे वह प्राचीन हो या नवीन जिसका समावेश इसमें नहो।

सङ्कलन कर्ता—
बाबू रामजीतसिंहजी वैद्य
बाबू दलजीतसिंहजी वैद्य
रामपुरी, चुनार (यू० पी०)

प्रकाशक—
पं० विश्वेश्वरदयालुजी वैद्यराज
सम्पादक—अनुभूत योगमाला,
बराकोकपुर-इटावा (यू० पी०)

सन् १९३४ ई० व सम्वत् १९९१ वि०

प्रथम संस्करण
प्रथम बार

इस अंक का मूल्य



पं० विश्वेश्वरदयालुजी के प्रबन्ध से श्रीहरिहर प्रेस, बरालोकपुर-इटावा में मुद्रित।

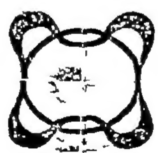


कृपया

इस कोष में समस्त भाषा के शब्द देवनागरी वर्णमाला के क्रमानुसार रखे गये हैं। अरबी, फारसी आदि अन्य भाषाओं के एक ही वर्ण के समानोच्चारण वाले कई २ वर्णों यथा हिन्दी के केवल एक "ज" के स्थान में फारसी वर्णों के जीम, ज़ाल, ज़े, झे, ज़ाद, और ज़ो प्रभृति अनेक "ज" के लिये क्रम में कोई भेद स्थिर नहीं किया गया है, परन्तु "ज" मानकर ही उन्हें हिन्दी वर्ण क्रम में स्थान दिया गया है। शेष अन्य समस्त वर्णों के लिये भी इसी भांति समझ लेना चाहिये। चूंकि देवनागरी वर्णमाला अन्य किसी भी भाषाके वर्णमाला की अपेक्षा अधिक पूर्ण एवं स्वाभाविक है और उसमें इतने पर्याप्त ध्वनियों का समावेश है, कि अन्य भाषा की ध्वनि को हिन्दी में प्रकट करने में कोई अड़चन उपस्थित नहीं होता। अन्य भाषा में जो अधिक ध्वनियां आई हैं वे या तो एक ही ध्वनि के भेदोपभेद मात्र हैं अथवा वे इतनी आवश्यक नहीं और उनका समावेश अपने मूल ध्वनि में हो सकता है। अतः देव नागरी वर्णक्रम में कोई परिवर्तन करना हमें उचित न जान पड़ा। हाँ! जो एक २ वर्ण के स्थान में कई कई वर्ण आये हैं उन्हें अथवा उनके किसी विशेष उच्चारण को स्पष्ट करने के लिये कुछ चिह्न मान लिये गये हैं।। वर्ण क्रम निम्न है।

—:०:—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ
ओ औ अं अः।
क ख ग घ ङ। च छ ज झ ञ।
ट ठ ड ढ ण। त थ द ध न।
प फ ब भ म। य र ल व।
श ष स ह क्ष त्र ज्ञ



कु० टी०, कुसामां०	कुसुमायली टीका
कूर्म०	कूर्म
कु० नफी०	कुल्लियात नफीसी
कुमा० तं०	कुमार तंत्र
कुश्ता० र०	कुश्ता आन रहीमी
कुश्ता फी०	कुश्ताजात फीरोज़ी
कौमा भृ	कौमार भृत्य
कौं०	कौकण, कौकणी
ख०	खसिया
खुला० न०	खुलासतुलफाइस
खं०	खंड
ग० गं०	गलगंड
ग०	गध
गढ़०	गढ़वाल
गज० वै०	गज वैद्यक
गं० मा०	गंडमाला
गा०	गारो
गि० लु०	गियासुल्लुगात (हिन्दुस्तानी फारसी अरबी लोगात)
गु०	गुटी, (स्त्री)
गुरुभू०	गुरुभ्रंश
गुर्ज० गु०	गुर्जरी, गुजराती
गु० व०	गुडूच्यादि वर्ग
गो०	गोंडा
गोंड़०	गोंडल, गोंडाली
गंगा० परि०	गंगाधर परिभाषा
ग्र०	ग्रह
ग्रह०	ग्रहणी
ग्री० (यु०)	ग्रीक (युनानी)
च०	चगाय
चक्र० द्र०	चक्रदत्त, चक्रपाणि द्रव्यगुण
च० द्र० (सं०)	चक्रपाणिदत्त द्रव्य संग्रह
चान्द्र० तै०	चन्द्रनादि तैल
च० वि०	चरक विमान स्थान
च० सं०	चरक संहिता
चातु० ज्व०	चातुर्थक ज्वर
चाँ०	चाँदा
चि०	चिकित्सा स्थान
चि० क्र० क० (पक्षी)	चिकित्सा क्रम-कल्पवल्ली
चिट०	चिटगांव
ची०	चीनी
चू०	चूर्ण
छे० शा०	छेदनशास्त्र
छो०	छोटा
छो० ना०	छोटानागपुर
जखी० ख़ा०	जखीरहे ख़ार्जमशाही
जटा०	जटाधर
जय० द०	जयदत्त
जर०	जरमनी
जय०	जयपुर
जा०	जावा
जापा०	जापान
जी० एम० एम०	जोसेफ मेटीरिया मेडिका
जन्तु० शा०	जन्तु शास्त्र
जं०	जङ्गली
ज्व०	ज्वर
ज्वराति०	ज्वरातिसार
टेलर०	टेलरम
ट्रां० ए०	ट्रांस एण्डस
टी०	टीका
ड०	डल्वण
डमा०	डमन मिश्र

टै०	टैकम
सू०	सॉफ्टरी फ्री
त० म०	तजुमा मफ़ासी
	फ़ते सामा इल्मुल् मकूयियह्
तश० फ०	तशरीह फयीर
ता० (तामि०)	तामिल
तालु० मु० रो०	तालुगतमुखरोग
ता० श०	तालीफ़ शरीफ़ी
तिब्ब०	तिब्बठं
ति० फ़ा०	तिब्बी फ़र्माकोपिया १ व २ भा०
ति० अ०	तिब्बे अकबरी
ति० की०	तिब्बे कीमियाई
तिर०	तिर्हुत
तु०	तेलु
तुर०	तुरकी
तू०	तुम्बा
ते० तेल०	तेलगु, तैलंग
तै०	तैत्र
।० तो०	अद्ध तोला
तो०	तोला (तोलक)
तोड़०	तोडरानन्द
तो० मो०	तोहफ़तुल मोमीन
त्रि०	त्रिलिंग
त्रि का०	त्रिकाण्ड शेष
था० डि०	थाना डिस्ट्रिक्ट
द०	दखिनी
द० ध०	दखिनी धर्मा
द० भा०	दक्षिण भारत
दन्त० रो०	दन्तरोग
द० मु० रो०	दन्तगत मुख रोग
द० प०	दधिपत्र
दश०	दशक
दा० हि०	दाक्षिणात्य हिन्दी
दु० व०	दुग्धवर्ग
दुर्गा० मे० मे०	दुर्गादासकर मक्का मेटी रिया मेडिका
द्रव्याभि०	द्रव्याभिधान
द्राधि०	द्राविड़ी
द्वि० (रूप०)	द्विरूपकोष
ध० निघ०	धान्वन्तरि निघण्टु
धर०	धरणिः
धा० वि० प्र०	धातुविद्या प्रकाश
धा० (न्य) व०	धान्यवर्ग
ध्व० भ०	ध्वजभंग
नाना०	नानार्थ
ना० म०	नाडीमुख
ना० मु०	नासिरुल् मुआलजीन
ना० रो०	नासारोग
ना० वि०	नाड़ी विज्ञान
नि०	निदान स्थान
निदा०	निदान
ने० दृ० रो०	नेत्र दृष्टिगत रोग
ने० रो०	नेत्ररोग
ने० व० रो०	नेत्र वर्त्मगत रोग
ने० शु० रो०	नेत्र शुक्लगत रोग
ने० सन्धि० रो०	नेत्र सन्धिगत रोग
नेपा०	नेपाल
न्या० वै०	न्याय वैद्यक
पं०	पञ्जाब (बी)
प०	पल, परिच्छेद
पद्म०	पद्मा
प० नि० मो०	पर्य्याय निर्णायक मोट

प० प०	पथ्यापथ्य
प० प्र०	परिभाषा प्रदीप
प० म०	परमेद
प० मु०	पर्य्याय मुक्तावली
पहा०	पहाड़ी
पश्तु: पश्तु	अफ़गानी भाषा
पा० अजा०	पामाजीर्ण
पि० ज्व०	पित्तज्वर
पि० व०	पिप्पल्यादिवर्ग
पी० बी० एम	प्रैक्टिकल बेड मीदम
पुं०	पुंलिंग
पुर्त०	पुर्तगीज़ी
पु० व०	पुष्पवर्ग
पू०	पूर्व खण्ड, पूर्व भाग
पू० भा०	पूर्वीय भारत
पू० त०	पूर्वीय तराई
पो० बं०	पोरबन्दर
प्र०	प्रत्येक, प्रयोग, प्रस्तारणी,
प्रमे० (हा०)	प्रमेह
प्रयोगरत्न०	प्रयोगरत्नाकर
प्रयोगा०	प्रयोगामृत
प्र० शा०	प्रत्यक्ष शारीर (म० म० ग० गणनाथसेन विरचित)
प्रसू० तं०	प्रसूति तंत्र
प्रसू० शा०	प्रसूति शास्त्र
प्रह०	प्रहर
प्रा०	प्राकृत
ग्रे०	ग्रेन
फ० वे०	फलवर्ग
फा०	फ़ारसी
फा० इं०	फार्माकोफाफिया इंडिका [डा० वि डाइमाक विरचित] १,२ खंडा०
फार्म०	फार्म ब्र (हिंदी अँगरेजी कोष
फि०	फिरंगी
फ्रें० (फ्रां०)	फ्रेंच (फरान्सीसी)
ब० व०	बहुवचन
ब्र० व०	बर्मा (बर्मी]
बम्ब०	बम्बई
बरब०	बरबरी
ब० ज०	बहरुल जवाहिर (अरबी वैद्यक कोष)
ब० से० सं०	बंगसेन संहिता
बं० क०	बन्ध्या कल्पद्रुम
बं० भाष०	बंगाल [स्त्री]
बु० मु०	बुस्तानुल मुफ़र्दात
बु० क़ा०	बुहनिक़ातीस
बेरा०, बे०	बेरार, बेलूची
बोखा०	बोखारा
बुन्दे०	बुन्देलखण्ड
ब्रिटि० फा०	ब्रिटिश फार्माकोपिया
ब्या० क० ३ भा०	ब्याज़ कबीर १, २, ३ भाग
भग०	भगन्दर
भ० द्विरूपकोषी	भरतद्विरूप कोष
भ० रसस०	भरतघृत रससं
भल्ला० गु०	भल्लातक गुड़
भा०	भाग, भारत, भावप्रकाश
भा० पू०	भावप्रकाश पूर्व भाग
भा० म०	भावप्रकाश मध्य भाग
भा० र० शा०	भारतीय रसायनशास्त्र (आ० धामन गणेश देशाई कृत मराठी ग्रंथ)
भू० उन्माद०	भूतोन्माद
भूटा०	भूटानी
भूरि० प्र०	भूरिप्रयोग
भैष०	भैषज्यरत्नावली

नौ० वि०	नौविक विधान (रूप ?)
म०, मह	महाराष्ट्र (महरठी)
म० म०	मख्ज़नुलअद्वियह (हकीम मीरमुहम्मद हुसेन विरचित)
म० अफ़०	मख्ज़नुल अफ्सीर
म० अ० डॉ०	मख्ज़नुलअद्वियह डाक्टरी
म० खं०	मध्य खण्ड
म० ज०	मख्ज़नुल जवाहर या तिब्बी व डाक्टरी लुगात
मद्र०	मद्रास
मद्र० निघ०	मद्रास पाक निघण्टु
मधु०	मधुमती टीका
मधुमे० (म० मे०)	मधुमेह
मनी०	मनीपूर
म० प्र०	मध्यप्रदेश
म० मु०	मख्ज़नुल मुफ़्रदात
मयू०	मयूर
मरा०	मराठी
मल०	मलयाली
मला०	मलायीक
मह०	मरहठी
महा० बा०	महाबालेश्वर
मसू०	मसूरिका
मा०	माया
मा० अफ़०	मायदनुल अक्सीर
मा० नि०	माधव निदान
माला	मालाबार
मि०	मिश्रीभाषा
मि० ख०	मिफ्ताहुल, ख़ज़ाइन दर बयान अक्सीर व रसायन (हकीम करीमबख्श कृत)
मिश्र०	मिश्रकाध्याय
मुग०	मुंगली
मुं०	मुरं
मु० आ०	मुहीत आज़म
मु० रा०	मुखराग
मुङ्गे०	मुङ्गेर
मुफ़० नि०	मुफ़रिद दर आलम निव
मुफ़० मा०	मुफ़र्दात् मासीन
मुफ़० सिक०	मुफ़र्दात् सिकन्दरी
मुनाफ़ा० क०	मुनाफ़ा कबीर
मुन्त० अ०	मुन्तखबुल अद्वियह
मुन्त० लो०	मुन्तखबुल लोगात
मू० कृ०	मूत्रकृच्छ्र
मू० घा०	मूत्राघात
मू० र०	मूत्ररक्त
मे०	मेथी
मे० मे०	मेटीरिया मेडिका (डॉ० मोहीन शरीफ़ कृत)
मेदि०	मेदिनी
मेमो०	मेमोरैण्डम ऑन इक... माइसेज़ एण्ड अदर पर्टीक्युलर्स आफ इण्डियन एकोनामिक्स
मेया०	मेयाड़
यम०	यमनी (यू०)
यु०, यू०	यूनानी
योग० र०, यो०	योग रत्नाकर (रस) रत्ना
यो० चि०	योग चिन्तामणि
यो० तरं०	योगतरंगिणी
यो० (शि) व्या० यो०	योगि व्यापद

र०	रक्तिका
रक्ताति०	रक्तातिसार
रसा०	रसायनी
र० पि०	रक्तपित्त
र० म०, रस० मं०	रसमञ्जरी
र० मा०	रसमाला
र० मा० स० (संग्रह)	रसमाला संग्रह
र० रसा० शा०	रसायनशास्त्र (Chemistry)
रस० कौ०	रसकौमुदी
रस० प्र०	रसप्रदीप
रस० रत्ना०	रसरत्नाकर
रस० र० स०	रसरत्न समुच्चय
रसें० चिन्ता	रसेन्द्र चिन्तामणि
रसायना०	रसायनाधिकार
र० सा० सं०	रसेन्द्रसार संग्रह
रसें० चि०, रसेन्द्र चि०	रसेन्द्रचिन्तामणि
रा०	राधी
राज०	राजवल्लभ
राजपु०	राजपुताना
राज० य०	राजयक्ष्मा
रा० तर०	राजतरङ्गिणी
रा० नि०	राज निघण्टु
रिचार्ड०	रिचार्डसन्स फारसी अरबी अंग्रेजी कोष
रिसा० र० इ०	रिसाला रफीकुल इतिब्बा
रिसा० हि	रिसाला हिकमत
रुमू० इ०	रुमूजुल इतिब्बा
रू०	रूमी
रूसी	रूसी
रो०	रोग
लिएट	लिएटलेज (डा० एफ़) 'मेडिसिनल किङ्डम'
लु कि	लुगात किशोरी (फारसी कोष)
लु० म०	लुगातुल मखुजियात
लु० क०	लुगाते कबीर
लै०, लैटि०	लेटिन (Latin)
लेख०	लेखक
लेप०	लेपक
व०	वर्ग
वटा० व०	वटादि वर्ग
वम०	वम्बई
वर्ना०	वर्नाक्युलर
व० वि०	वनस्पति विज्ञान (Botany)
वा०	वाग्भट्ट
वाजी० क०	वाजीकरण
वा० ज्व०	वात ज्वर
वा० पि० ज्व०	वात पित्त ज्वर
वा० र० (रक्त)	वातरक्त
वा० व्या०	वात व्याधि
वि० वि०	विकृति विज्ञान व्याधि मूल विज्ञान
वि० विमा०	विमान स्थान
वि०, विश्व०	विश्व प्रकाश कोष
विज० र०, विर०	विजय रक्षित (व्याख्या मधुकोष)
वि० ज्वर	विषमज्वर
विद्ग्धाजी०	विदग्धाजीर्ण
विद्र०	विद्रधि
विल०	विलस्पियक
विल डा	विलियम डाइमॉक (डीमक)
विष तं	विष तन्त्र
विज्ञा० प्र	विज्ञान प्रवेशिका
विसू०	विसूचिका
वृ० चि०	वृद्धि चिकित्सा
वृ० र०, रा० सुं०	वृहद् रसराज सुन्दर

वृह० सु०	वृहत्सुश्रुतम्
वृ रस सुं	वृहत् रसराज सुन्दर
वृ० नि० र०	वृहन्निघण्टु रत्नाकर '७-८ भाग'
वै० चन्द्रिका	वैद्यक चन्द्रिका
वै० जी०	वैद्य जीवन
वै० निघ०	वैद्यक निघण्टु
वै० श०	वैद्यक शब्द सिन्धु
वै० स०	वैद्यक संग्रह
व्यव० आ०	व्यवहार आयुर्वेद
वै० वि०	वैद्यविनोद
व्य०	अव्यय
व्याक०	व्याकरण
व्र [ण] शो०	व्रण शोथन
श०	शराव
[illegible]० श०	अर्धशराव
श० च०	शब्द चन्द्रिका
श० चि०	शब्द चिन्तामणि
शब्द कल्प०	शब्द कल्पद्रुम
श० मा०	शब्दमाला
श० र०	शब्द रत्नावली
श० शा०	शल्य शास्त्रीय
श० अ०	शरद असबाब
श० त० वि०	शरीर तत्त्व विज्ञान
शा०	शारीर स्थान
शा० ध० (शाङ्ग०)	शार्ङ्गधर
शा० नि० भू०	शालिग्राम निघण्टु भूषण
शा० व०	शाक वर्ग
शा० प्र०	शारीर प्रश्न
शि० रो०	शिरोरोग
शिरो० वि०	शिरो विरेचनम्
शी० पि०	शीतपित्त
शू० यो०	शूकदोष
शो०	शोथ
श्ली०	श्लीपद
श्लो०	श्लोक
सत०	सतलज
स० फा० इं०	सप्लिमेण्ट टु दी फार्माकोपिया ऑफ़ इंडिया (डॉ मोहीदीन शरीफ कृत)
स० अ०	सयो मय
सं०	संस्कृत
संग्र०	संग्रह
सं० महणी	संग्रह ग्रहणी
सता	संताल
स० (सन्निपात०)	सन्निपात
सन्या० ज्व० चि०	सन्यास ज्वर चिकित्सा
सर्व० मु० रो०	सर्वगत मुखरोग
सा०	साधारण, सान्निपातिक
सा० कौ०	सार कौमुदी
सा० सु०	सार सुन्दरी
सि०	सिलोन (लंका)
सि० स्था०	सिद्धिस्थान
सिक्कि०	सिक्किम
सिव०	सिवनी
सिम०	सिमला
सिलह०	सिलहट
सि० यो०	सिद्ध योग
सिं०	सिंध
सिंगा०	सिंगाली
सिं० भू०	सिंग भूम
सिरि०	सिरिया (शामी)
सु० व०	सुन्दर वन

सु०	सुश्रुत
सु० टी० उ०	सुश्रुत टीका उल्हण
सु० नि०	सुश्रुत निदान स्थान
सु० मि०	सुश्रुत मिश्रकाध्याय
सुर०	सुरयानी (सीरिया या शामी)
सू०	सूत्र स्थान
सूति०	सूतिका
सूर्य्यसि०	सूर्य्य सिद्धांत
स्त०	स्तयन
स्त्री०	स्त्री लिंग
स्था०	स्थान
स्व० भे० (स्व०)	स्वर भेद
ह०	हजारा
हजा०	हजाजी
हला०	हलायुध
हली०	हलीमक
ह० च०	हरीतकी चर्या
ह० श० र०	हमारे शरीर की रचना १, २ भाग (डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा कृत)
हा०	हारीत
हा० अ०	हारीतोत्तरे अग्नि
हारा०	हारावलि (वली)
हिमा०	हिमालय
हिं०	हिन्दी
हिं० बा०	हिन्दू बाजार
हि० श्वा०	हिक्का श्वास
हरीत० निघं०	हरीतक्यादि निघंटु
हु० का०	हुस्मियात कानून
हृ द्रो०	हृद्रोग
हे० च०	हेमचन्द्र
हेम०	हेमाद्रि तत्कृत टीका
क्षार०	क्षारपाखि
Wil	H H Wilson



Explanation of the Initials and Names Attached to the Botanical names and Synonymes.

Ach or Achar—E Acharius, author of Lichenographia universalis

Adans—M. Adanson, author of Histoire naturelle du senegal, etc

Ait or Aiton—W, author of Hortus Kewensis, &c

Balfour—Dr J H, author of the Class Book of Botany &c

Benth—M Bentham, author of Labiatorum genera et species, and Scherophularineae Indicae, &c

Berk—Berkeley, a Botanist or naturalist

Bl or Blum—C L Blume, author of Flora Javanensis, Etc.

Br or R Br—R Brown, author of many Botanical works.

Burm—N L Burmann, author of a Flora Indica

Cav.—A J Cavanilles, author of Icones et descriptiones plantarum Etc

Chois or choisy—A D Choisy, a Swiss Botanist who elaborated several of the Natural Orders for De Candolle's Prodromus

Colebr—H T Colebrooke, author of several Memoirs in the Linnean Society's Transactions Etc

Colladon—Author of Histoire des Cassiae

Corr—J Corrêa de serra, author of some botanical papers

Dalz—N A Dalzel, one of the authors of Bombay Flora.

D C—A P De Candolle, author of numerous botanical works

Dec.—De Candolle, Fil (Son of De Candolle)

Delile—A R author of Florae de Ægyptiacese Illustratis Etc

Desv—N A. Desvaux, author of some botanical papers and editor of the 'Journal de Botanique'

Don—D, author of the Prodromus Florae Nepalensis, Etc

Duch—A P Duchesne, author of Histoire Naturelle des Fraisiers, Etc

Dunal—M. F., author of Monographie de lafamille des anonacees, Etc

Endl—S Endlicher, author of genera plantarum secundum ordines naturales dispositae, Etc

Fabr—P C Fabricus, author of Enumeratio methodica Plantarum Horti Medici Helmstadiensis, &c

Falc or Falconer—Dr H., author of some botanical papers.

Forsk—P Forskaol, author of Flora Ægyptico-Arabica, Etc

Forst.—Forster, author of a Flora, Etc

Gaertn—J Gaertner, author of 'De Fructebus et Seminibus'

G Don—Editor of a new Edition of Miller's Gardener's Dictionary

Greville—Dr Greville

Gris.—G Grisley, author of Viridarium lusitanioum, Eto.

Ham —Dr. F. Hamilton (fomerly Buchanan), author of a 'journey to Mysore' and some botanical papers

Haw —A H. Haworth, author of Synopsis plantarum Succulentarum

H B. et K.—Humboldt, Bonpland and kuth, authors Nova genora et species, Eto.

Herbert—H. W Herbert, author of 'Herbert's Amarillideos' Eto.

H. et T.—Drs. J D. Hooker and T Thompson, author of a Flora Indioa, eto

Heyn or Heyne—B, Heyne, a Botanist or Naturalist.

Hook or Hooker—Dr W J Hooker, author of Botanical miscellany, and of his (Hooker's) Journal of Botany.

Jack—Dr W. author of some papers on Penang plants, Eto.

Juss—Bernard de Jussieu, author of Genera plantarum, Eto

Koen , kon or kon—J. G. Koenig, a Daish Botanist.

Kth. or kunth—A. Prussian Botanist

Labill—J J. Labillardiere, author of Icones Plantarum Syriae rariorum decades.

Lam.—J. B. Lamarok, editor of the botanical portion of Encyclopedia m thodic,

Lehm —J G C Lehman, author of Plantaco familia usperipoliarum nuoiforae, Eto.

Lesch.—Leschenault de la Tour, a Director of the botanical garden at Pondicherry

Lindl or Lindley—Dr J, author of the Vegetable Kingdom Eto

Link—H F, author of Philosophiaa botanicao navao prodromus, Eto.

Linn —Carl von Linnaeus, the founder of Botanical Science

Maton—Dr W B. Maton

Meisn. or Meissner—Leon Fred. Meissner, author of some botanical papers.

Miers—J Miers, author of a work

Miq. or Miquel—F. A W, a Botanist.

Mill —P. Millers, author of the Gardener's Dictionary.

Moon.—C mooneh, author of a few botanical works

Mull or Mull—Otto Fred Muller, author of some botanical works.

Nees—G G Nees von Esenbeck, author of several botanical works.

Oliver—G. A., author of a botanical work.

Pavon—J , author of a botanical work

Pell—Pelletier, author of some botanical papers

Pers—C. H. Persoon, author of Synopsis plantarum seu enchridium botanicum, Eto.

Planch—A. Botanist.

Pohl—J J author of 'Brazilian plants' Etc

Retz.—A J Retzius, author of Fasciculus Observationum Botanicarum Etc

Risso—A, author of Histoire naturelle des Oranger

Room or Rom et schult—J J Roemer, and J A Schultes, authors of Linnoei systema vegetabilium, Etc

Rosc or Roscoe—W Roscoe, author of Monandrian plants of the Order Scitamineae

Roth—A W author of Novae Plantarum, and several other works

Rott—Dr Rottler, an Indian Botanist

Roxb—Dr W Roxburgh, author of Flora Indica, and plants of the Coromandel Coast, Etc

Roy of Royle—Dr J F Royle, author of the Illustrations of the Botany of the Himalyan Mountains, and of a work on the fibrous plants of India

Salisb—R. A Salisbury, author of the Prodromus Londinensis, Etc

Sav or Savi—C, author several botanical work

Schott—H author of a few botanical works

Schrad.—H A Schrader, author of many botanical works

Sch or Schult—C F Schultz, author of Prodromus Florae Stadgarensis, Etc

Seb—A Seba, author of a book

Ser—N C Seringe, who has elaborated several difficult Tribes in De Candolle's Prodromus

Sm or Smith—Sir J E Smith, author of Soverl botanical works

Spr or Sprengel—K. Sprengel, author of Systema Vegetabilium, and many other botanical works

Stocks—author of some botanical Papers in Hooker's Journal of Botany

Stok—J Stokes, author of Botanical Materia medica.

Swt—R Sweet, a Botanist

Swz. or Swartz—O Swartz, author of Prodromus Descriptoonum Vegetabilium Indicae Orientalis, Etc

Thunb—C P Thunberg author of Flora Japonica and many other works

Tourn—J P Tourneforнt, author of Elements de Botanique, Etc

Vahl—M, author of Symbolae botanicae, Etc

Vent or Venta—E P Ventenat, author of Principes de Botanique, Etc.

Vill or Villars—D, author of Histoire des plantes du Dauphine, Etc

W et A—Dr R Wright and Mr G A walker Arnott, author of the Prodromus Florae Peninsulae Indiae Orientalis.

Gris.—G Grisley, author of Viridarium lusitanicum, Etc.

Ham —Dr. F Hamilton (fomerly Buchanan), author of a 'journey to Mysore' and some botanical papers

Haw —A H. Haworth, author of Synopsis plantarum Succulentarum

H B. et K.—Humboldt, Bonpland and Kuth, authors Nova genera et species, Etc

Herbert—H. W Herbert, author of 'Herbert's Amarillideae' Etc.

H. et T —Drs. J D. Hooker and T Thompson, author of a Flora Indica, etc

Heyn or Heyne—B. Heyne, a Botanist or Naturalist.

Hook. or Hooker—Dr W. J Hooker, author of Botanical miscellany, and of his (Hooker's) Journal of Botany

Jack—Dr W author of some papers on Penang plants, Etc.

Juss—Bernard de Jussieu, author of Genera plantarum, Etc.

Koen , kon. or kon—J. G. Koenig, a Dnish Botanist.

Kth. or kunth—A. Prussian Botanist.

Labill—J J. Labillardiere, author of Icones Plantarum Syriae rariorum decades.

Lam.—J. B. Lamarck, editor of the botanical portion of Encyclopedia m thodic.

Lehm.—J G C. Lehman, author of Plantace familia asperipoliarum nucifarae, Etc.

Lesch —Leschenault de la Tour, a Director of the botanical garden at Pondicherry

Lindl. or Lindley—Dr J., author of the Vegetable Kingdom Etc

Link—H F, author of Philosophiae botanicae novae prodromus, Etc

Linn —Carl von Linnaeus, the founder of Botanical Science

Maton—Dr W E Maton

Meisn. or Meissner—Leon Fred. Meissner, author of some botanical papers.

Miers—J Miers, author of a work

Miq. or Miquel—F. A W, a Botanist.

Mill —P. Millers, author of the Gardener's Dictionary.

Moen.—C moench, author of a few botanical works.

Mull or Mull—Otto Fred Muller, author of some botanical works

Nees—G G Nees von Esenbeck, author of several botanical works.

Oliver—G A., author of a botanical work.

Pavon—J., author of a botanical work

Pell—Pelletier, author of some botanical papers

Pers—C. H. Persoon, author of Synopsis plantarum seu enchridium botanicum, Etc.

Planch—A. Botanist.

Pohl—J J author of 'Brazilian plants' Etc

Retz.—A J Retzius, author of Fasciculus Observationum Botanicarum Etc

Risso—A , author of Histoire naturelle des Oranger

Roem or Rom et schult—J J Roemer, and J A Schultes, authors of Linnaei systema vegetabilium, Etc

Rosc or Roscoe—W Roscoe, author of 'Monandrian plants of the Order Scitamineae

Roth—A W author of Novae Plantarum, and several other works

Rott—Dr Rottler, an Indian Botanist

Roxb —Dr W Roxburgh, author of Flora Indica, and plants of the Coromandel Coast, Etc

Roy of Royle—Dr J F Royle, author of the Illustrations of the Botany of the Himalyan Mountains, and of a work on the fibrous plants of India

Salisb —R A, Salisbury, author of the Prodromus Londinensis, Etc.

Sav or Savi—O., author several botanical work,

Schott—H. author of a few botanical works

Schrad.—H A Schrader, author of many botanical works

Sch or Schult—C F Schultz, author of Prodromus Florae Stadgardensis, Etc

Seb —A Seba, author of a book

Ser —N C Seringe, who has elaborated several difficult Tribes in De Candolle's Prodromus

Sm or Smith—Sir J E Smith, author of Soverl botanical works

Spr or Sprengel—K Sprengel author of Systema Vegetabilium, and many other botanical works

Stocks—author of some botanical Papers in Hooker's Journal of Botany

Stok —J Stokes, author of Botanical Materia medica

Swt —R. Sweet, a Botanist

Swz. or Swartz—O Swartz, author of Prodromus Descriptionum Vegetabilium Indicae Orientalis, Etc

Thunb —C P Thunberg, author of Flora Japonica and many other works

Tourn —J P Tournefornt, author of Elements de Botanique, Etc

Vahl—M, author of Symbolae botanicae, Etc

Vent or Ventn —E P Ventonat author of Principes de Botanique, Etc

Vill or Villars—D , author of Histoire des plantes du Dauphine, Etc

W et A.—Dr R Wright and Mr G A walker Arnott, auther of the Prodromus Florae Peninsulae Indiae Orientalis

Wall.—Dr. N. Wallich, author of Plantae Asiaticae rariores, and Tentamen florae Nepalensis Illustratae.

Wedd.—Weddell, author of Histoire naturelle des quinquinas.

W. Elliot—Sir, author of Flora Andhrica.

Wight—Dr. R., author of Icones Plantarum Indiae Orientalis, Illustrations of Indian Botany, and Contributions to Indian Botany, Etc.

Willd—C. L. Wildenow, author of Species Plantarum, and several other works.

अक्षर विवरण।

स्वर

अ अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः

a a a i i u u e ai o ou an ah

اَ ع آ اِ اِي اُ او اِيے اَے اُو اَو اں اہ

व्यञ्जन

क क़ ख ख़ ग ग़ घ ङ च छ ज ज़

k q kh kh g gh gh n ch chh j z

ک ق کھ خ گ غ گھ ن چ چھ ج ح ظ ض ز ذ

झ ञ ट ठ ड ढ ड़ ण ढ़ त त थ द

jh n t th d dh rh n r t t th d

جھ ٹ ٹھ ڈ ڈھ ڑھ ڑ ت ط تھ د

ध न प फ फ़ ब भ म य र ल व श

dh n p ph f b bh m y r l v sh

دھ ن پ پھ ف ب بھ م ي ر ل و ش

ष स ह ह़ क्ष त्र ज्ञ

sh s h h ksh tr jy

ش س ہ ح

॥ धन्वन्तरये नमः ॥

आयुर्वेदीय कोष।

(अ)

अ-(A)-(उपसर्ग) जिस संस्कृत या हिन्दी शब्दके आदिमें यह अक्षर लगा होता है उसका अर्थ विपरीत अभाव या निषेध होता है, यथा-अकारण, असमर्थ, अधर्म इत्यादि। स्वरादि शब्दों के पहिले "अ" की जगह अन् लगता है और "अन्" के 'न्' में आगेका स्वर मिल जाता है, यथा-अनाधिकार, अनाचार अनन्त इत्यादि। सं०, म०, शिव, विष्णु। ए० को०। ब्रह्मा वायु, अग्नि, अल्प, अनुकम्पा सादृश्य, भेद, निषेध एक संख्या का वाचक।

अअयून, (A anyun) اعيون अ०, मेथी (Trigonella Foenum Graecum)

अअर (Aa 'ar') फा०, मुर, बोल (Myrrh)

अअस्यूतस (Aa 'alyutas')-यु०, अम्बर, मोबर (Mica)

अआकुल (A 'aakul') اعاكل अ०, जवासा, हिंगुआ (Alhagi Maurorum Dosv)

अआइवोत्ती (Aa 'daivotti')-ता०, चिकटी-हिं०। वन ओकरा-बं०। (Triumfetta Rhomboides) इं० में ये मेमो।

अआनी (Aani)-से०, ता०, मह०, कना० हाथी, हस्ति (Elephant)।

अआरगीस (Aa 'ragis')-रसौत, दारुहल्दी, चित्रा-हिं०। दारुहरिद्रा-सं०। अम्बरबारीस फा०। (Berberis Aristata)

अआस (Aa 'as') اعاس اماس اس अ०, विलायती मेंहदी। हिं०। Myrtus Communis Linn फा० इं० रस०।

अआसिल बर्री, (Aa 'asil Barri')

अअक़ब (A aqab) اعقب अ०, गोरखर (एक जंगली जानवर है जो गदहे का तरह होता है)

अअजफ़, (Aa jaf) اعجف अ०, दुबला, कृश, क्षीण। एमेशिएटेड (Emaciated) इं०।

अअजाअ, (A azaa) اعضاء अ०, (ब० व०) उज़्व (ए० व०), बदन के टुकड़े या हिस्से, अवयव, इन्द्रियाँ-हिं०। ये गाढ़ी और स्थूल वस्तुयें जो प्रथम खिल्तों (दोषों) के योग से बनती हैं। (Organs) इं०।

अअज़ाअ असलिय्यह (Aa zaa asliyyah) اعضاءاصلیہ अअज़ाअ मुफ़रिदह अ०, असली अअज़ाअ अर्थात् शुक्र द्वारा उत्पन्न अवयव, यथा अस्थि, नाड़ी रग प्रभृति।

अअजाअ आलयह, (Aa zaa alayah) اعضاءآلیہ अअज़ाअ मुरक्कबह اعضاءمرکبہ अ०, ये अवयव जो कुछ साधारण अवयवों (धातुओं) के परस्पर योग से बने हों, संयुक्त अवयव।

अअजाअ इस्तहियाइय्यह (Aazaa istahiyaiyyah) اعضاءاستحیائیہ अ० अन्दाम

निहानो, अअजाअ, तनासुल आदिरो (प्रधानतः स्त्री के) की जननेन्द्रियाँ (वाह्य) हिं० Pudendum

अअजाअ कैलूसियह (An. zan Kailusiyah) اعضاء کیلوسیہ अ० आलात कैलूसियह।

अअजाअ खादिमह् (An zan Khadimah) اعضاء خادمہ अ०, सेवा करने वाले अवयव, वे अवयव जो किसी अन्य अवयव की सेवा करें, यथा-आमाशय जो यकृत की सेवा करता है अर्थात् भोजन से शुद्ध आहार रस (कैलूस) तैयार करके यकृत की ओर भेजता है। अथवा शिरायें जो यकृत से आहार तथा प्राकृतिक शक्ति को ले जाकर अवयवों से विभाजित करती हैं।

अअजाअ खादिमहुर्रईसह (Anzan Khadimahurraisah) اعضاء خادمہ رئیسہ अ०, उत्तमाङ्गों कीसेवा करने वाले अवयव यथा-धमनी जो हृदयकी सेवा करती है, शिरायें जो यकृतकी सेविका उक्त हैं और नाड़ी जो मस्तिष्क की सेवा करती है अर्थात् उक्त अवयवों की प्रधानशक्तियोंको अन्य की ओर पहुँचाती है।

अअजाअ गिज़ा (An zan ghiza) اعضاء غذا अ०, आहा रेन्द्रियाँ, आहार सम्बन्धी अवयव अथवा आहार को ग्रहण करने वाले अवयव, यथा आमाशय,अंत्र और यकृत आदि।

अअजाअ गैर रईसह (An zan ghair raisah) اعضاء غیر رئیسہ अ०, वे अवयव जो न स्वयं किसी की सेवा करते हैं और न कोई उनकी सेवा करता है।

नोट—किसी २ हकीम का यह विचार है कि शरीरमें कुछ ऐसे अवयव भी हैं जिनमें जीवन और पोषण की स्वाभाविक शक्ति विद्यमान है तथा उत्तमाङ्गों से उनमें कोई शक्ति नहीं आती, यथा अस्थियाँ। किन्तु, स्वतन्त्र हकीमोंका यह पंथ नहीं और वास्तविक बात भी यही है। शरीर में कोई एक अवयव भी ऐसा नहीं जो अन्योन्याश्रय न हो अथवा जिनमें स्वामी सेवक भाव विद्यमान न हो।

अअजाअ तनफ्फ़ुस (An zan tanaffus) اعضاء تنفس अ०, आलात तनफ़्फ़ुस। श्वासोच्छ्वासेन्द्रियाँ हिं०। (Resopiratory organs) अअज़ाअ तनासुल (An zan tanasul) اعضاء تناسل आलात तनासुल जननेन्द्रियाँ हिं०। Reproductive organs इं०।

अअजाअ तबइय्यह् (An zan tabaiyyah) اعضاء طبعیہ अ०, प्राकृतिक शक्ति संबन्धी अवयव, यथा जननेन्द्रिय तथा आहारेन्द्रिय।

अअजाअह तर्फ़िय (An zan tarfiyah) اعضاء طرفیہ अ०, शाखावयव, वे अवयव जो शाखाओं में स्थित हैं, यथा-हस्तपाद आदि।

अअजाअ दम्विय्यह् (An zan damviyyah) اعضاء دمویہ अ०, रक्त से उत्पन्न होने वाले अवयव, रक्त जन्य अवयव, यथा-मांस वा वसा

अअजाअ नफ़ज (An zan nafz) اعضاء نفض अ०, शारीरिक मल को निकालने वाले अवयव, यथा-अंत्र, वृक्क, वस्ति, लिंग,

गर्भाशय की ग्रीवा और गुदा, प्रभृति। पचस कोटरी भागेय (Excretory organs) इं०।

अअज़ाअ बसीतह (Aazaa basitah) اعضاء بسیطہ अ०, अअज़ाअ मुफ़्रिदह्।

अअज़ाअ बौल (Aa zaa boul) اعضاء بول अ०, आलात बौल।
मूत्रेन्द्रियाँ मूत्रसंस्थान इं० Urinarysystem

अअज़ाअ मर ऊसह (Aazaa marau sih) اعضاء مرؤسہ अ०, उत्तमांगों से लाभ उठाने वाले अवयव।

अअज़ाअ मुत्शाबिहतुल अजज़ा (Aaz aa mutashabbatulajza) اعضاء متشابہ الاجزاء अ०, अअज़ाअ मुफ़रिद्।

अअज़ाअ मुरव्विय्यह (Aazaa munr iyy h) اعضاء مرویہ अ०, अअज़ाअ असिलयह।

अअज़ाअ मुफ़रिदह् (Aazaa mufridah) اعضاء مفردہ अ०, मुफ़रिद् व अअज़ाअ अअज़ाअ बसीतह, अअज़ाअ मुश्ताबिहतुल अअज़ाअ वह अवयव जो स्वयं अथवा उसका कोई भाग नाम और वास्तविकता में अभेद हो अर्थात् यदि उक्त मुफ़रिद (मौलिक धातु) का कोई भाग लेकर कहा जाय कि इसका क्या नाम और परिभाषा है तो उत्तर में यही नाम और परिभाषा बतलाई जाय जो वास्तविक अवयव के लिये कहा जाता है, उदाहरणतया-अस्थि के एक सूक्ष्म भाग कोभी अस्थि कहेंगे एवं माँस के सूक्ष्म भाग को मांस मुफ़रिद् अअज़ाअ (मौलिक धातुओं) की संख्या १० है, यथा- अस्थि, उपास्थि या कुर्री (Cartilledge), धाड़ी मांस पेशी, धमनी, शिरा, वसा (झिल्ली), संधि बं धन (वधनी, स्नायु रज्जु) और कण्डरा। वीर्यसे उत्पन्न होते हैं इसलिये इनको अ ज़ाअ मुन्विय्यह् (शुक्रावयव) कहते हैं इनमें से चार्थी धातु लह्म (मास, गोश्त) शह्म (वसा) तथा समीन (मोटापा स्थूल) की गणनाभी इसीमें होती है। ये तीनों शोणि से बनते हैं। रोम तथा नख की गणना व शारीरिक मलों में होती है। किन्तु किसी इनकी गणना भी अअज़ाअ मुफ़्रिदह में कि है। टिप्पणी-अअज़ाअ मुफ़्रिदह की एक को अरबी में नस्ज (ए० व०) और नसा (ए० व०) तथा आयुर्वेद में तन्तु अंगरेज़ी में टिश्यु (Tissue) कहते प्रत्येक भाँति के तन्तु विशेष प्रकार के (कोषों, घटकों कोसों) के परस्पर मि द्वारा बनते हैं। अस्थ, कास्थि, मां रग तथा नाड़ियों की रचना मुख्य भाँति के सेलों के पारस्परिक मिलाप होती है। इसका विस्तृत वर्णन तन्तु शा (histology) में होगा।

अअज़ाअ मुरक्कबह (Aazaa mura bah) اعضاء مرکبہ अ०, अअज़ाअ 'आ यह, मुरक्कब अअज़ाअ। संयुक्ताव वे अवयव जो अन्य मुफ़रिद् (मौ तन्तु धातु) के पारस्परिक मेल से ब हैं। उदाहरणतः-हस्त अस्थियों, रगों नाड़ि और मांस पेशियों तथा त्वचा के मिलाप से बनता है। इस भाँति के अवयव का यदि भाग लिया जाय तो वह अपनी परिभाषा नाम में सम्पूर्ण से भिन्न होगा, यथा-हाथ अस्थि अथवा मांस हस्त नहीं कहलायेगा

अअ़ज़ाअ मुहिम्मह, (Aa zāa muhim mah مهمه اعضاء) अ०, अअ़ज़ाअ शरीफह्।

अअ़ज़ाअ रईसह, (Aa zaa raisah) अ०, اعضاء رئيسه उत्तमाङ्ग० एक्स्ट्रा Extra इं० । जीवनाधार भूत अवयव अर्थात् वे अवयव जिनपर जीवन अवलम्बित हो। ये चार हैं, यथा (१) हृदय, मस्तिष्क, (३) यकृत और (४) मुष्क (पुरुषाण्ड), शिश्न और गर्भाशय। इनमें से प्रथम तीन मनुष्य जीवन के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं, क्योंकि ये क्रमशः प्राणशक्ति (कुव्वते हयात, कुव्वते हैवानी), चेतना शक्ति (कुव्वते नफ़्सानी) और प्राकृतिक शक्ति (कुव्वते तबई) अर्थात् शारीरिक पोषणशक्ति अवयवों को प्रदान करते हैं। इनमें अन्तिम के जननेन्द्रिय सम्बन्धी अवयव स्वजाति रक्षा के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं।

अअ़ज़ाअ शरीफह (Aazaa Sharifah) اعضاء شريفه अ०, शरीफ़ अअ़ज़ाअ, अअ़ज़ाअ मुहिम्मह्, अहम अअ़ज़ाअ। वे अवयव जो अपने कार्य की महत्ता के अनुसार उत्तमाङ्गों के समीप्य कक्षा का अधिकार रखते हैं। इनकी गणना उनके (उत्तमाङ्गों) के पीछे होती है, यथा—फुफ्फुस, आमाशय और आंत्र इत्यादि।

अअ़ज़ाअ सद्रिय्यह ज़ाहिरह ظاهره صدريه اعضاء अ०, वक्षोपर्यङ्ग हिं०। वक्ष के ऊपर के अवयव, यथा-वक्षीय मांसपेशियाँ और स्तन प्रभृति।

अअ़ज़ाअ सद्रिय्यह बातिनह (Aazaa Sadriyyah Batinah) اعضاء صدريه باطنه अ०, वक्षान्तरस्थ अवयव, वक्ष से भीतर के अवयव, यथा—हृदय और फुफ्फुस आदि। थारैसिक विसरी (Thoracic viscera) इं०।

अअ़ज़ाअ सौत (Aazaa sout) اعضاء صوت अ०, आवाज़ के अअ़ज़ाअ 'शब्देन्द्रियाँ', शब्दोत्पादक यंत्र, यथा—स्वरयंत्र टेंटुवा (ग्रासपथ) और फुफ्फुस इत्यादि। आर्गन्ज़ आफ़ वाइस [Organs of Voice] इं०।

अअ़ज़ाअ हज़्म (Aazaa Hazm) اعضاء هضم अ०, पाचक यन्त्र, पाकावयव, यथा-आमाशय, यकृत, मासारीका इत्यादि। डायजेस्टिव आर्गन्ज़ [Digestive organs] इं०।

अअ़ज़ाअ हर्कत (Aazaa harkat) حركت اعضاء अ०, 'आलात हरकत'।

अअ़ज़ाअ हिस्स (Aazaa Hiss) حس اعضاء अ०, 'आलात हिस्स'

अअ़ज़ाअ हैवानिय्यह (Aazaa Haivanniyyah) اعضاء حيوانيه अ०, जीवन शक्ति सम्बंधी अवयव, प्राण शक्ति से सम्बन्ध रखने वाले अवयव, यथा-हृदय वा धमनी प्रभृति।

अअ़नब (Aanab) اعنب अ०, जिसकी नासिका बड़ी और लम्बी हो।

अअ़नश (Aanash) اعنش अ०, छींगा, छांगुर, छः अंगुलियों वाला।

अअ़नाक़ (Aanaq) اعناق अ०, (ब० व०), उ (अ०) नक़ (ए० व०), ग्रीवा, गर्दन हिं०। सर्विक्स Cervix, नेक्स Necks इं०।

अअ़फ़ज (Aafaj) افج अ०, तोंदीला, मेदयुक्त मेदस्वी, स्थूल, वह व्यक्ति जिसकी तोंद निकली हो।

अअ़फ़र (Aafar) اعفر अ०, सफ़ेद खाकी, मैला, धुमैला।

अअफ़ाज (Aafaj) امعاج अ०, आन्त्र-हिं० । Intestines, Entrails

अअमश (aamash) امعش अ०, जिसके नेत्र जल से स्राव होता हो ।

अअमा (Aama) اعمى अ०, नाबीना, कोर-फ़ा० । अंध, अंधा, नेत्रहीन हिं० । Blind । अअमाअ (ब० व०) और अमा (स्त्री० लिं०) है ।

अअमाले यिदयह् (Aamale-bilyad) اعمال بالید अ०, हस्तक्रिया, 'शस्त्र' हिं० । दस्तकार-फ़ा० । (Operation)-अं० । छेदन विधा व्यपच्छेद शास्त्र । साहब कामिलके वचनानुसार इसके तीन भेद हैं, (१) रग, (२) मांस की काट छांट, जैसे रक्तमोक्षण, नश्तर देना, पृथक् करना (काटना छाँटना), दागना और टाँके लगाना इत्यादि और (३) अस्थि को यथा स्थान बिठाना, टूटी अस्थि को जोड़ना, और स्थानच्युत अस्थि की संधि को बिठाना इत्यादि ।

अअमिदतुल मिन्खरीन (Aamidatul minkharin) اعمدة المنخرين अ०, 'नासामध्य परदा' दोनों नथुनों के मध्य का परदा-हिं० । (Nasal Septum)-इं० ।

अअयाअ (Aayaa) اعياء अ०, (१) थकना, थकावट (२) हाथ पैर टूटना, शरीर का थक जाना ।

अअयून (Aayun) اعيون अ०, मतरिस चक्षु, वह मनुष्य, जिसके नेत्रकी पुतलियाँ फैल गई हों ।

अअरज (Aaraj) اعرج अ०, 'लगड़ा', लूला,-हिं० । (Lame)-इं० ।

अअराज (Aaraz) اعراض अ०, (ब०व०), अर्ज़ (ए० व०), रोग के लक्षण । (Symptoms) इं० ।

अअराजे नफ़सानिय्यह् (Aaraze nafsaniyyah) اعراض نفسانيه अ० इन्फ़िआलाते नफ़सानिय्यह् । 'अन्तः क्षोभ' मनोविकार, आत्मा में होने वाली दशायें हिं० । ये छः हैं, यथा (१) शोक (२) क्रोध, (३) भय, (४) आनन्द, (५) लज्जा और (६) चिन्ता ।

अअशा (Aasha) اعشى अ०, शबकोर फा० । 'नक्तांध' वह मनुष्य जिसको रतौंधी का रोग हो । (Nyctalopa) इं० ।

अअसाब—(Aasab) اعصاب अ०, (ब० व०), असब (ए० व०) नाड़ियाँ, वात या बोधतन्तुयें (देखो-नाड़ी)-हिं० । (Nerves)

अअसाब उज्जिय्यह् (Aasab-aujaiyyah) اعصاب عجزيه अ०, 'त्रकि नाड़ी, अअसाब अुजीया । त्रिकंच (त्रिक) नाड़ी" । ये वात तन्तु सुषुम्नाकाण्ड से निकल कर त्रिकास्थि से बाहर आते हैं । ये संख्या में ५ जोड़े होते हैं इनकी शाखायें उरु, टांग, या पांव के मांस पे शियों तथा त्वचा में चेष्टा व संज्ञा बहाती हैं (Sacral Nerves)

अअसाब उनुक़िय्यह् (Aasaba aunuqyyah) اعصاب عنقيه अ०, अअसाबे गर्दन: फा० । ग्रीव नाड़ियाँ-हिं० । (Cervical nerves)

अअसाबे क़तनिय्यह् (Aasabe-qatniyyah) اعصاب قطنيه अ०, अअसाबे कमर-फ़ा० । कटि नाड़ियाँ हिं० । (Lumbar nerves)

अअसाबे जहरिय्यह् (Aasabe-Zahriyyah) اعصاب ظہریہ अ०, अअसाबे पुश्त-फ़ा० पृष्ट नाड़ियाँ-हिं० । [Dorsal nerves]

अअसाबे दिमागिय्यह् (Aasabe-dimaghiyyah) اعصاب دماغیہ अ०, मास्तिष्क नाड़ियाँ-हिं० । [Cranial nerves]

अअसाबे नुखाइयह् (Aasabe nukhaiyah) اعصاب نخاعیہ अ०, सौषुम्न नाड़ियाँ-हिं० । (Spinal nerves)

अअसाबे मुरक्कबह् (Aasabe murakkabah) اعصاب مرکبہ अ०, मिश्र नाड़ियाँ-हिं० । मिक्स्ड नर्व्ज़ (mixed nerves)-इं० ।

अअसाबे शिर्किय्यह् (Aasabe shirkiyyah) اعصاب شرکیہ अ०, अअसाबे शिर्की, अअसाबे हमदर्दी । पिंगल नाड़ियाँ हिं० । Sympatheticnerves-इं० ।

अअसाबे हर्कत (Aasabe harkat) اعصاب حرکت अ०, हर्कती-अअसाब । चालक नाड़ियाँ, चेष्टावहा नाड़ियाँ, गतिसम्बन्धी नाड़ियाँ-हिं० । (Motor nerves)

अअसाबे हास्सह् (Aasabe-hassah) اعصاب حاسہ अ०, विशेष चेतना सम्बन्धी नाड़ियाँ-हिं० । Special senses nerves

अअसाबे हिस्स (Aasabe hiss) اعصاب حس अ०, हिस्स के पुट्ठे उ० । संवेदनिक नाड़ियाँ, चेतना सम्बन्धी नाड़ियाँ-बोध क श्या ज्ञान तन्तु हिं० । Sensory nerves इं०

अइग्रिमोईन (Aigrimoine)-फ्रां०, ग़ाफ़ि़स-यूपागीस-यू० । Agrimonia Eupatorium, Linn-ले० । फॉ० इं० १ भा० ।

अइता (Aita)-गों०, मरोड़फली-हिं० । Helicteres isora, Linn -ले० ।

अइदा (Aida)-अ०, हीराबोली-हिं० । दम्मुल अख्वैन-अ०, हिं०, बाज़ा० । Dracaena cinnabari, Balff ले० । फॉ० इं० ३ भा० ।

अइँधा (Aindha)-उ० प० सू० । इक्यू़ चल्ला । अजहार मासा० । Lagerstroemia Flos-reginæ, Roxb-ले० ।

अइन (Ain)-मह०
अइनी (Aini) कना०
} आसनवृक्ष, साज, सद्री-हिं० । पियासाल-ब० । Terminalia Tomentosa ले० । इं० मे० मे० । मेमो० ।

अइर (Air)-हिं०, फरीदबूटी । Iarsetia Aegyptica ले० ।

अइरन (Airan)-बम्ब अरनी, उरनि, पिरुम हिं० । Clerodendron Phlomoidesले० इं० मे० मे० ।

अइरन मूल (Airanmul) बम्ब०, 'अरनी' अग्निमन्थ । Premna Integrifolia ले० । इं० मे० मे० ।

अइरसा (Airasa) अ०, पुष्करमूल, पद्मपुष्कर सं० । ईरसा (Irasa)-हिं० । Iris Florentina ले० । Orris root इं० ।

अईल (Ail) अव० हिं०, 'सातला' । सीकी (के) काई-पु० । कोचे-पं० । Acacia Concinna, D. C. ले० । इं० मे० प्लां०, फा० इं० १ भा० ।

अउजा (Anja) मरा०, 'शरीफा, सीताफल, आत-हिं० । Custard apple (Anona squamosa)

अउनी (Aunee)-फां०, रासन, जञ्जबील शामी Inula Helenium, Linn । फा० इं० २ भा० ।

अउसरक (Ansarak)-पं० छड़ीला-हिं० । See-Chharila

अऊ (Au) मरा०, 'अण्डा' (Ovum) । 'गर्भ' (Embroyo)

अ ऊ (Au) / ऊ (U) — मरा०, (ए० व०) 'कन्द'-हिं० । Bulb or Tuber । स० फा० इं० ।

अऊमियाश्चा(Aumiya n) मरा०, (ब० व०) ऊमियाश्चा (Umiya n) कन्द हिं० । Bulbs, Tubers इं० । स० फा० इं० ।

अऋतुमती (Aritumati) सं० स्त्री० अप्रार्तवमती, रजःलोपा, अनार्तवमती (Unmenstruating woman) ।

अएगरवल्ली (Aegar va'lli) ता०, 'धारक रेला-हिं० । Momordica Dioica, Roxb से० । इं० मे० मे० ।

अएदकुल रीतिचेट्टु (Aedakul Riti Chettu) ते०, 'छतिम', सतपर्ण, छतिवन,-हिं० Alstonia Scholaris से० । इं० मे० मे० ।

अएडु (Aedu)-ता०, कना०, मेंढ़, भेड़-हिं० । Sheep । इं० मे० मे० ।

अएण्डु (Aendu)-ता०, 'चकवड़', पमाड़-हिं० (Cassia Tora) इं० मे० मे० ।

अएरिलम्पाल (Aerilampal)-मला०, सप्तपर्णी, 'छतिम' Alstonia Scholaris से० इं० मे० मे० ।

अएलि लप्पालई (Aeli lappalai) ता० सप्तपर्ण, 'छतिम' (alstonia Scholaris) इं० मे० मे० ।

अंश (Ansha) सं० पु०, अंस, स्कन्ध, भुजशिर (Shoulder) भाग, बाँट, प्रथक, वृत्त की परिधि का ३६० वाँ भाग, विभाग, दर्जा, अंश । डिग्री (degree)-इं० । इसका संकेत चिह्न इसप्रकार (०) है ।

अंशकूट (Ansh kut) सं० पु०, अंसकूट, स्कन्धफलक । (Acromion process) । वा० शा० ४ भा० ।

अंशमर्म्म (Ansh marmma)-सं०, स्त्री० स्कन्ध सन्धिस्थ मर्म्म, स्कंध मरम । सु० शा० ६ अ० ।

अंशल (Anshalah)-सं० त्रि०, मांसल, स्थूल । कॉर्पुलेण्ट (Corpulent) इं० ।-

अंशवान् (Ansh van) सं० पु०, सोमलता । The moonplant or Acid Sarcostema (S Viminalis) । देखो,'सोम'। सु० चि० २६ अ० ।

अंशांश (Anshansh)-हिं० पु०, भाग का भाग ।

अंशी (Anshi)-हिं० पु०, भागी, बांटने वाला

अंशु (Anshu) सं० पु०, तृष्णा, सूर्य्य किरण-रश्मि, तेज । मे० शत्रिक ।

अंशुक (Anshuk)-हिं० पु० रेशमीवस्त्र, एरिसमुदाय ।

अअसाये जह्रिय्यह (Aasabe-Zahriy yah) اعصاب ظہریہ अ०, अअसाये पुश्त-फ़ा० पृष्ठ नाड़ियाँ-हिं० । [Dorsal nerves]

अअसाये दिमाग़िय्यह (Aasabe-dima ghiyyah) اعصاب دماغیہ अ०, मास्तिष्क नाड़ियाँ-हिं० । [Cranial nerves]

अअसाये नुख़ाइयह (Aasabe nukhaa-iyah) اعصاب نخاعیہ अ०, सौषुम्न नाड़ियाँ-हिं० । (Spinal nerves)

अअसाये मुरक्कबह (Aasabe murakka bah) اعصاب مرکبہ अ०, मिश्र नाड़ियाँ-हिं० । मिक्स्ड नर्वज़ (mixed nerves)-इं० ।

अअसाये शिर्किय्यह (Aasabe shirkiy yah) اعصاب شرکیہ अ०, अअसाये शिर्की, अअसाये हमदर्दी । पिंगल नाड़ियाँ हिं० । Sympatheticnerves-इं० ।

अअसाये हर्कत (Aasabe harkat) اعصاب حرکت अ०, हर्कती-अअसाब । चालक नाड़ियाँ, चेष्टावहा नाड़ियाँ, गतिसम्बन्धी नाड़ियाँ-हिं० । (Motor nerves)

अअसाये हास्सह (Aasabe-hassah) اعصاب حاسہ अ०, विशेष चेतना सम्बन्धी नाड़ियाँ-हिं० । Special senses nerves

अअसाये हिस्स (Aasabe hiss) اعصاب حس अ०, हिस्स के पुट्ठे उ० । सांवेदनिक नाड़ियाँ, चेतना सम्बन्धी नाड़ियाँ-बोध अथवा ज्ञान तन्तु हिं० । Sensory nerves इं०

अइग्रिमोईन (Aigrimoine)-फ्रां०, ग़ाफ़ित-फ़ा०, ग़ाफ़त-अ० । Agrimonia Eupatorium, Linn-ले० । फॉ० इं० १ भा० ।

अइटा (Aita)-गों०, मरोड़फली-हिं० । Holarrhena... Helicteres isora, Linn -ले० ।

अइदा (Aida)-अ०, हीराबोली-हिं० । दम्मुल अख़्वैन-अ०, हिं०, बाज़ा० । Dracaena cinnabari, Balf ले० । फॉ० इं० ३ भा० ।

अइँधा (Aindha)-उ० प० सू० । हरपू चवला । अजहार भास० । Lagerstroemia Flos-reginæ, Roxb-ले० ।

अइन (Ain)-मह०
अइनी (Aini) कना०
} आसनवृक्ष, साज, सदूरी-हिं० । पियासाल-ब० । Terminalia Tomentosa ले० । इं० मे० मे० । मेमो० ।

अइर (Air) हिं०, फरीदबूटी । Iarsetia Aegyptica ले० ।

अइरन (Airan)-बम्ब० अरनी, उरिन, पिरम हिं० । Clerodendron Phlomoides ले० इं० मे० मे० ।

अइरन मूल (Airanmul) बम्ब०, 'अरणी' भ्रातिमन्थ । Premna Integrifolia ले० । इं० मे० मे० ।

अइरसा (Airasa) अ०, पुष्करमूल, पद्मपुष्कर सं० । ईरसा (Irasa)-हिं० । Iris Florentina ले० । Orris root इं० ।

अईल (Ail) बम्ब०, हिं०, 'सातला' । सीकी (के) काई-म० । कोची-बं० । Acacia Concinna, D. C. ले० । इं० मे० प्लां०, फा० इं० १ भा० ।

अउजा (Au,a) बर०, 'शरीफा , सीताफल , आत-हिं० । Custard apple (Anona s uamosa)

अउनी (Aunee) फ़ा०, रासन, जञ्जबील शामी Inula Helenium, Linn । फा० ई० २ भा० ।

अउसरक (Ansarak)-पं० छड़ीला-हिं० । See-Chharila

अऊ (Au)-पल्ल०, 'अण्डा' (Ovum) । 'गर्भ' (Embroyo)

अ ऊ (Au) }
ऊ (U) } बर०, (प० ब०) 'कन्द'-हिं० । Bu'b or Tuber । स० फा० ई० ।

अऊमियाओ (Aumiya n) बर०, (ब० ब०) ऊमियाओ (Umiya n) कन्द हिं० । Bulbs, Tubers ई० । स० फा० ई० ।

अऋतुमती (Aritumati) सं० स्त्री० अप्रार्तवमती, रजोलोपा, अनार्तवमती (Unmenstruating woman) ।

अएगरवल्ली (Aegar va'li) ता०, 'धारक रेला-हिं० । Momrdico Dioica, Roxb से० । ई० मे० मे० ।

अएडकुल रीतिचेट्टु (Aedakul Riti Chettu) ते०, 'छातिम', सप्तपर्णी, छतिवन,-हिं० Alstonia Scholaris से० । ई० मे० मे० ।

अएडु (Aedu)-ता०, मनाo, मेंढ़, मेष-हिं० । Sheep । ई० मे० मे० ।

अएण्डु (Aendu)-ता०, 'अण्डु', पमाड़-हिं० (Cassia Tora) ई० मे० मे० ।

अएरिलम्पाल (Aerilampal)-मल०, सप्तपर्णी, 'छातिम' Alstonia Scholaris से० ई० मे० मे० ।

अएलि लप्पालई (Aeli lappalai) ता० सप्तपर्ण, 'छातिम' (alstonia Scho'aris) ई० मे० मे० ।

अंश-(Ansha) सं० पु०, अंस, स्कन्ध, मुअशिर (Shoulder) भाग, बाँट, प्रथक, दिन, भू परिधि का ३६० वाँ भाग, विभाग, दर्जा, अंश । डिग्री (degree)-ई० । इसका संकेत चिह्न इसप्रकार (०) है ।

अंशकूट (Ansh kut)-सं० पु०, अंसकूट, स्कन्धफलक । (Acromion process) । वा० शा० ४ अ० ।

अंशमर्म्म (Ansh marmma)-सं०, क्ली० स्कन्ध सन्धिस्थ मर्म्म, स्कंध मरम । सु० शा० ६ अ० ।

अंशल (Anshalah)-सं० त्रि०, मांसल, स्थूल । कॉर्पुलेण्ट (Corpulent) ई० ।

अंशवान् (Ansh van) सं० पु०, सोमलता । The moonplant or Acid Sarcostema (S Viminalis) । देखो,'सोम' । सु० चि० २६ अ० ।

अंशांश (Anshansh)-हिं० पु०, भाग का भाग ।

अंशी (Anshi)-हिं० पु०, भागी, बांटने वाला

अंशु (Anshu) सं० पु०, सुम्मा, सूर्य्य किरण-रश्मि तेज । मे० शद्विक ।

अंशुक (Anshuk)-हिं० पु० रेशमीवस्त्र, एविमसुदाय ।

अंशुकम् (Anshukam) सं० क्ली०, तेजपात-तज-हिं० । दालचीनी म० । Cinnamomum Tamala (The leaf of Laurus Cassia ले० । गुणधर्म-लघु, मधुर, पिच्छिल, किंचित् तीक्ष्ण, उष्ण तथा कफ वात, अर्श, हृल्लास, अरुचि और पीनस को नष्ट करता है । भा० पू० १ भा० । विषघ्न, वस्तिशूलघ्न तथा मुख और मस्तक का शोधन करने वाला है । रा० नि० व० ६ । सूक्ष्मवल्क । मे० कत्रिक ।

अंशुकायः (Anshu kayah) सं० पु०, प्रवाल आदि । (Coral (Corallium Rubrum) ।

अंशुजाल (Anshujal)-हिं० पु०, रश्मि समुदाय ।

अंशुधर (anshudhar) हिं०, पु०, सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा, दीपक, देवता, ब्रह्मा प्रजापति ।

अंशुपर्णिका (anshuparnika) / अंशुपर्णी (anshu parni) } सं० स्त्री० शालपर्णी । gangeticum ले० श० र० । देखो अंशुमती ।

अंशुमती (anshumati)-सं० स्त्री०, शालपर्णी सरिवन हिं० ।(Hedysarum gangeticum शालपर्णि, दालानी-बं० । सालवण, भूरीवण म० । सप्पाकुपोन, उलुसापनि-ते० । गुणधर्म वातघ्नी, ग्राहिणी और कफ पित्तघ्नी । च० द० गुरु, रस में तिक्त वातघ्न तथा विषमज्वर, प्रमेह, अर्श, शोफ (सूजन) और सन्तापहर । र० नि० व० ४ । गुरु तथा वमन, ज्वर, श्वास और अतिसार नाशक एवं शोष और वात पित्त तथा कफ प्रभृति दोष त्रय को हरण करने वाली तथा रसायन है । मद० व० ११ भावमिश्र ने इसे धातुवर्द्धक लिखा है । भा० पू० गु० व० । "मेचकं चांशुमत्या"। त्रि० क० क० वल्ली । देखो, तेजपात ।

अंशुमतीफला (anshu mati phala)-सं० स्त्री० कदली वृक्ष, केला हिं० । Musa Sapientum । भा० पू० १ भ० फ० व० ।

अंशुमत्फला (anshumatphala)-सं० स्त्री०, कदलीवृक्ष, केला । Musa Sapientum । रा० नि० व० ११ ।

अंशुमान् (anshu man) सं० पु०, सूर्य्य चन्द्रमा । सोमवत गुण के कारण 'सोमलता' (The moonplant) विशेष को कहते हैं । देखो-सोम । और एक राजा का नाम है ।

अंशुमाली (Anshumali)-हिं० पु०, सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, दीपक ।

अंशूदकम् (Anshudakam)-सं० क्ली०, हंसोदक, जिस जलाशय के ऊपर सम्पूर्ण दिवस सूर्य की किरणें तथा रात्रि में चन्द्रमा की किरणें पड़ती हों उस जलाशय के जल को अंशूदक अथवा "हंसोदक" कहते हैं । उक्त जल एवं नादेय जल शरदऋतुमें विशेष रूपसे हित कारी होते हैं । अंशूदक जल स्निग्ध, त्रिदोष नाशक अभिष्यन्दी नहीं निर्दोष अन्तरिक्ष जल के सदृश, बलकारक रसायन रूप मेधा को हित कारी, शीतल, हलका और अमृतके सदृश है । सु० सू० ४५ अ० वारि० व० । भा० पू० १ भ० । मद ८ द० । कृमनाशक, दित्त, गर्भी, दाह,

अंहस (anhas) सं०, पु०, पाप, स्वधर्मत्याग, अपराध, पातक । Sin, fault, crime ।

अंह्रिः (anhrih)-सं० पु०, पाद, वृक्षमूल, जड़ । (Root) अम० ।

अंह्रिपः (anhripah) सं० पु०, वृक्ष, पेड़ (Tree) । हला० ।

अंह्रि स्कंधः (anhri skandhah)-सं० पु०, गुल्फ, घट्टा । (Malleolus) पायेर गुल्फे, गुड़गुड़ो-बं० । है० च० ।

अकअक (aaqraq) عقعق अ०, महूका पक्षी, एक प्रसिद्ध पक्षी है । मसकह, काजखाह-फा०

अकचः (akachah) सं० त्रि०, केश शून्य, बाल रहित-हि० । बालुड़ (Bald) ई० । आर माथा नेड़ा-बं० ।

अकज (akaj) क़मरूर और बकौल अकरुत का नाम ।

अकटा (akata)-हिं०, पु०, कङ्कर । मेवल (Gravel) ई० ।

अकतना अकतनस (aqtana aqtanas)

अकतना अफलस (aqtana aflas) यु०, 'क़मरूर' वृक्ष ।

अकतनार अनीकी (aqtanar aniqi)

अकतना लूकी (aqtana luqi यु०, शुकाई । Shukai)

(२) धाराधर्द (Volutorella Liva rieata, Benth) ।

अकत्माश [aqatmas] اقتماش अ०, शराब या अंगूर का पानी ।

अकतमारून [aqat marun] यु०, सूरिंजान Hermodac tylus [Hermodáctyt]

अकताकूनी [aqatakuni] यु०, 'धाराधर्द' (Volutorella L varieata Benth)

अकती (aqati)-यु०, सुमात कबीर ।

अकतीसुस (aqatisus) यु०, 'जंगली मूली' (The wild Radish)

अक्त (akta)-सं०, मालिश ।

अकत्ती (akatti) ता०, मल०, अगस्त्य, 'अगस्तिया' हि० agati Grandiflora । ई० मे० मे०

अकतुल मलिक (aqatul malik) यस्त०, इक्लीलुल मलिक अ० । नख, 'नाखूना' हि० । Trigonella Uncata, Boiss Conmar inum

अकदह (aaqidah) मिश्र, दारिहलदी लकड़ी दारुहल्दी, हि० Berberis asiatica D O wood

अकदूनिया (aqadunlya) यु०, औषधी अफसन्तीन, किरमाला, अफ़सन्तीनुल बहर, दर मनह Wormseed

अकन (akan) اكن हिं०, आक, मदार, अकौंव, Calotropis Gigantea Procera R Br स० फॉ० इ० ।

अकन (aqan)-अ०, गंदह, बगल-फा० । कक्षागन्धि, कक्षदुर्गन्धि, हिं० । यह व्याधि जिसके कक्ष से दुर्गन्ध आती हो ।

अकनक [akanak] اكنك अ०, सुरिंजान कड़वा । Hermodactylus 'bitter'

अकनादि (akanadi) बं०, पाठा, अम्बष्ट Cissampelos Pereira

अक़नूस-(Aqnus) यु०, नासपाती (Pyrus Communis) ।

अकन्दा (-Akanda) हि०, मदार, आक (Calotropis Gigantea R. Br)

अक़फ़ (Aaqaf) عقف अ०, गिल्सुलमिस्र, मिस्मार पेहुस्समकह फ़ुर्म । घाव, अहम, गठुव, टेंट, यह एक प्रकार का चर्म रोग है जिसमें साधारणतः पाँवके अँगूठेकी संधि अथवा कुगुलोकी सन्धि की त्वचा कठोर और स्थूल हो जाती है और जूता पहिन कर चलते समय व्यथा होती है । कार्न (Corn), क्लेवस (Clavus)-इं० ।

अक़ब (Aaqab) عقب अ०, पैं, ताँत, नस जिससे धनुष का चिल्ला बनाते हैं ।

अकबर (Aakabar) عكبر अ०, मोम भेद । Akind of beeswax

अकबरूस (akabarus)-यु०, रूमी और हिंदी भेदसे यह दूसरे प्रकारका होता है । इनमें से रूमी को अकबरूस अर्थात् "गोंद कहरुबा का वृक्ष" कहते हैं ।

अक़म [Aaqam] عقم अ०, बन्ध्या अर्थात् बाँझ होना । गर्भ स्थिर न होना । Sterile

अक़माउर्रुमान(- Aqmaaurruman-) عقماءالرمان अ०, अनार की छाल या अनार वृक्ष की कली जिसमें फल लगता है । Pomegranate bark or bud

अक़माउर्रुमानुल हिन्दी (Aqmaaurrumanul-hindi) اقمعوالرمان الهندى अ०, नागकेशर-हि० (Mesua Ferrea) ।

अक़यावैकून (Aqavaqailun)-रू०, चिरायता । Chirata

अक़यान (Aaqayan) عقيان अ०, शुद्ध स्वर्ण । प्योर गोल्ड Pure gold इं० ।

अक़यास (Aqayas)-यु०, इस्तरखाकून ।

अक़यूस (Aqayus)-यु०, अमरूद (Guava) (२) नासपाती (Pyrus communis) ।

अकर (Aaqar) عكر अ०, तिलछट, तैल कीट । रसौत, दुर्द, गाद गदलापन, तैल आदि की गाद । सेडिमेण्ट [Sediment] इं० ।

अकरकण्टक (Akarkantak)-यन्व०, ढेरा, अंकोल । Alangium Decapetalum

अकरकण्टा (Akarkanta) (Alangium decapetalum इं० मे० मे० । यन्व० ढेरा, अंकोल,

अकरकरतून (Aqarqartun-)—यु० गिले अकरीतस, [एक प्रकार की मिट्टी है) ।

१-अकरकरभ (Akarkarabh)-सं० पु०, अकरकरा । See Akarkara

२-अकरकरादि चूर्ण—अकरकरा, सौंठ, कंकोल, केशर, पीपर, जायफल, लौंग तथा श्वेत चन्दन इन्हें कर्ष १ भरले, चूर्णकर कपड़ छान करें, पश्चात् अहिफेन शुद्ध १ पल मिश्री (सिता०) सब तुल्य मिला चूर्णकर रक्खें । मात्रा १ रत्ती शहद के साथ रात्रि को कामी पुरुष खावें तो वीर्य्य स्तम्भन हो । शा० सं० म० ख० अ० ६, श्लो०४४ ।

अकरकरहा (Aqarqarha) عقرقرحا अ०, (PyrethriRadix) अकरकरा

अकरकरा (akarkara)-हि०, अकलकरा । आकळकोरा-म० । आकारकरभ अकल्लक आकल्लकर, तीक्ष्णमूल और तीक्ष्णकीलक प्रभृति पर्य इसके अनेक अन्य कल्पित संस्कृत

और शार्ङ्गधर प्रभृति ने अपनी पुस्तकों में इसका वर्णन किया है। अतः देखो (शार्ङ्ग० आकारादि, पृ० १ अ०, भा० भ० १ भ० ज्वराधिकार और वै० निघ०)। इससे स्पष्ट बात होता है कि भारतीयों का इसका ज्ञान इस्लामी हकीमों से हुआ जिन्होंने स्वयं अपने ज्ञान यूनानवालों से प्राप्त किये। यूनानी हकीम दीसकूरीदूस (Dioscorides) ने पायरीथ्रोन नाम से जिसमें पारीथ्रम शब्द व्युत्पन्न है (और जिसको मुहीत अज़म में "फ़ोरिथ्रून" लिखा है) उक्त औषधि का वर्णन किया है। किन्तु, मख़ज़नुल् अद्वियह् के लेखक हकीम मुहम्मद हुसेन के कथनानुसार इसका अरबी में "ऊदुलक़ुर्ह जिब्ली" कहते हैं और यह सीरिया में बहुतायत के साथ पैदा होता है तथा अकरकरा के बहुधा गुणधर्म रखता है। इसके प्रमाण हेतु ये हकीम अन्ताकी का वचन उद्धृत कर कहते हैं, कि अकरकरा दो प्रकार का होता है, प्रथम सीरियन (शामी) जिसका वर्णन दीसकूरीदूस ने किया है, और द्वितीय पाश्चात्य जो अफरीका और पाश्चात्य देशों में उत्पन्न होता है। उक्त वनस्पति की आकृति, पत्र, शाखा और पुष्प श्वेतपुष्पीय बाबूना कपोर के समान होते हैं, पर, उसके (अकरकरा के) पुष्प पीतवर्ण के होते हैं। इसी की जड़ को अकरकरा और फारसी में 'पर्वतीय तख़्म' कहते हैं। हकीम अन्ताकी का उक्त वर्णन बिलकुल सत्य है क्योंकि पश्चिमी अकरकरा वास्तव में स्पेनीय बाबूना की जड़ है जिसका वानस्पतिक नाम एन्थेमिस पायरीथ्रम [anthemis pyrethrum] अर्थात् आग्नेय बाबूना या स्पेनिश कैमोमाइल (Spanish Chamomile) अर्थात् स्पेनीय बाबूना है और इसी की जड़ हमारा उपरोक्त अकरकरा है जिसका वर्णन हो रहा है।

वानस्पतिक विवरण—यह अरब और भारतवर्ष की प्रसिद्ध बूटी है [यह बंगाल और सिंधमें भी उत्पन्न होती है] इसके छोटे २ क्षुप चातुर्मास की पहली वर्षा होते ही पर्वती भूमि में उत्पन्न होते हैं। इसकी शाखायें, पत्र और पुष्प सफेद बाबूने के सदृश होते हैं। किन्तु, डंठल पोली होती है। गुजरात और महाराष्ट्र देश में इस डंडी का अचार और साग बनाते हैं। इसमें खोआके सदृश बीज आते हैं। डाली रोमदेदार और पृथ्वी पर फैली हुई तथा एक जड़ में से निकल कर कई हो जाती हैं। उस डाली के ऊपर गोल गुच्छेदार छत्री के आकार का, किन्तु बाबूने से विपरीत पीले रंग का फूल होता है। डाली कड़ी २ और पुष्प पटल (Petals) सुफेद होते हैं। इसकी जड़ औषधि कार्य में आती है। ये सीधे २ टुकड़े जिन पर कोई रेशा नहीं लगा होता, ३-४ इं० (लम्बे अर्थात् एक बालिश्त) और आधे से $\frac{3}{8}$ इं० मोटे बेलनाकार गोल होते हैं। ऊपरके किनारे पर भायः वे रंग रोमों की एक चोटी सी होती है। बाह्य भाग धूसर वर्ण का तथा झुर्रीदार होता है। इसको जहाँ से तोड़े वहीं से टूट जाती है। गंध-विशेष प्रकार की। स्वाद-इस जड़ के खाने से गरमी मालूम होती है तथा चरपरी और जिह्वा जलने लगती है मानो यही इसकी मुख्य दर्शता है। इस को

चबाने से मुँह से लालास्राव होने लगता है और सम्पूर्ण मुख एवं कंठ में चुनचुनाहट और कांटे से चुभते मालूम होते हैं। इसकी जड़ भारी (वजनदार) और तोड़ने पर भी दूर से सुफेद होती है। इसमें शीघ्र कीड़े लग जाया करते हैं। परीक्षा—अकरकरा जंगली कासनी की जड़ के सदृश होता है, किन्तु यह तिक्त एवं काले रंग की होती है।

रसायनिक संघट्टन—इसमें [१] एक स्फटिकवत् अलकलाइड [क्षारीय सत्व] पायरेथ्रीन (Pyrethrine), [२] एक रेजिन [राल] और [३] दो स्थाई तेल (Fixed oils) होते हैं।

प्रभाव—सचक लालानिस्सारक, प्रदाहजनक और कामोद्दीपक।

औषधि निर्माण—यौगिक चूर्ण, वटिकायें और कल्क।

(१) अकरकरा ४ भाग, इन्द्रायन २ भाग, नौसादर २ भाग, कृष्णजीरक २ भाग, कुटकी ४ भाग, और कालीमिर्च ४ भाग, इन सब को मिला चूर्ण प्रस्तुत करें। अपस्मार में इसको नस्य रूप से व्यवहार में लावें।

(२) अकरकरा ४ भाग, जायफल १ भाग, लौंग २ भाग, दालचीनी १ भाग, पिप्पलीमूल, केशर २ भाग, अफीम १ भाग, भंग ४ भाग, मुलेठी ४ भाग, मदार मूल त्वचा ४ भाग, वायविडंग १ भाग, और शहद ५ भाग, सब को चूर्णकर वटिका प्रस्तुत करें। मात्रा—आधी से २० रत्ती।

गुण—बच्चों के चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, संक्षे-दमा दन्तोद्भेद, अतीसार, उदरशूल तथा वमन के लिये गुणदायक है।

ऑफिशल प्रिपेयरेशन्स (ए० मे० मे०) टिङ्क्चूरा पाइरीथ्राई (Tinctura pyrethri) ले०। टिङ्क्चर ऑफ़ पाइरीथ्रम (Tincture of Pyrethrum) इं०।

निर्माणविधि—पाइरीथ्रम की जड़ का ४० नं० का चूर्ण ४ आउंस, अलकुहाल (७०%) आवश्यकतानुसार। चूर्ण को ३ फ्लुइड आउंस अलकुहाल में तर करके परकोलेशन द्वारा एक पाइंट टिङ्क्चर तय्यार कर लेवें।

प्रयोग—यह दाँत के दर्द, गठिया, अपस्मार, पक्षाघात, कफवात, तोतलापन और ज्वर, तथा अनेक अन्य रोगों में लाभ पहुँचाता है।

गुणधर्म तथा उपयोग—

अकरकरा—अकरकरा को चबाने से प्रथम दाह प्रतीत होता है। तत्पश्चात् शीघ्र झुनझुनाहट एवं सनसनाहट का ज्ञान होता है तथा अधिक मात्रा लाला की उत्पत्ति होती है, क्योंकि मौखिकी धमनी, वातनाड़ी तथा लाला ग्रंथि पर इसका उत्तेजक प्रभाव होता है, पर थोड़ी देर पश्चात् नाड़ियाँ शिथिल हो जाती हैं। अस्तु यह एक सचक लालानिस्सारक (पावरफुल स्यालेगॉग) तथा किञ्चित् अवसन्नता जनक (अनस्थेटिक) है। उक्त प्रभावों के कारण इसको दंत पीड़ा, कव्वा लटकने (रीलैक्स्ड यूवुला) में और कंठशोथ (सोर थ्रोट) में मंजन, गण्डूष प्रभृति रूप से व्यवहार में लाते हैं। दंतपीड़ा में अकरकरा को पीड़ित दांत के नीचे रखने तथा चबाने से अ

यथा इसका टिंकचर तथा टिंकचर आयोडीन दोनों समभाग सम्मिलित कर इसमें जरा सी रुई तर करके इसको खोखले पीड़ा युक्त दंत में रखने से वेदना शमन होती है। दो आउंस (१ छ०) जल में एक ड्राम (1॥ मा०) इसका टिंकचर मिला कर इसका गंडूष कराते हैं। डाक्टर राय इसको योषापस्मार (ग्लोबस हिस्टेरिकस) में गुणदायी बताते हैं। (ड० मे० मे०)

यूनानी ग्रंथकार—इसे तीसरी कक्षा के अन्त में और चतुर्थ कक्षा तक रूक्ष मानते हैं। परन्तु, किसी २ मत से तीसरी और चतुर्थ कक्षा में शीतल मानते हैं।

देह में जो सुद्दा (रुधिर आदि की गांठ सी) पड़ जाती हैं उसको खोलता, मस्तक को दुष्ट मल से शुद्ध करता तथा मस्तक के अवयव तथा कफ आदि को मिस्तवेह चमक (जिला) देने वाला है। अर्दित (लकवा), पक्षाघात, कफवात पीड़ा के साथ गर्दन का अकड़ जाना, ओठों का ढीला होना, तोतला पन, खांसी, दांत और संधि वेदना, गृध्रसी, सर्दी पर, शीतल प्रकृति वाले की इन्द्री की शक्ति का, रुक रुक कर पेशाब आने को, स्त्रियों के आर्तव को तथा स्तनों में दूध, पसीने और ज्वर इन सब रोगों को पतला तथा जुदा भेद करने से लाभ पहुंचाता है। मस्तक रोग, संधि के रोग, वातवात (पुट्ठे) के, मुख के और छाती के रोग में अकरकरा को जैतून तेल में पीसकर मर्दन करने से लाभ होता है और इससे कुबड़ापन, सुन्नवात, या ढीलेपन को, अवयवों के पुराने रोगों को भी पूर्वोक्त उपयोग गुणदायक होता है।

यदि अकरकरा के क्वाथ को गरम २ मस्तक पर लेप और तालु पर मर्दन करें तो मस्तक को गरम कर नजले को नष्ट करता है और यदि इसे मस्तगी या कसैली वस्तु के साथ चबावें तो जो मृगी रोग दूषित दोषों से प्रकट हुआ है वह नष्ट होता है। शहद के साथ अकरकरा चूर्ण को चाटने से मृगी, अंधकार आना और पक्षाघात प्रभृति रोग नष्ट होते हैं।

अकरकरेके कपड़छन किये हुये बारीक चूर्ण को सूंघने से नाक रुकना अर्थात् श्वासावरोध दूर होता है और यदि इसको सिरके में भिगोय दांत के नीचे रखें तो दन्तशूल नष्ट होवे और चबाने या जिह्वा बुरकने से जीभ की आर्द्रता दूर होकर तुतलाना नष्ट होवे।

इसके क्वाथ को मुख में रखने से हिलते दांत मजबूत होते हैं। उक्त क्वाथ में सिरका मिला कर गंडूष करने से गले का फोड़ा, कण्ठ का रुकना तथा जीभ के लटकने (जो कि कफ के कारण होवे) को लाभ पहुंचता है।

पीसकर मर्दन करने से पसीना आता है। केवल अकरकरा या अकरकरा और फावा मिश्री दोनों को गले में डोरे से बांध लटकावें, तो बच्चे की मृगी का आना दूर होता है। यदि एक रंगे काले कुत्ते के बालों को और अकरकरा दोनों को बालक के बांध देवे तो इन्द्री में चैतन्यता हो तथा आमाशय के रोग और ज्वर नष्ट होवें।

[मधुक वर्ग-N. O Sapotaceae]

उत्पत्ति स्थान—पश्चिमी द्वीप तथा भारत वर्ष के अनेक भागों में इसकी कृषी होती है।

इतिहास व प्रयोग आदि—पश्चिमी द्वीप समूह तथा बंगाल में फल के लिये इसके वृक्ष लगाये जाते हैं और फल बाजारोंमें विक्रय हेतु लाये जाते हैं। भारत वर्ष के अन्य प्रान्तों में यह कम होता है। पश्चिमी द्वीप एवं अमरीका में इसका छाल घस्य तथा ज्वरघ्न प्रभाव के लिये प्रयोग में लाया जाता है। इसका बीज तीन रत्ती की मात्रा [अधिक—प्र माण में यह विषैला प्रभाव उत्पन्न करता है) में मूत्रल है। भारतीयों में इसके फल की बहुत प्रसिद्धि है। उनका कथन है कि यदि इसके फल को पिघले हुये मक्खन में रात्रि-भर भिगो रक्खा जाय और प्रातःकाल इसको सेवन किया जाय तो यह पित्त एवं ज्वर संबंधी आक्रमणों से सुरक्षित रखता है।

विवरण-इसकी त्वचा रक्तवर्ण की होती है। ऊपरी भाग धूसर वर्ण का होता है। 'स्वाद' तिक्त और अत्यन्त कसैला। 'फल' बाहर से खरदरा और अंडाकार भीतर से पीताभायुक्त श्वेत, नम्र और गूदादार और पकने पर इसका स्वाद सेव के समान होता है। बीज काले रंग के चमकीले अंडाकार और लम्बे होते हैं।

रसायनिक संघटन-[१] दो रेजिन [Resins] जिनमें से एक ईथर में घुल जाता है, [२] कषायीन [Tannin] ११ = प्रतिशत और [३] एक क्षारीय सत्व सैपोटीन [Sapotine] जो ईथर, मद्यसार और सम्मोहिनी [Chloroform] में घुल जाता है तथा अमोनिया द्वारा अपने सत्वों से भिन्न होकर तलस्थायी हो जाता है। [इ० मे०, प्ला०, फा० इं० २-भा०]

अकरासुलमालिक [Aqrasul-malik] اقراص الملک अ० एक हिन्दी बूटी का नाम है। कोई २ मैनफल को कहते हैं।

अकरी [Akari] हिं०, Dunal (seeds of) अकरी। [२] पुनीरके बीज हिं०। कश्मी, पं० आलिया पु०। Withania (Puneeria) Coagulans ले०। इं० मे० मे०, फा० इं० २ भा० सं० फा० इं०।

अकरीतस मातस [Aqritas matas]-यु० गुलेकसीफूल कुसुम।

अककर्जुसत [Aakaruzsat] عكارزيت अ० तेल या जैतून तेल की तिलछट। सेडिमेंट (Sediment) इं०।

अकरुट [Akrut] पं०, अखरोट [Juglans regia walnut ले०।

अकरुलबहर (Akrul bahr) अ०, मौया के सदृश एक जड़ है जिसको सैफुलबहर भी कहते हैं।

अकरूस [Aqrus] यु०, अकसूस, मवेशक अस्ली के नाम से प्रसिद्ध है।

अकरोट (Akrot)-हिं०, अखरोट Juglans

अकरोतिहृ (Akarotia) ता० । regia (wa lnut)-ले०।

अकरोफस (Akarofas)-यु० दौज़ कसीर

अकरोह (Akaroh)-सं०,अखरोट, (Juglans regia) लै० ।

अकरोहक(Akarohak)-फा, 'अञ्जरूत'(Astragalus Sarcocolla, Dymock) लै० ।

अकरोट (Akarout)हिं० } 'अखरोट', आक्रोट
अकरोडु(Akaroutu) ते० } (Juglansregia)
अकरोड(Akaroud)महा० } Walnut लै० इं०
अकरोडु (Akarondu)कना }

अकर्करः (Akarkarah } सं० पु०, 'अकरकरा
अकलकरः (Akalkarah } PyrethrumRadix लै० । गुणधर्म—उष्णवीर्य, बलकारक और कटुतथाप्रतिश्याय शोथ और वात नाशक है । वै० निघ० ।

अकर्णः (Akarnah)-सं० त्रि०, बहरा, बूचा, बधिर-हिं० । डेफ (Deaf)-इं० । हे० च० । साँप, 'सर्प' (Snake)-इं० ।

अकर्त्तनः (Akarttanah)-सं० त्रि०, वामन । वै० श० सिं० ।

अकलकर(Akalkar)-सं० पु० । अकरा, पोकर मूल । Spilanthus Oleraceæ-लै० । इं०, मे० मे०, स्का० इं० ।

अकलकरा (Akalkara } फा० अकरकरा
अकलकोरा [Aqalqora } Pyrethrum Radix लै० ।स० फ० इं० ।

अकलबर्की [Akalbarki]-द०, सर्पजया, कामाची-स० । सपसया-हिं० । वेपकली-महा० । कृष्णताम्र ।लै० । करडामणड-ता० । Canna Indica, C orientalis । इं० मे० मे० ।

अकलबार (Akalbar)-हिं०, महुआम, पणबीज पं० । पगतकृ त, तेरज-काश० । Datisca Cannabina लै० इं० मे० मे०, फा० इं०

अकळबार [Aqalbar]कॉमन इण्डियन शाट (Common Indian Shot) इं० । इं० हैं० गा० ।

अकलबेर [Akalber]हिं०, 'कुम्हरा' फा० ।

अकलाकरी [Akkalakari } कना०, 'अकर
अक्कलाकरी [Akkalakari } करा' हिं० ।
[Pyrethrum Radix) लै० । फा० इं० स० फा० इं० ।

अकल्पन [Akalpan]-हिं०, सचाहट, प्रकृत, सत्य, यथार्थ वास्तविक । रीअल (Real)इं० ।

अकल्यः [Akalyah]-सं० त्रि०, रुग्न रोगी । डिसीज़्ड (Diseased), इल (Ill) इं० ।

अकल्लः [Akallah]-सं० पु०, 'अकरकरा' (Pyrethrum Radix) लै० । भा० टी०, वै० निघ० र मा० वा० व्या०, वा० ।

अकल्लक(Akallak)-सं०, अकरकरा (Pyrethrum Radix) लै० ।

अकवार [Akavar)-हिं०, कुक्षि० कोख, गोद । बासम Bosom इं० ।

अकश (Aakash)عكش अ०, बालोंका उलझना, गुथ जाना, घूंघर वाले केश । कर्ल्डहेयर (Curled hair) इं० ।

अका [Aqa]قا अ०, ज्वर के कारण मुख का स्वाद खराब आना, रोग से अन्न जल का बुरा लगना ।

अकारकरभ [Akakarabh] सं०, पु०, अकरकरा' (Pyrethrum Radix, Linn) लै० ।

अक़ाक़रा [Akakara]-हिं०, करैला, काकरा (Momordica Charantia, Linn)ला० ।

अक़ाक़ा [Aqaqa] मि० एक मिश्र देशीय वृक्ष का फल है ।

अक़ाक़ालिस [Aqaqalis]-यु० 'चाक्सू' [अ] Cassia absus ले० । फ० इ०, १भा० ।

अक़ाक़िया—गुणधर्म—यूनानी ग्रन्थकारों के मत से अक़ाक़िया बालों को काला करता है। क्योंकि यह बालों की तरी को दूर करता है। सर्दी के फटे हुये हस्तपाद के लिये गुणदायक है, क्योंकि अपनी संकोचनीय शक्ति के कारण यह अवयवों के विच्छिन्न भागों को संकुचित एवं एकत्रित करता है, अवयव को बलवान बनाता और इसे फटने से रोकता है। दाख़स (अंगुलबेड़ा) के लिये लाभदायक है, क्योंकि इसमें ठंढक पैदा करता तथा मादा को लौटाता है। इसी कारण अन्य शोथों का भी लाभप्रद है मुख के क्षतों को दूर करता है क्योंकि उन रतूबतों को शुष्क करदेता है जो क्षत को पूरित नहीं होने देतीं। अपनी शुष्कता के कारण सन्धियों की शिथिलता को लाभप्रद है दृष्टिको बलदेता और उसे सूक्ष्म एवं तीव्रबनाता है क्योंकि यह नेत्र की गाढ़ी रतूबतों को जो रुह को गलीज़ करने वाली हैं, अभिशोषित कर लेता है। आंख आने में लाभ एवं शांति प्रदान करता है, क्योंकि यह आंख की ओर मलों के बहाव को रोकता है। और माफ़ूना (नेत्रस्थ रक्तबिन्दु) की औषधियों में डाला जाता क्योंकि यह दृष्टि को शक्ति प्रदान ... और इसको चिकित्सा में ओर्‍डण, ... [अक़ाक़िया] औषधियां ... आती हैं उनका पीड़ा से नेत्र का सुरक्षित रखता है। पान, अनुलेपन तथा वस्ति [हुकना] रूप से प्रयुक्त करने से यह क़ब्ज़ पैदा करता है। ग्राहिका, रक्तातिसार और रक्तस्राव का गुण करता है। निकली हुई कांच [गुदभ्रंश] को अपनी जगह पर लौटाता एवं उसकी शिथिलता को दूर करता है, क्योंकि इस में संकोचक शक्ति तथा रुक्षता विद्यमान होती है। उक्त अभिप्राय हेतु इसको खिलाते हैं अथवा इसे लेप रूप से उपयोग में लाते हैं। (नफ़ी०)

अक़ाक़िया [Aqaqiya] اقاقيا अ०, यह यूनानी शब्द अकाकिया (akakia) से अरबी बनाया गया है। यूनानी भाषा में अकाकिया कीकर को कहते हैं, किन्तु प्रामाणिक एवं विश्वस्त अरबी तथा फ़ारसी तिब्बी ग्रंथों के मतानुसार यह एक सत्व है जो क़र्ज़ [यह मिश्र के एक कण्टक युक्त वृक्ष का फल है जो कीकर का एक भेद है। कीकर की फलियों से जो सत्व बनाया जाता है उससे भी ये ही प्रभाव प्रगट होते हैं] के रस से तैयार किया जाता है। निर्माण विधि—इसके फल और पत्तोंको कूट कर रस निचोड़ लवें। पुनः इसका छानकर मन्दाग्नि पर यहां तक पकावें कि यह गाढ़ा हो जाये।

विवरण—यह भारी दृढ़ तथा प्रियगंधयुक्त होता है ... छोटे टुकड़े प्रकाश के सामने ... के रंगके मालूम होते हैं, ... ललाई लिये हुये होते हैं। ... दीर्घ पड़ते

है। स्वाद-मधुर, कसैला और लुआबदार होता है। शीतल जल में डालने से यह लुआब रूप में परिणत हो जाता है और इसमें पीताभायुक्त धूसरवर्ण अथवा भूरापन लिये हुये हरे रंग के कुछ पदार्थ तैरते हुये प्रतीत होते हैं। छानने के पश्चात् लुआब का रंग बबूर गोंद के समान होता है।

प्रकृति—१ कक्षा में (अग्रस्त) ठण्डा और रूक्ष है। हानिकर्ता—रोध उत्पादक है। दर्पनाशक—रोगन बादाम। प्रतिनिधि-चन्दन और रसौत। मात्रा-३॥ मा०।

अकाकिया या अकाकिया के प्रभाव तथा प्रयोग—कफ निस्सारक, बस्तिस्थलस्थ वेदना शामक, संकोचक, रक्त स्थापक, मूत्रलताजनक और बल कारक। श्वास प्रणालीस्थ कलाओं तथा जननेन्द्रिय का मूत्र सम्बन्धी अवयवों पर इसका सर्वोत्तम प्रभाव होता है और इसी कारण अतीसार, प्रवाहिका, सूजाक नासूर, और पुरातन बस्तिप्रदाह प्रभृति विकारों में यह अत्यन्त लाभदायी सिद्ध होता है। यद्यपि अफीम तथा इसके कुछ यौगिकों की अपेक्षा यह कम प्रभावजनक होता है, तथापि उस अवस्था में, जब कि यह अकेला उपयोग में लाया जावे समस्त वानस्पतिक तथा खनिज संकोचक औषधियों से अधिक तर प्रभाव कारक प्रमाणित होता है। जलोदर के साथ जब अतिसार एवं प्रवाहिका होवे तो अफीम और इसके यौगिक प्रायः हानिकर होते हैं। क्योंकि जिस मात्रा में ये अतीसार प्रभृति को रोकते हैं उसी अनुपात में ये जलोदर की वृद्धि करते हैं। इसी कारण "अकाकिया" उक्त रोगों में अफीम तथा इसके अन्य यौगिकों की अपेक्षा सर्वोत्तम तथा लाभदायी औषधि है।

अकाकिया मग्सूल [धोया हुआ]-इसकी विधि इस प्रकार है—अकाकिया को पानी में तरल करके ऊपर का पानी निथार कर टपका लेवें, और इसी प्रकार तब तक करते रहें जब तक कि पानी स्वच्छ साफ न दिखाई देने लगे तथा इसका रंग पंडुआ न पन्द हो जावे। पश्चात् इसकी टिकिया बना लेवें। उपयोग में लाने से प्रथम उक्त विधि द्वारा इसके धोने से यह और उत्तम हो जाता है। स० फा०, इ०, इ० मे० प्लां०, फा०, इं० २ भा० ह० म०।

देखो—बब्बूर।

अकाकिया [Akakia]-फि०, इ०, अ०, हि० बाजा। अकाकिया-फल का गाढ़ा किया हुआ स्वरस [उसारह], कीकर का रस, रब्ब।

अकाकीर (Aqaqir) अ०, (ब० ब०), अक़ार (ए० ब०)। जड़ी बूटियां। हर्ब Herb-इ०।

अकाका (Akaoha)-सं०, पनीटम, पुनीर (एक भारतीय बूटी है।), कफज्ञम। Withania (Puneeria) coagulans Dunal ले०

अकाम (Aaqam) अ०, अफ़ीम। बन्ध्या स्त्री वा पुरुष। स्टेराइल Sterile-इं०।

अकार (Aqar) अ०, शराब, मद्य। वाइन Wine-इं०।

अकार कर्तनीसा (Aaqar kartanisa) फ़ा०, आक़रक़ुर्हा, ... Cyclamen Persicum, Miller।

अकार आदम (Aaqar adam) عقار آدم अ०, मैदा लकड़ी-हिं० । मगास, मग़ासे-हिन्दी अ० । फिल्स फ़ा० । Tetrantha Roxburghii, Nees (Wood of)-ले० । मुशैल्पोयेहि, मैदा लकृडि, पिशिन पट्टइ ता० । मरमामिडि, मेदा-ते० । कुकुर चिता-बं० । स० फा० इ० ।

अकारकांटा (Akar kanta)-हिं०, ढेरा, अंकोल । Alangium Decapetalum, Lam-ले० ।

अकार कोहान (Aaqar kohan) عقار کوهان (१) अकरकरा (Pyrethri Radix) । (२) ऊदे सलीब, फ़ावानिया-फ़ा०, अ० । ऊदे सालप हिं० । Poeonia officinalis, Linn, P Corallina, Linn (male variety)-ले० ।

अकारतलून (Aka rtalun)-रू०, फारस देश में होने वाले एक जंगली वृक्ष का बीज है । इस वृक्ष का पुष्प अत्यन्त लाल तथा नीलगूं एवं सुन्दर होता है । स्वाद-मधुर ।

अकारवा (Aqarava)-करोया, जीरा भेद । A kind of cumin seed

अकार सौसीनाई (Aaqar-sousinai) सुर ऐरसा-हिं० । पुष्करमूल, पद्मपुष्कर-सं० । Iris Florentina । Orris root-इं० ।

अकारा-रः (Akara, rah)-हिं०, अपामार्ग, चिरचिटा । Achyranthes aspera, Linn । फा० इ० ।

अक़ाराअरून (Aaqara aarun) عقاراعرون क़िर०, अक़रक़ा [एक यौगिक चूर्ण है जो कभी २ आंख द्वारा और कभी हुक्ना की ऊऊसे वनाया जाता है ।]

अकारीकून (Akariqun)-जंगली जैतून का बीज । Wild Olive oil seed-इं० ।

अकारून (Aqarun)-रू०, वज अ० । बच हिं० । Acorus calamus, Linn ।

अकाल (Akal)-हिं० पु० [१] दुर्भिक्ष, Famine (२) असमय । प्रिमेचर Premature, अनटाइम्ली Untimely-इं० ।

अकाल (Akalah)-अ०, अक्लान, खिकह, खारिश-फ़ा० । कण्डु, खाज, खुजली, खुजाहट हिं० । प्रुराइटिस Pruritis-इं० ।

अकालकुष्माण्डः (Akal kushmandah) सं० पु०, असमयमें होने वाला कुष्माण्ड, ऋतु के अतिरिक्त होने वाला कुम्हड़ा ।

अकालकुसुम (Akal kusum)-हिं० पु०, बेसमय फूलने वाला, बेसमय का फूल ।

अकालजम् (Akalajam)-सं०त्रि०, (Unseasonable) बेसमय उत्पन्न हुआ, यथा—"अकालजस्तुचिरसं न धान्यं गुणवत्तरमृतम् ।" अर्थात् बेसमय उत्पन्न हुआ धान्य स्वाद रहित और गुणहीन होता है । राज० ।

अकालजलद (Akal jalad) सं० पु०, बेसमयका बादल ।

अकालपुष्प (Akal pushpa)-सं० पु०, अकाल कुसुम । बे मौसम का फूल ।

अकालभोजनम् (Akal-bhojanam)-सं० क्ली०, असमय भोजन अर्थात् भोजन के समय से पहिले अथवा समय बिताकर भोजनकरना । गुण-इससे शरीर असमर्थ हो जाता है और इसकारण सिर दर्द, विसूचिका, अफ़मक

और विसर्स्पिका आदि रोग उत्पन्न होते हैं। और रोगों की वृद्धि होने पर मृत्युभी होजाती है, जैसे—

"अकालकालेमुज्ञानो ह्यसमर्थंतनुर्नरः।
सांस्तानव्याधीनवाप्नोति मरणंचाधिगच्छति ॥"

मा० पू० १ भा० १५१ श्लो०।

अकालमृत्यु (Akal mrityu)-हिं० स्त्री०, अपक्व मृत्यु। कुसमय की मृत्यु (संस्कृत में मृत्यु पुल्लिंग है)। अन्टाइम्ली डेथ (Untimely death)-इं०।

अकालवृष्टि (Akal-vrishti)-हिं० स्त्री०, असमय की वर्षा। Untimely rain।

अकालशयनम् (Akal-shayanam)-सं० क्ली०, असमय का सोना, बे समय की निद्रा। गुण—अकालशयन से कफ कुपित होता है और प्रतिश्याय, पीनस, श्वास, सूजन, शिरोरोग तथा अग्निमांद्य प्रभृति रोग होते हैं। चा० सू० ८ अ०, हा०, भवि० १ स्थान २१ अ०।

अकालीम (Aqalim)-اقالیم अ०, (ब० व०), इक्लीम (ए० व०), देश, भाग, स्थान-हिं०। कन्ट्री Country-इं०।

अकाशदेवी (akashdevi) इं०।

अकाश (स) पवन (Akash-a pavan) द०, अकासबेल, अमरबेल-हिं०। कस्यूस-फ्रा०। Cuscuta Reflexa इं०। मे० मे०।

अकाशवर,-री (Akash bavar,-ri)-हिं०, अकासबेल। Cuscuta Reflexa।

अकाशवल्ली (Akash balli)-सं०, स्त्री०, अकासबेल। Cuscuta Reflexa।

अकाश (-स) बेल (Akash a bel), -हिं०, अकाशवंवरी, अमर-बेल-हिं०। आका-शवल्ली, खवल्ली, अमरवल्ली-सं०। अकासबेल, आलोकलता, अलगुसी, हरी अलगुसीलता-बं०। अफतीमूने०। हिन्दी यु०, फा०। कस्यूते-हिन्दी फ्रा०। कस्क्युटा रिफ्लेक्सा (Cuscuta Reflexa,), केसिथा फिलिफ़ॉर्मिस (Cassytha Fili-formis, Linn) ले०। डोडर (Dodder)-इं०। कोत्तान, इन्द्रियवल्ली, मान्दे ता०। इम्मूआल, पाचीतिगे, पच्चतिगा-ते०, तेलं०। आकाशवल्ली-मल०। बेल्लुपल्लि, नेलमुदपल्लि, ग तिगे बल्लि, अमरबल्लि, कना०, कर्ना०। अमरवेल, अन्तरवेल सोनवेल, अंतरोइल्का मह०। अमरवेल-गु०। कोवम-द०। अल्ता अड़ी-सन्ता। मेरमुदवल्ली-का०। अंतरवेल-को०। शियून-सु०। (लतावर्ग, N O Convolvulaceae)

उत्पत्तिस्थान—प्रायः समस्त भारतवर्ष।

विवरण—अकासबेल सर्वथा एक पराश्रयी लता है जो डोरे को समान कोकर, बेर, अडूसे इत्यादि वृक्षों पर जाल की तरह फैली हुई होती है। इसका तना गहरे हरित वर्ण का होता है जिसपर लम्बाई के रुख पीली २ धारियां पड़ी होती हैं। अंकुर से पतली जड़ निकल कर भूमि में प्रविष्ट होती है और तना शीघ्र २ बढ़ने लगता है। इससे चोषकसूत्र (Sucker) निकलकर निकटस्थ वृक्षकी शाखियों में भिन्न आहार हेतु मार्ग बनाते हैं और वह वृक्ष से आहार सम्बंधी आवश्यक तत्व, जैसे-जल तथा लवण जो वृक्ष में विद्यमान होता है प्राप्त करते हैं। इसप्रकार की व्यवस्था होजाने पर जड़ सूख जाती है और पुनः लताका भूमि से कोई भी सम्बन्ध नहीं रहजाता (ऐसे भी

इसके टुकड़े करके वृक्षोंपर डाल, दूने से यह उसपर बढ़ने लगता है)। यदि अंकुर को कोई उपयुक्त आधार न मिले तो भी यह सूख जाता है। सूक्ष्म पत्तों के अतिरिक्त इसमें पत्ते नहीं आते और नहीं इनसे उनका कोई काम ही है। तनेको काटकर देखने पर बाहर मजबूत जाली दार रेशे और मध्यमें मृदुगूदा दीख पड़ता है। पुष्प श्वेत रंग के आते हैं। पुष्प वाह्यावरण (Sepals) को हटाने पर भीतर से मटर के आकार के गोलाकार बीज निकलते हैं। वर्षा काल में इसकी बेल उगती है तथा एक ही वृक्ष पर प्रतिवर्ष पुनः नवीन होती है। इसी कारण इसको "अमरबेल" (Immortal) कहते हैं तथा यह वृक्षों के ऊपर होती है और इसका भूमि से कोई सम्बन्ध नहीं रहता, इसकारण इसको आकाशबेल आदि नाम से पुकारते हैं। इसका लटिन नाम कस्क्युटा (Cuscuta) कसूस से, जो अफ्तीमून (अकास बेल विलायती) का अरबी पर्याय है, व्युत्पन्न है। देखो—अफ्तीमून। उपर्युक्त दोनों लटिन पर्यायों में से प्रथम अर्थात् कस्क्युटा 'कान्वाल्व्युलेसीई' वर्ग का तथा द्वितीय अर्थात् कैसिथा "लारेसीई" (Lauraceae) वर्ग का पौधा है। छोटी २ भेदों के कारण इसकी बहुत सी जातियाँ हो गई हैं। अतः इसमें से किसी के डंठल पीले और किसी के लाल होते हैं, किसी के फल बड़े और किसी के छोटे होते हैं। इसी प्रकार और अनेक भेद प्रभेद पाये जाते हैं। यूनानी हकीम जिस औषधि को काम में लाते हैं यह अफ्तीमून नामसे फारस प्रभृति देशों से, भारतवर्ष में आती है।

प्रयोगांश—सम्पूर्ण पौधा, बीज (तुख्मे-
सूस) और तना।

रसायनिक संघटन—कस्क्युटीन (Querc-
etin), राल और एक प्रकारका लालीय सत्व
कस्क्युटीन या अमरीन (Cuscutin e) जो पु
तिक तथा ईथर और क्लोरोफार्म में घुलनशी
होती है।

प्रभाव-अकाशबेल के जो गुण वैद्यक ग्रंथों
वर्णित हैं अफ्तीमून के प्रायः वे ही गुण यूना
ग्रंथोंमें पाये जाते हैं। यहाँ क्यों प्रसिद्ध यूना
निघण्टु "मख्ज़नुल् अदुवियह" के लेखक मी
मुहम्मदहुसेन ने तो इसके गुण अफ्तीमून
सदृश ही वर्णन किये हैं। अतः सब सम्मत
इसके मुख्य २ गुण धर्म निम्न प्रकार हैं-पि
वर्तक, पित्त, कफ, तथा आमनाशक संयो
मस्तिष्कविकार यथा—उन्माद मूर्च्छा आदि
कामदायक रक्तशोधक हृदयका हितकारी ब
वर्धक नेत्र रोग नाशक, अग्निकारक, पिच्छि
ग्राही, बलकारक, रसायन और शुक्रवर्धक
है। इसका बाह्यप्रयोग (पुल्टिसरूप में
स्थानीय वेदनाशामक तथा शोथघ्न है।

स्वाद—मधुर, कड़ुवा, कसैला और चरपरा
औषधि निर्माण—शीतकषाय, क्वाथ, चू
और पुलटिस। मात्रा—४ रत्ती से १॥ मा
तक। दर्पनाशक—सोंफ, कतीरा, बादामरोगन
प्रतिनिधि—काली निशोथ या विशफाइज

अकासबेल विलायती (Akas-bel-vilay-
ati) हिं०, अकासबेल भेद। अफ्तीमून अ०
[Cuscuta Reflexa]

अकासमुग्री (Akas mugri) फा०, सदपाप

कृष्णकली, गुल-अब्बास-फा० । Mirabili Jalappa, Linn ले० । Four o' clock flower इं० । इ० मे० मे० ।

अक़ाहुली (Akahuli)-हि० अंधाहुली, अंध पुष्पी । Trichodesma Indicum-ले० ।

आक़ित (Aqit) اقط अ०, उस पनीरको कहते हैं जो दही का पानी उड़ाने के पश्चात् शेष रहता है उसमें लवण मिलाकर शुष्क कर लेते हैं ।

अक़ितान (Aqitan) اقطان यु० या यम०, मूंग हि० । Phaseolus Mungo-ले० ।

आकितमाकित (Akitmakit) اكتمكت अ० सिंद, करञ्जुआ, करञ्जो, कटकरञ्ज-हि० । कुबेराक्ष फलम्-स० । खायहे-इब्लीस-फा० । Caesalpinin (guilandina) bonducella, Linn [Nut of Bonduc nut] । स० फा० इं०, फा० इं० ।

अक़ीब (Aqib) عقاب अ०, (१) 'धाचिक' पक्षी-हि० । दाहक-फा० । Calois, Heel । (२) 'संधिबंधन' स्नायुरज्जु-हि० । रिबात, रبط अ० [Ligament] इं० ।

अक़ीक़ [Aqiq] عقيق अ०-एगेट agate इं० यह एक प्रकार का खनिज पत्थर है जो कई प्रकार का होता है । इसमें यमनी पीताभायुक्त रक्त वर्णीय, इसके पश्चात् पीत पुन श्वेत व र्णीय सर्वोत्तम होता है । किसी २ हकीम के विचार में यमन के रंग का अर्थात् लोहित वर्णाभास सर्वोत्तम होता है ।

गुणधर्म—भक्षक हृदय और मूर्च्छा, शोक, रक्तस्राव, प्लीहा और यकृत के गुर्दों तथा अश्मरी को नष्ट करने वाला है । इसे नेत्र में लगाने से नेत्र ज्योति की वृद्धि होती है । 'इसकी भस्म' उपरोक्त रोगों के अतिरिक्त अवयवों को बलप्रद, कामोद्दीपक और शुक्र को गाढ़ा करती है । ज्वरों में इसका उपयोग लाभदायी सिद्ध होता है । पुरातन सूजाक तथा व्रणों को पूरित करता है ।

नोट—चूं कि यह एक अत्यन्त कठोर पत्थर है अस्तु इसके भस्मीकरण में यह प्रयत्न करें, जिससे यह बिलकुल आटे की तरह बारीक पिस जाय और इसमें करकराहट अवशेष न रहे । उक्त अभिप्राय हेतु इसको बूटियों के अर्क में देर तक खरल करें लिखापि देते रहे ।

अक़ीक़ह [Aaqiqah] عقيقه अ०, नवजात शिशु के शिर का बाल ।

अक़ीक़ुल बहार [Aaqiqul bahar] عقيق البحر अ०, जपापुष्प ।

अक़ीख [Akikh] اكيخ अ०, राद, 'आंत', -आंत । [Intestines] ।

अक़ीदुल अनब [Aaqidul a nab] عقيد العنب अ०, अंगूरासव-हि० । मेजुस्तज-अ० । A (a kind of wine)

अक़ीदून [Akidun]-रू०, सुम, खुर । इं० n [Cloven]-hoof-इं० ।

अक़ीम [Aaqim] عقيم अ०, बन्ध्या, बांझ, चाहे पुरुष हो अथवा स्त्री । स्टेराइल [Sterile]-इं० ।

नोट—बांझ पुरुष वह है जिसके वीर्य में गर्भोत्पादक शक्ति न हो और बन्ध्या स्त्री वह है जिसमें गर्भ न ठहरे । अक़ीम शब्द यद्यपि

पुल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग दोनों के लिये प्रयोग में लाया जाता है, तथापि कभी स्त्रीलिङ्ग के लिये अक़ीमह् शब्द को उपयोग में लाते हैं।

अक़ीमह् (Aaqimah) عقيمة अ० बन्ध्या स्त्री। स्टेराइल वुमन (Sterile woman) इं०।

अकीमूज़ (akimuz) اکیموز अ०, अकीमूस। यह शब्द एकिमोसिस (Ecchymosis) से व्युत्पन्न है, जिसके माने वे चिह्न हैं जो चोट प्रभृति के कारण अर्थात् त्वचा में रक्त के जमने से रक्त अथवा नीलवर्ण के पड़ जाते हैं, जैसे-नेत्र का लाल बिन्दु।

अकीर (Aqir) عقير अ०, तिक्ततम, अत्यन्त कटु (कड़ुआ)। दी मास्ट बिटर The most bitter इं०।

अ (ए) कीरैन्थीस आल्टर्निफोलिया (achyranthes alternifolia)-ले०। अज्ञाझ्ली, गंगाटी (सिंध), 'उतरन'-हिं०। इं० हैं, गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, आल्टर्नेट लीव्ड (achyranthes, alternate leaved) इं०, गंगाटी, 'उतरन'-हिं०। इं० हैं गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस आब्ट्यूजी फोलिया (achyranthes obtusifolia, Lamb)-ले०, 'अपामार्ग'-हिं०। The prickly chaff flower)-इं०। इं० मे० प्लां०।

अ (ए) कीरैन्थीस इण्डिका (achyranthes Indica, Roxb)-ले०, अपामार्ग-हिं०। इ० मे० प्लां०।

अ (ए) कीरैन्थीस एस्परा (achyrathes aspera, Linn)-ले०, अपामार्ग, लटजीरा-हिं०। स० फा० इं०, इ० मे० मे०, इं० मे० प्लां०, मेमा०, इं० हैं० गा०, फा० इं० २ भा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, क्लाइम्बिंग (achyranthes, climbing)-इं०, नूर्या (a. Scandens, Roxb] इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, ट्रिएण्ड्रा [achyranthes, triandra, Roxb]-ले०, सांची, शालञ्चल्। इं० हैं० गा०।

अ (ए) कीरैन्थीस, थ्री स्टेमेण्ड [achyranthes, three stamened]-इं०, साची शालञ्चल्। इं० हैं० गा०।

अ [ए] कीरैन्थिस, रफ [achyranthes, rough]-इं० अपामार्ग, अगारा (-री), हलीम, मद्दुत। इं० हैं० गा०।

अ [ए] कीरैन्थीस लैनेटा [achyranthes lanata, Roxb]-ले०, चाया। इं० हैं० गा०।

अ [ए] कीरैन्थीस लेपेरिया (achyranthes Laparia)-ले०, रक्तापामार्ग, लाल ओंगा।

अ [ए] कीरैन्थीस वूली (achyranthes, wooly), इं०, चाया। इं० हैं० गा०।

अ [ए] कीरैन्थीस स्पिकेटा (achyranthes Spicata, Burm)-ले०, अपामार्ग। The prickly chaff flower-इं०। इं० मे० प्लां०।

अक़ीला (aqila) عقيلة गोरख।

अकीलिया कस्पिडेटा [achillea cuspidata, D C]-ले०, बरञ्जासिफ़-फ़ा०, हिं० बाज़ा। पीज़मरी-कश्मी०। इं० मे० प्लां०।

अकीलिया टर्मिका (achilleaTermica) से०, कुन्दस यु० । जुन्दबेदस्तर, [Castoreum] ।

अकीलिया मास्केटा (achillea moschata)-ले०, यह आलपपार्वतीय पौधा है जिसमें कस्तूरीवत गंध होता है । इसमें कम स्वेदजनक तथा आरोग्य कारक प्रभाव होता है । फा० इं० २ भा० ।

अकीलिया मिलीफॉलिअम (achillea millefolium, Linn.)-ले०, बरिञ्जासिफ, बूमे-मादरान-फ़ा० । मोमाद्रु-ओपन्धिया-काश० । परथर-मि० । स्टयुवर्ट महोदय के कथनानुसार यह बाजार में बिकने वाला एक पौधा है इसके पुष्प और पत्र औषधि कार्यमें आते हैं । इं० मे० प्लां०, फा० इं० २ भा०, मेमो० ।

अकीलिया सैन्टोलीना (achillea santolina, Linn.)-ले०, बरञ्जासिफ-फा० । फा० इं० २ भा० ।

अकीलिइक एसिड (achilleic acid)-इं०, बरञ्जासिफ या विष का तेजाब (aconitic acid)-इं० । फा० इं० २ भा० ।

अकीलाइन (achilleine) -इं०, यह अ० मॉस्केटा द्वारा निर्मित एक क्षारीय सत्व है । फा० इं० २ भा० ।

अकीलीन (Achillein)-इं०, रक्तासायुक धूसर वर्ण का सत्व जो बरञ्जासिफ द्वारा प्राप्त होता है । फा० इं० २ भा० ।

अकीलीस (aqilis)-यु० फरञ्जमिश्क, राम तुलसी, अम्पल, (Ocimum gratissimum) ले० ।

अकीसून (aqisun)-यु०, एक अप्रसिद्ध कण्टकमय बूटी है जो यावाधर्द के सदृश होती है और इस्पेन (Spain) में उत्पन्न होती है ।

अकुजीमड्ड (akuji madu)-ते०, थूहर, सेंहुड़ । Euphorbia Nerifolia-ले० । इं० मे० मे० ।

अकुप (akup)-फ़ा०, मुखके भीतर, मुख की नाली (Oesophagus) ।

अकुप्यम् (akupyam)-सं० क्ली०, स्वर्ण, सोना । aurum । हला० ।

अकु [कू] माली (aqu qu mali)-अ०, माअुल असल । शहदजल, शहद को पानी या अन्य पदार्थ जिसमें शहद हल करके जोश नहीं दिया जाता । हनीवाटर Honey water इं० ।

अकुरु (akuru)-सिगा०, गुड़ हिं० । कन्द फा० । गुड़-बं० । जैगरी Jaggery-(of sugar cane)-इं० । स० फ़ा० इं० ।

अकुरु अरक (akuru-arak)-सिगा०, गुड़की शराब-हिं० । गुड़की दारू, गुड़ की शराब-बं० । Liquor of Jaggery-इं० । स० फ़ा० इं० ।

अकुलः (akulah)-सं० त्रि०, निरस्ति द्रव्य, नीचप्राय । श० चि० १ अ० । सम्य वर्णहीन अधम अर्थ, यथा—"सम्यवर्णोऽजदश्चैव अकुलापरिकीर्तितः" । वैद्य० १ अ० ।

अकुलवलसां (aqulla balasan) अ०, रोगने बलसाँ-फ़ा० । बलसांका तेल-हिं०, द० । Balsamum, var of (Balsam of Mecca or Balm of Gilead)-ले० ।

अकुवेयलासमून (aqoroyala-samun)

...मु०, दाघुनुल् बलसाँ, रोगने बलसाँ-फा० । बलसा-का तेल-हि०, यू० । Balsam um । नोट-यद्यपि उपर्युक्त, शब्द वस्तुतः बालसम आफ मका (Balsam of Mecca) के पर्याय हैं पर ये भारतीय आइल आफ कोपेवा (Oil of Copaiva in India), के लिये भी प्रयुक्त होते हैं । स० फा० इ० ।

अकुटः (akutah)-सं० पु०, फलवृक्ष विशेष, आगर्ह । रत्ना० ।

अकूनैतस (aqunaitas)-यु०, आमिफूस नमिर-अ० । विष, 'मीठा ज़हर' । aconitum Napellus ।

अकुनोस्यून (aqunosyun)-यु०, रईयुल्-अयल । एक बूटी है जिसके लक्षण में मतभेद है ।

अकूपारः (akuparah)-सं० पु०, कच्छप, कछुआ । Tortoise । मि० का० ।

अक्कुमार्यून (aqumarshun)-यु०, जंगली सौंफ । Wild anise-इ० ।

अक्कुरुन (aqurun)-यु०, वज, 'बच' (Acorus calamus, Linn.) ।

अक्कूल (naqul)-अ०, बुद्धिमान मनुष्य । (Idem)-इ० ।

२—संकोचक औषधि । (astringent Medicine) इ० ।

अक्कुसालियून [aqusaliyun] यु०, करफ्स नब्ती जो कि पानी से पैदा होता है ।

अकृताख्य यूषः [akrita khya yushah] सं० पु०, लवण, स्नेह, कटु आदि पदार्थ रहित यूष । यह लघु होता है । वै० निघ० ।

अकृथित क्षीरम् [akrithit-kshiram] सं० क्ली०, कच्चा दुग्ध । यह कफ कुपित करता है और भारी होता है । वै० निघ० ।

अकेन्थस इलिसिफोलिआ यस [Acanthus Ilicifolious]-लै०, 'हरकच कांटा'-हि०, ब० । हरिकुश-सं० । मारेचा-गो० । मारवडी-मह० । वैना स्कुल्लीमा मल । Holly, ly leaved acanthus-इ० । इ० मे० मे०, इं० हैं० गा०, फा० इं० २ भा० ।

अकेन्थस हालली लीव्हड [acanthus Holly leaved]-इ० 'हरकच कांटा'-हि०, ब० । इं०, मे० मे०, इं० हैं० गा०, फा० इं० २ भा० ।

अकेन्थेसीई [acanthaceae], लै०, अडूसा वर्ग' अडूसे के वर्ग की औषधियाँ । The adusa order [acanthad's] इ० ।

अकेम्पे पेपिलोसा (acampe papillosa, Lindl]-लै०, इसकी जड़ औषधि कार्य में आती है । मेमो० ।

अकेलुचांग, गुंगुल [kelu chang ngul]-ले०, 'कुड़ा' कुरज, कोरैया । (Holarrhena antidysenterica)

अकेशा (akesha)-सं०, 'जयन्ता' स्वाभुत, जैत-हि० । Sesbania Aegyptica.

अकेशिया (acacia)-इ०, फलीवर्ग (Leguminosae), के मायमोसी (Maimoseae)-उपवर्ग की औषधियाँ, जिनसे समुग्ग अरबी प्राप्त होता है । समग-अरबी, बबूल का गोंद (Gum arabic)-इं० ।

नोट—प्राचीन अंग्रेजी में इसका साधारण

अकाकिया या अकानिया था; किंतु अर्वाचीन ग्रन्थों में यह "अकेशिया" है।

अकेशिया अरेबिका (acacia Arabica Willd.)-ले०, बबूल (र), कीकर-हिं०। Babool tree-इं०। इं० मे० प्लां०, स० फा० इ०।

अकेशिया इन्टासिया (acacia Intsia, Willd)-ले०, अवई का बेल-सत। कर्वारपुमा कोकृत हुम-सन्ता०। कुन्दुरु-कोल०। हर्रोरी-ने। य पिरिक, रमाशिय लेप०। कारिएन्टा, कोरेपडम्-तै०। सिल्वुरी-मद्रु०। मांइमोसा इन्टसिया (Mimosa Intsia, Linn, Roxb)-ले०।

वा० व०, शमीवर्ग या बबूल वर्ग (Leguminosaea)

उद्भवस्थान—हिमालय के उष्ण प्रदेश, पूर्वी और पश्चिमी भारतद्वीप। गुणधर्म-संताल की स्त्रियाँ अनियमित ऋतु (Deranged oourses) में इसके पुष्प को उपयोग में लाती हैं। इं० मे० प्लां०। इसके छाल तथा पत्र रंग के काम में आते हैं। मेमो०।

अकेशिया कॉन्सिना (Acacia Concinna, D. C)-ले०, सातला, बनरीठा-हिं०, अयम्। शातला, रसोड, चर्मकषा-सं०। फली या छीमीके नाम (The Pods)-सीकी (-के) काई-रू०। शीका, शीकाकाई-ता०। शीकाय, शीकाय, गोगु-तै०। शीशिकु-कीर-मल०। शीगे-कायि-कना०। कोंचे, कोचोली-बं०। शीका, तेल छेक्का-सह०। केम्पीलसी, केम्पाल पेडाक, केडान ति-बर०। अकेशिया रगोसा (acacia Rugata)-ले०। स० फा० इं०। इं० मे० प्लां०।

अकेशिया कॉर्टेक्स (Acacia Cortex)-ले०, बबूर त्वचा; बबूल की छाल-हिं०। acacia bark-इं०। इं० मे० प्लां०।

अकेशिया केकाउ (acacia Cachou)-फा०, खैर वृक्ष; खदिर वृक्ष; कत्था का पेड़-हिं०। acacia Catechu; Willd-ले०। फा० इं० १ भा०।

अकेशिया कैटेशु—च्यू (acacia Catechu, Willd)-ले०, खदिर वृक्ष, खैर का पेड़, खैर, कत्था खैर, खैर बबूल-हिं०। Catechu tree Cutch, इं०। इं० मे० प्लां०, फा० इं० १ भा०, स० फा० इं०।

अकेशिया गम (acacia gum)—इं०, समगे अरबी, बबूल का गोंद। gum acacia-इं०। इं० मे० मे०।

अकेशिया जैक्वीमाण्टियाई (acacia Jacquemontii, Benth)-ले०, कीकर, बबुल, बबुल, बब्लिं-पं०। हञ्ज-अफ०। स्वैसोली-गु०। मेमो०।

अकेशिया की अरबी (acacia arabica)-फा०, बबूल, फा० इं० १ भा०। acacia arabica-ले०।

अकेशिया डीकरेन्स (acacia decurrens, Willd.)-ले०, इसकी छाल रंग के काम में आता है। मेमो०।

अकेशिया नाइलोटिका (acacia nilotica, Delile)-ले०, कीकर वृक्ष। फा० इं० १ भा०।

अकेशिया पाइएनेन्था (acacia pyonantha, Bth)-लेo, खदिर । इं० मे० प्लां० ।

अकेशिया पॉलिअकेन्था (acacia Polyacantha,) ले०, खदिर वृक्ष । Catechu tree-इं० । इं० मे० मे० ।

अकेशिया पिनेटा (acacia Pennata, Willd.)-ले०, खदिर, बिसवृक्ष-हिं० । Mimosa Pennata-ले० । इं० मे० प्लां० ।

अकेशिया फार्नेशियाना (acacia Farnesiana, Willd.)-ले०, (अ)इरिमेद, दुर्गन्ध-खैर, गुहकीकर (Mimosa Farnesiana Linn, Roxb)—ले० । इं० मे० प्लां० ।

अकेशिया फेरुगीनिआ (acacia ferruginea, D C)-ले०, पौर-नेपाल । अनस एडु, अनसमूह और वुनि-ते० । शीमै-वेलवेल, वेलवीलम-ता० । नोट—तेलगुनाम "वुनि" तामिल "वन्नि" के साथ मिलाकर प्रायः भ्रम कारक बना दिया जाता है, जो वस्तुतः समी (Prosopis spicigera का) नाम है। देखो-बबूल । स० फा० इं० ।

अकेशियाबार्क (acacia bark)-इं०, बबूलका छाल-हिं० । acacia Cortex ।

अकेशियामॉडेस्टा (acacia modesta, Wall)-ले०, पलोस-अफ़० । फुलाहि० पं० । मेमो० कास्रोतरियो-गु० ।
उत्पत्तिस्थान—पश्चिमी और मध्यहिमालय मूल प्रयोगांश—गोंद । देखो-बबूल ।

अकेशियामॉलिस (Acacia Mollis)-ले०, नरमी-हिं०, acacia Soft-इं० । ० इं० गा

अकेशिया रयुगेटा (acacia rugata)-ले०-सातला-हिं० । acacia Concinna, D C । इं० मे० मे० ।

अकेशिया लेण्टिक्युलेरिस (acacia lenticularis, Ham)-ले०, खिन-घर्मा, कुमा । मेमो० ।

अकेशिया लेट्रोनम (acacia latronum, Willd)-ले०, मेप-हिं० । पाकीतुम्म-ते० मेमो० ।

अकेशिया ल्युकोफ्लीआ (acacia leucophloea, Willd)-ले०, रीवां, सुफेद-कीकर-हिं० । श्वेत बर्बूर वृक्ष-सं० । जङ्गली कीकर, पहाड़ की कीकर, ग्राम की कीकर-द० । सफेद बाबूल-बं० । वेल-वेल, वेल-वेलम्-ता० । तेल्ल-तुम्म-ते० । वेल-वेलम्-मला० । बिलि जालि मरा-कना० । हेवुर, पांघर, पांघरिया, बाभलिचे झाड़, बाभ्लीचे झाड़-मह० । सफेद बावल्-गु० । मन्क्रौनकियि‍ङ्‌-अफ़िय‍ु, तनौङ्-बर० । अरिज्ञ-राज० ।
उत्पत्तिस्थान—पञ्जाबके मैदान मध्य तथा दक्षिण भारत और राजपूताना । प्रयोगांश-त्वचा देखो—"बबूल" ।

अकेशियावेरा (acacia vera, Willd)-ले०, कुरज़ वृक्ष । फा० इं० १ भा० । शौकुल्-मकह्, शौकुल्-एकरावियह-शौकुल-मिश्रियह अ० । नोट—अन्तिम तीन नाम मिस्र तथा अ-रब में पाये जाने वाले बबूर वृक्ष के कुछ जात्यभेदों के लिये भी प्रयोग में लाये जाते हैं। फा० इं० १ भा० । स० फा० इं० ।

अकेशिया वेलीस्याना (acacia Wallic

hiana)-सेo, यरया का पेड़, खदिर वृक्ष। acacia Catechu। इ० मे० मे०।

अकेशियासमा (acacia suma)-लेo, स (श) मी, छोकरा। सई-प०। Prosopis Spicigera-लेo। White Mimosa-इं०। फा० इं० ३ मा०।

अकेशिया साफ्ट (acacia Soft)-इं०, खाकी। इं० हिं० गा०।

अकेशिया सेनेगल (Acacia Senegal, Will)-लेo, कोर-सिंध। कुम्बा-राजपु०। उद्भव स्थान-यह एक कण्टकमय छोटा वृक्ष है जो सिंध और अजमेर में उत्पन्न होता है।

नोट—यह अफरीका के सेनेगल प्रान्त में होने वाला "बबूल" ही है। प्रयोगांश-निर्यास।

अकेशिया सण्ड्रा(Acacia Sundra, D C)-लेo, मला खैरा-लेo। इसका गोंद काम में आता है। मेमो०।

अकेशिया स्पेसीओजा(acacia Speciosa Willd)-लेo, 'सिरस का' पेड़-हिं०। शिरीष-सं०। सिरिश का झाड़, सिरिज का झाड़ द०। (albizzia Lebbeck)-लेo। इं० मेमे०।

अकोट:ıkotah)-सं० पु०-'सुपारी' (areca Catechu)।

अकोटा (akota)-कना, कोसम, गोसम,-सं०, हिं०। (Schleichera Trijuga, Willd लें०। इं० में प्ला०।

अकोड(akod)-सं०, अखरोट। Juglans regia।

अकोडगन्ध (akond gandh)-सं०, हींग, हिंगु, रामठम। assafoetida।

अकोंद (akond) हिं०, मदार, 'आक' (Calotropis gigantea, R Br (Mudar)-लें०। स० फा० इ०।

अकोरा (akora)-पु०, चाँदी, रजत। (Argentum)-लेo।

अकोरिया (akoriya)-उ० प० सु० भभियून

अकोरिटीन (acoretine)-इ०, वचीन वच सत्व, कोलीन (Choline)-इ०। यह मधु सदृश तरल ग्लूकोसाइड (Glucoside) है जो अत्यन्त तिक्त और सुगन्धित होता है तथा मद्यसार (alcohol), क्लोरोफार्म और ईथर में घुल जाता है और शर्करा तथा उड़नशील तैल रूप में पृथक हो जाता है। इ० मे० मे०।

अकोरीन (acorin)-इ०, यह एक उड़नशील तेल है जो वच में वर्तमान होता है। देखो-वच। इ० मे० मे०।

अकोल (akol)-द०, हिं० काला अकोला, ढेरा भेद। (alangium Hexapetalum, Lam)-लेo, स० फा० इ०। देखो-अंकोल।

अकोला (akola)-हिं०, द०, अंकोल, ढेरा (alangium Decapetalum, Lam)-लेo। स० फा० इ०।

अकोआ (akoua) } हिं०, मदार, आक। अकौन्दा (akounda) } Calotropis gigantea, R Br।

अकौल-ला (akoul,-la)-हिं०, ढेरा, अंकोल। alangium Decapetalum, Lam-लेo।

अकौस ('aqous)-اقوس अ०, कुबड़ा, कुब्ज, जिसका पृष्ठ बाहर निकल आया हो। हम्प बैक्ड Hounch backed इ०।

अकअब (akab) اكعب अ०, (ब० व०)कआब كعب (ए० व०)-टखने हिं०। यह स्थान अर्थात् पैर सामने को और पीछे को मुड़ सकता है। ankles इं०

अकअम (aqaam)-اقعم अ०, सपाट चिपटी नासिका वाला (Flat nosed) इ०।

अकअस(aqaas)- اقعس अ०, उसतौदर बालीय अर्थात् वह जिसका वक्षःस्थल बाहर को निकला हो और पृष्ठ भीतर को धंसा हो। नोट—अहदब और अकअस का भेद अहदब में देखो।

अ (इ) कआद (afqand) اقعاد अ०, लुञ्जापन लंगड़ापन अथवा अवयवोंका ऐसा विकार जो बैठने को बाध्य करे। Lameness इं०।

अकऊमा (aqumna) اكومة अ०, अकूमा। एक प्रकार का चक्षुगत विशेष। यह कठिनता पूर्वक अच्छा होता है। यह पपड़ी के समान होता तथा झिल्ली को खा जाता और नेत्र को विनष्ट कर देता है।

अकक‍ह (ankka) ككه फा०, अककक (मा हका पक्षी)।

अक्कात (aakkat) अ०, बंद, रुका रात्रि जिसमें वायु सर्वथा बन्द हो। नोट—गम्म; रम्ज़ाम् सफरत और हस्तिवाम। इनमें से अकह वायु के रुकने और उष्णताधिक्य को कहते हैं। गम्म का अर्थ कठिन गर्मी है और सफरत तथा हस्तिवाम इसके पर्याय हैं। रम्ज़ाम पैरों कठिन, तपाता एवं ज़मीन को कहते हैं, जिससे कंकड़ी आदि भी जल उठें।

अक्कलाकरा (akkal kara)-मह० अक्कलाकरे (akkala-karo)-कना० अकलाकरी (akala-kari)-कना० } अकरकरा Pyrethri Radix ले० । फा० इं०, स० फा० इं०।

अक्कार (aaqqar) عقار अ०, (ए० व०) अक़ाक़ीर (ब० व०) जड़ी बूटी-हिं०। Herb स० फा० इं०।

अक्किारकारम (akkar-karam)-ते०, ता० अकरकरा-हिं० । Pyrethri Radix । स० फा० इं०।

अक्काल (akkal)-اكال अ०, इसका शाब्दिक अर्थ भक्षक अर्थात् खा जाने वाला है, किन्तु आयुर्वेद की परिभाषा में उस औषधि का कहते हैं जो अपने तीक्ष्ण एवं भेदक गुणकी अधिकता के कारण अवयवों के सारे अंशों का नष्ट कर देवे। यह औषधि जो धर्षकारक एवं गलाने वाले गुण के कारण मांस को खा जाय और उसके सार भाग को क्षीण कर देवे, यथा चूना और हड़ताल। करोसिव Corrosive, एस्कैरोटिक Escharotic-इं०।

अक्किकरुका (akkikaruka) मला० अक्किरकारम्(akkirakaram)ता० अक्किलाकारम् [akkilakarm)मला० } अकरकरा हिं०। Pyrethri-Radix ले० फा० इं०, फा० इं०।

अक्की (akki)-कना०, चावल हिं०। Rice। स० फा० इं०।

अक्कीसारायि (akkisarayi)-कना०, चावल की शराब-द। चावल की शराब-हिं। स्पिरिट-शालीयम-सं०। विनुम् सारिवि-ते०। और चारायम मला०। लाइकोर ऑफ राइस (Liquor of Rice) इं०। स० फा० इं०।

अक़जम (akzam) أقزم अ०, कोतहबीनी; जिसकी नासिका छोटी हो।

अकज़ाज़ (akzaz) أقزاز अ०, कठिन शीत का लगना, कम्पन।

अकज़ार (aqzar) أقذار अ०, (ब० व०) क़ज़र قذر (ए० व०) कसाफ़त, गिलाज़त, गन्दगी फ़ा०। मैला पन, अशुद्धि हिं०। फ़िल्थस Filths इं०।

अकतम (aktam) أكتم अ०, जिसकी अंगुलियाँ हथेली की ओर फिरी हुई हों।

अक़्तअ (aqtaa) أقطع अ०। खंडित हस्त, कटा हुआ हाथ।

अ(इ)क़्तनरार (a(i)qtanarar) اقطنرار अ०। हाँपना, हाँफना। पैंटर Pant, To Be out of breath इं०।

अक़्तद (aktad) أكتد अ०। उच्च कंधावाला ऊँचे कंधावाला मनुष्य।

अक़्तन (aqtan) أقطن अ०। कुब्जपृष्ठ کوژ पुश्त फ़ा०। कुबड़ा, कुब्बा। हम्प बैक्ड, Hump backed इं०।

अक़्तम (aqtam) أقتم अ०। मटमैला, श्यामता युक्त, श्यामता युक्त रक्तवर्ण, ... मटियाला, ... लालिमा युक्त, Brownish red इं०।

अक़्ताद (aktad) أكتاد [ब० व०] कतिद كتد [ए० व०] अ०। स्कन्ध, स्कन्ध, पृष्ठ मध्यस्थ पृष्ठ की हड्डी। Shoulder इं०।

अक़्तत (aqtat) أقطط अ०। घूँघराले बाल वाला पुरुष। कर्ल्ड हेयर्ड Curl haired इं०।

अक़्ताफ़ (aktaf) أكتاف [ब० व०] कतिफ़ كتف [ए० व०] अ० स्कन्ध, कंधे। शोल्डर्स Shoulders इं०।

अक़्तार (akter) أقطار [ब० व०], क़ुत्र قطر [ए० व०] अ०। शारीरिक दूरियाँ, व्यास, कुतूर। डायमीटर्ज़ (Diameters) इं०।

अक़्तार ख़ारिजिय्यह [aqtar kharijiyyah] أقطار خارجية अ०। शरीर की बाह्य दूरियाँ, अन्तर। Exterol, Diameters।

अक़्तार दाख़िलिय्यह [aqtar dakhiliyyah] أقطار داخلية अ०। शरीर की आभ्यन्तर दूरियाँ, अन्तर, फ़ासले, Internal Diameters इं०।

अक़्तार सलास—(aqtar Salasah) أقطار ثلاثة अ०। शरीर की, त्रिविध, अन्तराल अर्थात् लम्बाई, चौड़ाई व गहराई।

अक़्लीतावस (aqlitaus) أقليطاوس यू०। अकलीतूस اقليتوس यह युनानी भाषा का शब्द है (इसका अर्थ "सत्य" या "स्थिर" होता है) किंतु तिब्ब की परिभाषा में सर्वोत्तम (...) को कहते हैं। हेक्टिक फीवर (Hectic Fever) इं०।

अक़्द (aqd) عقد अ० ... गिरह लगाना; गाँठ देना; बाँधना, ग्रंथि देना हिं०। तरल पदार्थों का गाढ़ा हो जाना, घनीभूत होना ...

अक़्दह (aqdah) अ०। गुलमेंहदी, ... फ़ा०। ... सुरमाली ...

(Stammering) पजम्युशीज़ (Balb utics) इं० ।

अक़्दह (aakdah) معقدہ अ० । पीसे ज़ुबान फा० । जिह्वामूल, ज़ुबान की जड़ हिं० । २- हृदय मूल अथवा हार्दिक नियम ३-मध्य हृदय ।

अक़्दीदूस (aqdidus) اقدیدوس अ० । देखो 'अगदीदूस' ।

अक़्न (aakn) عکن अ० । चीन, शिकन फा० । झुर्री पड़ना, सिकुड़न, वलो जो मेदावी होने के कारण उदर पर पड़ जाय । वलिः सं० । रिंकिल्ज़ (Wrinkle) इं० ।

अक़्नफ़ (aqnaf) اقنف अ० । लघुकर्ण वाला छोटे २ कान वाला, हिं० । Small eared इं० ।

अक़्नह (aaknah) अ० । 'सुरिञ्जान' (Hermodactylus) ले० । सं० फा० इं० ।

अकनह (aknah) اکنہ सबूरतमिस्यह लبنیہ मसरू दुहुनिय्यह دهنیہ और हब्बुस्सबा حب الشباب अ० । कील, मुहांसे जो जवानी के आरम्भ में मुख मंडल पर निकलते हैं । एकी [acne] इं० ।

नोट—जो युवा स्त्री पुरुष मध्य मार्ग का अवलम्बन न कर स्वास्थ्य संबंधी नियमों का उल्लंघन करते हैं, उनको सामान्यतः यह विकार हो आया करता है ।

अकनार [aqnar] اقنار अ० । सुराही में मुँह लगाकर जल पीना अथवा मद्यपान करना ।

अकफ़न [aqfan] اقفن अ० । जिसके पाँव की अंगुलियां फिरी हुई हों ।

अकफ़स [akfas] اکفس अ० । जिसका पैर टेढ़ा हो और वह अपने पैर की छोटी अंगुली पर सहारा देकर चले ।

अकफ़ह [akfah] اکفح अ० । श्याम, काला हिं० । ब्लैक Black इं० ।

अकबद [akbad] اکبد अ० । यकृत रोगी, वह रोगी जिसका यकृत बढ़ा हुआ हो, बढ़े हुये यकृत वाला । एन लार्ज्ड लिवर [Enlarged liver] इं० ।

अकबस [akbas] اکبس अ० । जिसके शिर का आगा निकला हुआ और ललाट धंसा हुआ हो ।

अक़बाद [akbad] ब० व०, कबिद ए० व०] अ० यकृत, जिगर, कलेजा । Liver इं० ।

अकबीस [aqbis] اقبیس अ० । रसूलिया जिसका शिश्नाग्र [मणि, सुपाड़] खतना से पहिले शिश्नाग्र त्वचा से बाहर निकलता हो ।

अकमअ [aqmaa] اقمع अ० । जिसके नेत्र से जल स्राव हो ।

अकमस [akmas] اکمس अ० । जो कठिनता पूर्वक देख सके ।

अकमह [akmah] اکمہ अ० । कोरमादरज़ाद کورمادرزاد फा० । जन्मांध, सद्योऽंध हिं० । बार्न ब्लाइण्ड Born Blind इं० ।

अकमाक [akmak] اکماک फा० । वमन, छर्दि, मतली । वॉमिटिङ्ग Vomiting, नॉशिया Nausea इं० ।

अकमाल [aqmal] اقمال [ब० व०], कम्ल قمل [ए० व०] अ० । जुओं [ढीलों] के अण्डे बच्चे अर्थात् लीख, निट Nit, The egg of a lousee ।

अकमावस [aqmavas] اقماوس अ० । एक दैनिक ज्वर, एक दिन का ज्वर। दुम्मायुम ??? अ० । तप यकरोजह تپ یکروزه फा० फ़ेब्रिक्युला Febricula इं० ।

अकरघास [akraghas] हिं अगिया। Lemon grass स फा इं ।

अकरा घास का इत्र [akya-ghas ka itra हिं० गवतरचक तैल स०। अज्याघास तैल यं० । Lemon Grass oil इं० । सं० फाँ० इं० ।

अकरअ (Aqraa) اقرع अ० । गंजा, गञ्जा, जिसके सिर के बाल गिर गये हों, केशहीन, चन्दुला, चाइ Bald इं० ।

अकरन (Aqran) अ०, पैवस्तह अबरू फा०। जिसकी दोनों भौंहें मिली हों।

अकरफ (aqraf) अ० अत्यन्त रक्तवर्ण गम्भीर रक्तवर्ण हिं । डार्करेड Darkred इं० ।

अकरबी (aaqrabi) फा० बुत्मज अकरबी। Doonioum Pardalianchis, Linn फा० इं० २ मा० ।

अकरा (aqra) अ०, । ब० व० । कुर् | कूर्। रज प य रजोकाल, मासिक काल, मासिक धर्म का समय । Period of the menses इं० ।

अक्रानिकी (Akraniki)-यु०, शुनाई-फा० । धारावई । Shukai । फा० इं० २ मा० ।

अक्रान्ता (Akranta)-सं०, पु०, कटेरी, भटकटाई, बृहती । बृहती युग-सं० । पिस्तति, ब्या घ्रङ्-सं० । जोरली, पांडरी, बनभण्टी-म०, मं० भ्रमरोत्ति ठ स्०। प्राकुरु चेट्टु-ते० । इं० मा० । गुणधर्म —उष्णवीर्य, पाचन और संग्राही। चक्र० द० । राज० । यह उष्णवीर्य, रसमें कटु तिक्त, लघु, वातनाशक, ज्वरनाशक, अरोचक, आम व कासनाशक तथा श्वास और हृद्रोग नाशक है । रा० नि० व० ४ ।

अक्राबाज़ीन (Aqrabazin)-اقرابازین अ०, करावादीन । किताबे मुरक्कबात् मुरक्कब-फा० । योग सम्बन्धी ग्रन्थ, योग शास्त्र -हिं० । यह ग्रन्थ जिनमें यौगिक औषधि एवं उसके योग लिखे हों। फार्माकोपिया Pharmacopoeia,डिस्पेन्सेटरी Dispensatory इं० ।

अकराबादीन (Aqrabadin)-اقرابادین अ०, अक्रा बाज़ीन । Pharmacopoeia ।

अकरास(aqras)-اقراص अ०, (ब० व०), कुर्स (ए० व०)-टिकिया, हिं० । टेब्लाइड्स Tabloids

अक्रोसाइन (achrosine)-इं०, अरंजक Not colouring । फा० इं० १ मा० ।

अकला (Akla)-اکلا अ०, खाना, व्याविमुक्त विज्ञान की परिभाषामें उस औषधि को कहते हैं जो अवयवों के मांस या त्वचा को खा जाय अर्थात् उसे नष्ट करदे । कॉरोड Corrode

अक्ल (aaqla)-عقل अ०, (ए० व०) उक्रूल (ब० व०), खिर्द, दानाई-फा० । बुद्धि समझ, बूझ सूझ, मनीषा, धी, विचार, विवेक शक्ति-हिं० । इन्टेलिजेन्स Intelligance-इं० । प्रकृति में यह वह शक्ति अथवा अपार्थिव तत्व है जिससे बुरे भले में विवेक किया जाता है।

अकलाफ(aklaf)-اکلف अ०, स्यामीरङ्, श्यामा भायुक रक्तवर्ण-हिं० । ब्राउनिश रेड Brownish red

अकलफ (aqlaf)-اقلف अ०, वह व्यक्ति जिसका

खवना न हुआ हो। अनसकमसाइज्ड Uncircumcised।

अक्लब (Aqlab) اقلب अ०, जिसके ओष्ठ उलटे हुये हों।

अक्ल व शुर्ब (Akla va-Shurb)-اكل و شرب अ०, खुर्द व नोश-फा०। भक्ष्य पेय अर्थात् खानेपीने के पदार्थ-हिं०। Edible and drinkable।

अक्लह (aqlah)-اقلح अ०, कलह (अर्थात् जिसके दांत मैले हों) का रोगी।

अक्लह (Aklah)-अ०, एक बार खाना।

अक्लाअ (Aklaa)-अ०, अवस्था यानी उमर को पूर्णता तथा अंत तक पहुँचाना।

अक्ला बोतस (Aqlabotas)-यु० अंजुरह फा०। उटङ्गन-हिं०।

नोट—अञ्जरह, उटङ्गन और कजनह प्रभृति शब्द भूल से "केवाँच" के लिये प्रयुक्त होते हैं वस्तुतः केवाँच से ये सर्वथा भिन्न हैं। Blepharis Edulis, Pers.

अक्लारोतस (aqlarotas)-यु०, झाऊ-हिं०। फ़रास, फ़रवा-गरलोई-पं०। Tamarix Gallica, Linn

अक्लिका (Aklika)-सं०, स्त्री०, नील, नीलीवृक्ष। The Indigoplant, (Indigofera tinctoria)। नालीचे-झाड़-मह०। नीली-कं०। नल्लचेट्टु गेदिट चेट्टु, नीलिचेट्टु-ते०। नीली, महानीली भेदसे यह दो प्रकारकी होती है। गुण—यह उष्णवीर्य, रस में तिक्त और कटु तथा केशवर्द्धक, कफ, कास और आमनाशक, लघु तथा वात, विष विकार, उदररोग, गुल्म (वायुगोला) कृमि और ज्वर नाशक है। रा० नि० व-४। रेचक, मोह, भ्रम, आमवात तथा उदावर्त्त का नाश करने वाली है। भा० पू० १ भ०। मद० १ व०।

अक्लिन्न वर्त्म (Akliuna vartma)-सं०, क्ली०, नेत्रवर्त्मज रोग विशेष। जिसमें धोये हुये अथवा बिना धोये हुये पलक परस्पर बार म्बार चिपक जायें और काये पक के पीपसे न चिपकें उसे "अक्लिन्नवर्त्म" नामक रोग कहते हैं। इसी को वाग्भट्ट जी "पिल्लाख्य" नाम से पुकारते हैं। मा० नि०।

अक्लीका (Aklika)-सं०, स्त्री०, नीलीवृक्ष, नीलका पेड़-हिं०। The Indigo plant

अक्लीतकूस Aqlitaqus) } -यू०, कांदा, जंगली पियाज़ हिं०
अक्लीतून (Aqlitun) }
पियाज के सदृश एक प्रकारकी जड़ है। Scilla Indica, Roxb।

अक्लीमियां (Aqlimiya) यु० क़लीमिया, क़लीमिया-अ०। धातुओं का मैल जो उनके पिघलने के बाद ऊपर नीचे झाग और तिल कूट के समान उत्पन्न हो जाता है। कैलेमीन Calamine-इं०।

अक्लीलुल्-जबल (Aklilul jabal)—اكليل الجبل अ०, यह बूटी स्पेन तथा मिश्र देश में उत्पन्न होती है। रास्मैरिनस Rosmarinus-ले०। रोज़मेरी Rosemary-इं०। स०, फा० इं०।

अक्लीलुलमलिक (Aklilul-malik)-अ०, वनमेथी-हिं०। वनमेथिका-सं०। Trifolium Indicum Melilotus Parvi flora,

Deaf-अं० । ६० मे० मे० । मालूमात दि । देखो सहीहुल्मसिक ।

अक्वन (Akvan)-वि०, आक, आख, मदार दि० । Calotropis Gigantea R Br

अक्वम (Akvam) اکوم अ०, सहरका अधोभाग ।

अक्वा (Akva)—हि०, आक, मदारे एक Calotropis Gigantea R. Br

अकवाअ (Akvaa) اکواع अ०, (बं० व०), कूअ کوع (ए० व०), पहुँचे अर्थात् कलाई की हड्डियाँ । Rist bones ।

अक़्वात (Aqvat) اقوات अ०, (ब० व०), क़ूव्वत قوت (ए० व०), भक्ष्यपदार्थ, गिज़ायें, अग्ज़ियह । Edible—इं० ।

अक़िवलेरिया अगेलोका (Aquilaria Agallocha, Roxb)-लै०, अगर, अगुरु । ऊद अगर—अ० । Aegle wood इं० । ई० मे० मे० मेमो० ।

अक़्विलेरिया ओवेटा (Aqivlaria ovata) लै०, अगर । Aegle wood इं० । इं० मे० मे० मे० मो० ।

अक़्विलेरिया मलक्सेन्सिस (Aquilaria Malaccensis, Lamk)-लै०, अगर । Aegle wood । फा० इं० ३ भ० ।

अक़्वेज़ान (Akvézan)-रू०, मटर भेद-कोई २ उसुल हमाम को कहते हैं ।

अक़शाब(Aqshab) اقشاب-अ०, (बं० व०), सम्निपात, ज़हरें, विष । क़िश्ब (ए० व०) (deadly poison) घातक विष' (२) फक्र, मुर्दा, कीट ।

अक़शी (Aqshi)—आसा०, करकाइ-बं० । क गाई-मरा० ।

अक़शुरीयून (Aqshu riyun)-यू०, अप्रसिद्ध औषधि है ।

अकसूस (Aksus) اکسوس-अ०, अकासबेल का बीज । युफ्मे कसूस-फा० । Cuscuta Reflexa (seeds of)

अकशोस (Akshos) الشوش-अ०, कसूस व आकाशबेल-हि० Cuscuta Reflexa ।

अक्सअ (Aksa) اکسع-अ०, वह व्यक्ति जिसके मसूड़े फूले हों ।

अकसम (Aksam) اکسم-अ०, मेदावी मनुष्य, वह व्यक्ति जिसका मेद (तोंद) बड़ा हो । कार्पुलेण्ट Corpulent, फैटी Fatty-इं० ।

अकसह (Aksah) اکسح अ०, अपाहिज, ल्योप जो अपने स्थानसे हिल न सके । क्रिपल Cripple-इं० ।

अकसाब (Aqsab) اقصاب-अ०, (ब० व०)—कुस्ब (ए० व०)-अंतड़ियाँ, आंत-हि० । Intestines ।

अक्सियह (Aksiyah) اکسیه-फा०, पयमय, ऊनी का सारख ।

अक़सिया (Aqsiya)-सुफेद मांज़रियून प्रसिद्ध है । अपराजिता श्वेत । Clitora Ternatea, Linn (White.)

अकासियानूस (Aksiyanus)-यु० जुन्दबेदस्तर, जुन्द-अ० । Castoreum ।

अकसीर (Aksir)-हि०, 'बालछड़' (Nardostachys Jatamansi, D C.)

अक्सीर (Aksir) अ०,

अक्सीरी (Aksiri)-फा०, माहिर किमिया, कीमिया की, कीमियागर । इस्म

शाखी (रस)-हिं० । अलकेमिस्ट Alohe-mist-इं० ।

अक्सीरी बूटी (Aksiri būti)-फ़ा०-प्र सिद्ध ।

अक्सुनाफि (-फ) न (Aksunafin, fan) اكسونافن अ०, हकीमी माप भेद, यह ६ तोला ११ मा० २ रत्ती अथवा ३ तोला ,६ मा० के बराबर होता है ।

अक्सूफैलस (Aksufailas)-यु०, सम्भव कोई एक बूटी है ।

अक्सूमानस (Aksumanas)-यु०, रतन जोत-हिं० । Alkanet ।

अक्सूमाली (Aksumali)-यु०, 'सिकञ्ज बीन'-अ०, हिं०, द० । सिकंञ्जबीं फ़ा० । आ क्सिमेल Oxymel-इं० ।

अकहल (Akhal) اكحل-अ० । स्याहचश्म, सरमगीं आँखवाला । (२) यूनान शास्त्र की परिभाषा में रगे "हफ़्तअन्दाम" को कहते हैं यह रग कुहनी के मध्य में भीतर की ओर स्थित है और क़ीफ़ाल قيفال व बासलीक़ باسليق के मिलाप तथा संयोग द्वारा पैदा होती है । चूँकि इसमें क़ीफ़ाल (Cephalic vein) और बासलीक़ दोनों से शोणित आता है, इस कारण इसके फ़सद [रक्तमोक्षण] से सम्पूर्ण शरीर का रक्त निकलता है । मीडि यन कफ़ेलिक Median cephalic-इं० ।

अकहाल (akhal) اكحال (ब० व०), कहल كحل (ए० व०), अ० । सुर्मा, अञ्जन, नेत्रमें लगाने को शुष्क औषधि । कालीरियम्ज़ Collyriums इं० ।

अखट्टः (Khattah) सं० पु०, चिरौंजी-हिं० । (पियाल वृक्ष) पयाशक्ष, इसके बीज को पेयाल बीज या चारदाना कहते हैं-बं० । चारोली-म० । वा० नि० व० ११ । भा० भाग्रादि० । Buchanania Latifolia, Roxb ।

अखन्न (Akhanna) اخن अ०, गुंगा, गुनगुना, भुनभुना, मुनमुना, मिनमिना नाक से बोलने वाला ।

अखर (Akhar)-सं०, कपास, वाड़ी । Gossypium Indicum लै० ।

अखरोट (Akharota) हिं० व०, अक्रोट-बं०, हिं०, द० । अक्षोट, पीलु, शैलभव और कर्परास सं० । जौज़, جوز जौज़ुलमलिक- جوزالملك अ० । गिर्दगाँ, گردگان चारमग़्ज़, چارمغز चहारमग़्ज़, چهارمغز गौज़ گوز फ़ा० । कासलीस, फ़ादस्याह-यु० । कै ज़-तु० । जुग्लैंज़ Juglans; जु० रेजिया J. Regia, Linn.-लै० । वालनट Walnut-इं० । वालनसबॉम Wallnussbaum-ज० । नोयर कल्टिव Noyer Cultive-फ़्रां० । अक्रोट्टु-ता० । अक्रोडु-तै० । अक्रोड, अक्रोट-कना०, कर्ना० । अक्रोड-म० । अखरोट, अक्रोड-गु० । सिसु-रुपा-सि या तिफ्या-ज़ि-बर० । अक्रोड-कौं० । तक्यकार्ड-मा०दि० । तगशिङ-मूर्टि० । कम्बिङ्ग आ० । कोवल लेप० । काक, अखोर, अखोट, अखरोट-उ० प० प्रा० । अखोर-खरोड, कुमा० । अखोर, खोट, दून-काश० । अखरोट, दून, चारमग्ज, चनवान, खोर, कादारग, अखोरी, खोट, कपोटक, स्टार्गे, ठंगा, वज़, चामक, खाम-हिरादसा- पं० । ठंगा, वज्ज-अफ़०़ ।

अक्षोट वर्ग
(Juglandaceae)

उद्भव स्थान—हिमालय (शीतोष्ण) एवं पूर्वीय एशिया पर्यंत, अफगानिस्तान तथा काश्मीर। इसका एक भेद और है अर्थात् 'जंगली अखरोट' (Aleurites Moluccana, Willd) जो बंगाल और दक्षिणी भारत में बहुतायत से होता है। पीलू (Mustard tree of scripture) जो की कम वृक्ष में उत्पन्न, सल्वाडोर जाति का एक प्रकार का वृक्ष है। इसके लिये उन २ नामों के अन्तर्गत देखिये।

विवरण—यह भारी जाति की वनस्पति है जो पर्वतों में उत्पन्न होती है। इसके वृक्ष बड़े २ ऊंचे होते हैं। इनकी ऊंचाई लगभग ३० से ४० फी० होती है। पत्ते ४ से ८ इं लम्बे अंडाकार नुकीले और बराबर या तीन कंगूरे युक्त एक डंठल के दोनों ओर विषमवर्ती लगे होते हैं। छूने में सख्त और मोटे मालूम होते हैं। पुष्प सफेद रंगके छोटे २ शाखके सिरे पर गुच्छे में कई २ आते हैं। एक ही गुच्छे में स्त्री पुरुष दोनों प्रकारके पुष्प होते हैं। इसमें पुरुष पुष्पों (androecium) की संख्या अत्यधिक होती है। फल दो कोष युक्त सेमफलके समान गोल २ होते हैं। उनके ऊपर तीन छिलका होते हैं, इनमें प्रथम हरा और मोटा (पकने पर अंगूली रंग का हो जाता है) स्वाद में कसैला और कड़ुवाई लियेहुये होता है। यह फल कच्चेपनमें नरम परन्तु सूखकर कठोर हो जाते हैं। द्वितीय छिलका पहिले छिलके के नीचे कठोर होता है। फिर इसके नीचे दो टुकड़े आपस में मिले और सिरा उनका निकला हुआ तथा तीसरे छिलके के नीचे मींगी और ऊपर बहुत बारीक छिलका होता है। मींगी अंडाकार सफेद कुछ चिपटी और चिकनाई लिये गिरी और मिलावों के मींगी के समान होती हैं। इन सबके चार भाग होते हैं। दो २ भाग आपस में मिले, इनके बीच में बहुत बारीक परदा होता है। फलका वृहत्तम व्यास लगभग २॥ इंच होता है।

नोट—उपरोक्त समस्त पर्याय इसी के मींगी अथवा फलके हैं। लेकिन नाम जुग्लेंज रेजिया (Juglans regia) इसके वृक्ष के लिये आया है।

प्रयोगांश—फलत्वक्, त्वचा, बीज (मींगी), फल, और खोपरी (Nut)।

प्रभाव या प्रयोग—पथ, परिवर्तक और संकोचक। इसका क्वाथ (१२ में १) कंठमाला श्वेतप्रदर प्रभृति के लिये लाभजनक है। बीज इसमें तैल, म्युसीन या जुग्लेंडिक एसिड और राल होता है। कृमिनाशन हेतु मुख्यतः कद्दूदाना (Tape worm) को मारने के लिये मृदुरेचन और पित्तनिःसारण हेतु इस तैल का आभ्यन्तरिक और दृष्टिमांद्य हेतु बाह्य प्रयोग किया जाता है।

अक्षफल-कृमिघ्न। पक्वफल या मींगी "अक्षोट कोऽपि वातघ्नस्तद्वत् कफपित्तकृत्" भा० प्र० फ० व०। स्वादिष्ट, मधुर, पुष्टिकर और कामोद्दीपक। फल त्वक् कृमिघ्न, उपदंश नाशक। वृक्षत्वक्-संकोचक, कृमिघ्न और दुग्ध नाशक (Lactifuge), प्रमाथीपक। ई० मे० मे० इ० मे मां०।

रसायनिक संगठन—देखो जंगली अखरोट ।

अखरौट (Akharout)-पं०, अखरोट, अखोट । Walnut-इं० ।

अखरौस (Akhros)-यु०, एक घूटी है जो फ्रांस तथा सर्द इरियाई देशों में उत्पन्न होती है । जंगली गेहूँ ।

अखर्यूस (Akharyus) यु०, पहाड़ी गन्दना ।

अखरसाज (Akharaj)-एक वृक्ष है जो उष्ण देशों में एवं शुष्क स्थानों में उगता है । मनुष्य के कद के बराबर अथवा कुछ अधिक ऊँचा एवं खुरदरा और अंजीर के समान नर्म और कोमल होता है ।

अखलः (Akhalah)-सं० पु० उत्तम वैद्य । वै० निघ० ।

अखाड़ाकाभेद (Akhada-ka-bed)-इं० ।

अखातम् (Akhatam)-सं०, क्ली०, देवखात हिं० । देवखाद-बं० । हैंच० का० ४ । पुष्करिणी । अम० ।

अखाद्य (Akhadya)-हिं०, अभक्ष्य, खाने के अयोग्य । Uneatable ।

अखाव (Akhava)-अर०, (ए० व०) छाल, त्वक, । Bark इं० । सं० फा० इं० ।

अखाव मियाँआँ (Akhav-miyaa) अर०, छाल, त्वक । Barks इं० । सं० फा० इं० ।

अखियारी (Akhiyari)-अ०, वनगुलाब । Wild rose-इं० ।

अखिल (Akhil)-हिं०, सं०, समस्त, सारा, सब । होल Whole इं०

अखिलिका (Akhilika)-सं०, पु०, करैली छोटी, क्षुद्र कारवेल्लि । कक्ड़े-बं० । A Kind of gourd-इं० । Momordica Charantia, Linn ले० । देखो कारवल्ली, करेला ।

अखीतहे जोह्‌रयह (Akhitahe-zoriyah) احيطه زهريه अ०, मगासाते चश्म-फ़ा० चक्षुरोग विशेष जिसमें नेत्र के सामने चिनगारियां अथवा तारे दृष्टिगोचर होते हैं । मस्सी वोलिटेण्टीज (Musce volitantes)

अखीफ (Akhif) احيف अ०, जिसका एक नेत्र श्याम और दूसरा हरित या नीलवर्ण युक्त हो ।

अखीरूस (Akhirus)-यु०, अड़ूसा गेहूँ के अतिरिक्त एक बूटी है जो अन्न के समीप उगती है ।

अखील (Akhil) احيل अ०, अस्थिर, क्षण क्षण में रंग बदलने वाला । (१) गिरगिट, कैमीलिअन Chameleon-इं० । (२) एक ऊर्नी कपड़ा है जो घंटा २ पश्चात् रंग बदलता है, (३) एक प्रकार की पक्षी है जिसके परों में विभिन्न प्रकार के रंग होते हैं ।

अखीलस (Akhilas)-यु०, एक क़ाबिज़ और शुष्क बूटी है । an astringent and dry herb-इं० ।

अखी (लि) लूस (akhilus) احيلوس यु० नानख़ाह अजवाइन-हिं० । Carum (ptychotis) Ajowan, D. C ले । अ० अन्ताश्य चक्षुकोण-शोथ, नेत्रके भीतरी कोयेका शोथ । आब्सट्रक्शन आफ दी पंक्टा Obstruction of the puncta-इं० ।

अखुविषः (Akhu-vishah)-सं०, घिया तोरी, धर्मपेल, देवताली-हिं० । Luffa Echinata, Roxb-ले० । फा-इं० १ भा० ।

अखेटिक (Akhotik)-सं०, वृक्ष विशेष।

अंखेररी (Akherari)-पं०, पचौच, खागी, ढेर।

अखोट (akhot)-गो०, अखरोट। Walnut-इं०।

अखोड (akhod)-गु०, अखरोट। Walnut इं०।

अखोर (akhor)-काश्०, अखरोट। Walnut इं०।

अखोर मोरनु (akhor morann)-कमा०, 'सिहोर' सहाद हिं, बम्ब०। साखोटक-सं०। Streblus asper-ले०। इं० मे० मे०।

अखोरी (akhori)-पं०, कन्टोचा, खाखो, ढेर पं०।

अख (akh) اخ अ०, खेकार, खाँसी का शब्द, वेदना शब्द, खाँसना। कफ Cough-इं०।

अखगोर (akhgor) اخگر फा०, अमरूद भेद। Wild pear-इं०। इं० हैं० गा०।

अखज़ (akhz) اخذ-अ०, गिरफ्त-फ़ा०। लेना, थामना, पकड़ना, आशाव चश्म (आँख आँखों) में गिरफ्तार होना।

अखज़अ(akhzaa) اخزع-अ०, संकुचित ग्रीव, लघुग्रीव, बौना, ठिगना हिं। कूंवार्फ Dwarf, पिग्मी Pigmy-इं०।

अख़ज़र(akhzar) اخضر-अ०, सब्ज़-फ़ा०। हरा, हरी-हिं०, द०। हरित-सं०। हरा, सब्ज़-बं० ग्रीन Green-इं०। हकिम्या [हकीम लोगों] ने इसकी चार कक्षायें स्थिर की हैं, यथा— [१] फ़ुस्तकी या पिस्ती अर्थात् पीताभायुक्त हरितवर्ण, [२] नीलजी अर्थात् नीलगूं, नीलवर्ण(३)ज़ङ्गारी या ज़ेगारी या मटियाला सब्ज़ी-मायल अर्थात् हरिताभायुक्त मटियाला और [४] गन्दने के सदृश हरित वर्ण।

अखजर [akhzar] اخزر-अ०, कनखियों से देखने वाला।

अख़्ज़ुल बर्द [akhzul bard] اخذ البرد-अ०, शीत लगना, शीतल वायु लगना, वायु लगना, प्रतिश्याय। कोल्ड Cold, कैचकोल्ड Catch cold-इं०।

अख़्ज़ुल शम्स [akhzul shams] اخذ الشمس अ०, सिक्तह शम्सियह سکتہ شمسیہ। द्र० लगना आतपाघात हिं०। सन स्ट्रोक Sun stroke, इन्सो लेशनInsolation-इं०।

अख्नस (akhnas) اخنس-चपटी नाक वाला (Snub-nosed)।

अखनियूस (akhniyus)-यु०, पालक Spinacea oleracea या अक्नैनूस।

अक्नैनूस (akhnainus)-यु०, एक अप्रसिद्ध बूटी है जो तर स्थानोत्पन्न। नहरों के किनारों पर उगती है।

अख्फश (akhfash) اخفش अर्थात् चुन्धा [दिवसांध] रात्री। Day blind-इं०

अखफ़ाक (akhfak) اخفاک फ़ा०, बाम्देल, इस्फ़रेवा [लताविशेष]।

अख्बसान (akhbasan) اخبسان अ०, मल्मूत्र अर्थात् गुह्यमूत्र से संकेत है, (पे)मुश्कबूगंधि या ॲमिशा। एक्सक्रीमेंटस Excrements-इं०।

अखम(akhm) اخم-अ०, सफ़ाई और गीं(अ)

रसायनिक संगठन—देखो जंगली अखरोट।

अखरोट (Akharont.)-पं०, अखरोट, अ खोट। Walnut-इं०।

अखरोस (Akhros)-यु०, एक बूटी है जो फ्रांस तथा सर्द दरियाई देशों में उत्पन्न होती है। जंगली गेहूँ।

अखर्यूस (Akharyus) यु०, पहाड़ी गन्दना।

अखरसाज (Akharsaj)-एक वृक्ष है जो उष्ण देशों में एवं शुष्क स्थानों में उगता है। मनुष्य के कद के बराबर अथवा कुछ अधिक ऊँचा एवं खुरदरा और अखरोट के समान नर्म और खोखला होता है।

अखलः (Akhalah)-सं० पु० उत्तम वैद्य। वै० निघं०।

अखाड़ाकाभेद (Akhada-ka-bed)-इं०।

अखातम् (Akhatam)-सं०, क्ली०, देवखात हिं०। देवखात्-बं०। हैं० का० ४। पुष्करिणी। अम०।

अखाद्य (Akhadya)-हिं०, अभक्ष्य, खाने के अयोग्य। Uneatable।

अखाव (Akhava)-फा०, (पं० ब०) छाल, त्वक। Bark इं०। स० फा० इं०।

अखाव मियाआँ (Akhav miyan)-फा०, छाल, त्वक। Barks इं०। स० फा० इं०।

अखियारी (Akhiyari)-पं०, वनगुलाब। Wild rose-इं०।

अखिल (Akhil)-हिं०, सं०,-समस्त, सारा, सब। सोल Whole इं०

अखिलिका (Akhilika)-सं०, पुं०, करेलो छोटी, क्षुद्र कारवेलि। उच्छे-बं०। A Kind of gourd-इं०। Momordica Charantia, Linn ले०। देखो कारवल्ली, करेला।

अखीलाते जाहूयह (Akhilate-zouj yah) اخيلات زجاجيه अ०, खयालाते चश्म-एक चक्षुरोग विशेष जिसमें नेत्र के सामने चिनगारियाँ अथवा तारे दृष्टिगोचर होते हैं। मस्की वोलिटेण्टीस (Muscae volitantes)

अखीफ़ (Akhif) اخيف अ०, जिसका एक नेत्र श्याम और दूसरा हरित या नीलवर्ण युक्त हो।

अखीरूस (Akhirus)-यु०, जंगली गेहूँ के अतिरिक्त एक बूटी है जो जल के समीप उगती है।

अखील (Akhil) اخيل अ०, अस्थिर, हर क्षण में रंग बदलने वाला। (१) गिरगिट, कैमीलिअन Chameleon-इं०। (२) एक कृमि कपड़ा है जो घड़ी २ पश्चात् रंग बदलता है, (३) एक प्रकार की पक्षी है जिसके परों में विभिन्न प्रकार के रंग होते हैं।

अखीलास (Akhilas)-यु०, एक काबिज़ और शुष्क बूटी है। an astringent and dry herb-इं०।

अखी (लि)लूस (akhilus) اخيلوس यु० नानख़ाह अजवाइन-हिं०। Carum (ptychotis) Ajowan, D. C. ले। अ० अन्सदाद चक्षुकोण-शोथ, नेत्रके भीतरी कोयेका शोथ। आबस्ट्रक्शन आफ दी पंक्टा Obstruction of the puncta-इं०।

अखुविषः (Akhu vishah)-सं०, खिम्बीरा, घघरबेल, बँदाली-हिं०। Luffa Echinata, Roxb -ले०। फा-इं० २ भा०।

अखेटिक (Akhetik)-सं०, वृक्ष विशेष।

अखेररी (Akherari)-पं०, दन्तौच, खासी, ढेर।

अखोट (akhot)-फा०, अखरोट। Walnut-इं०।

अखोड (akhod)-यू०, अखरोट। Walnut इं०।

अखोर (akhor)-काश्म०, अखरोट। Walnut इं०।

अखोर-मोरनु (akhor moranu)-कमा०, 'सिहोर' सहार हिं, मस्य०। शाखोटक-सं०। Streblus asper-ले०। इं० मे० मे०।

अखोरी (akhori) पं०, दन्तौचा, खासी, ढेर पं०।

अख (akh) اخ अ०, खेंकार, खांसी का शब्द, वेदना शब्द, खांसना। कफ Cough-इं०।

अखगोर (akhgor) اخگور फा०, अमरूद नेद। Wild pear-इं०। इं० हिं० गा०।

अखज (akhz) اخذ-अ०, गिरफ्त-फा०। लेना, थामना, पकड़ना, आखोज बदस (आंख आंतों) में गिरफ्तार होना।

अखजअ (akhzaa) اخضع-अ०, संकुचित नेत्र, अधुनेत्र, पौना, ठिगना हिं। वृषार्फ Dwarf, पिग्मी Pigmy-इं०।

अखजर(akhzar) اخضر-अ०, सब्ज-फा०। हरा, हरी-हिं०, द०। हरित-सं०। हरा, सबुज-बं० ग्रीन Green-इं०। हतिय्या [हकीम लोगों] मे इसकी चार कहायें स्थिर की हैं, यथा—[१] फुस्तकी या पिस्ती अर्थात् पीताभायुक्त हरितवर्ण, [२] नीलजी अर्थात् नासगूं, नील वर्ण,(३)ज़ंगारी या ज़ंगारी या मरियाला सब्ज़ी-मायल अर्थात् हरिताभायुक्त मटियाला और [४] गन्दने के सदृश हरित वर्ण।

अख्जर [akhzar] اخزر-अ०, कनखियों से देखने वाला।

अख़ज़ुल बर्द [akhzul bard] اخذ البرد-अ०, शीत लगना, शीतल वायु लगना, वायु लगना, प्रतिश्याय। कोल्ड Cold, कैचकोल्ड Catch cold-इं०।

अख़ज़ुल शम्स [akhzul shams] اخذ الشمس अ०, सिकूतह शम्सियह سكتة شمسية। लू लगना आतपाघात हिं०। सन स्ट्रोक Sunstroke, इन्सो लेशन Insolation-इं०।

अख्नस (akhnas) اخنس-चपटी नाक वाला (Snub-nosed)।

अखनियूस (akhniyus)-यू०, पालक Spinacea oleracea या अख्नैनूस।

अख्नैनूस (akhnainus)-यू०, एक अप्रसिद्ध बूटी है जो तर स्थानों व नहरों के किनारों पर लगती है।

अख्फस (akhfash) اخفش अफश्य अर्थात् चुन्धा [दिवसांध] रोगी। Day blind-इं०

अख्फाक (akhfak) اخفاک फा०, आम्बरेल, इश्कपेचा [लताविशेष]।

अखबसान (akhbasan) اخبثان-अ०, मलमूत्र अर्थात् गूहमूत से संकेत है, (२) मुकडुर्गन्धि या कनिका। एक्सक्रीमेण्टस Excrements-इं०।

अखम (akhm) اخم-अ०, लुआर और मी(अ)

को शिकन (अवसाद)। Brown-इं०।

अख़माद (akhmad) اخماد-अ० ताप बुझाना, गर्मी मारना, आग को भी बुझाना, कमज़ोर करना, ताप शमन करना।

अख़रब (akhrab) اخرب-अ०, वीरान मुकाम-उर्०। निर्जन स्थान-हिं०। तिब्बकी परिभाषा में, कनकटा को कहते हैं अर्थात् वह व्यक्ति जिसका कान कटा हो।

अख़रम (akhram) اخرم-अ०, आहदे अख़-रमियह (اعدہ اخرمیہ) नुक्ता, छेदन या इसकी परिभाषा में नुक्ता उभार, कन्धास्थि का वह उभार जो कन्धे का ऊंचाई बनाता है, अंसकूट। एक्रोमिअल प्रॉसेस (acromion Process)-इं०।

अख़रस (akhras) اخرس-अ० गूंग, गुंग, गूगा। डम्ब [Dumb] इं०।

अख़रास (akhras)-यु०, नाशपाती, अमृतफल। Pyrus Communis-ले०।

अख़रीज़ हब्बुल अस्फर (akhri habb ul asfar) اخریج حبوب اصفر अ०, कुसुम। कड़। Carthamus Tinctorius, Linn-ले०।

अख़रीत(akhrit] अ०, اخریط जंगली गन्दना।

अख़रीतूस [akhritus]-यु० जंगली करमकल्ला, गोभी भेद। Wild cabbage-इं०।

अख़लह [akhlah] एक कण्टकयुक्त बूटी है जो यासमीन के बराबर होती है। पुष्प नीले एवं श्वेत और पत्ते कठोर होते हैं।

अख़लात [akhlat]-अ०, اخلاط [ब० व०], ख़िल्त[ए० व०], خلط यूनानी वैद्यकके मतानुसार खिल्त [धातु] चार हैं, यथा—सौदा [वात, सफ़रा[पित्त], बलग़म [कफ, श्लेष्मा] और ख़ून [रक्त]। शारीरिक द्रव [तरी] धातु (अ) शरीर की वह चारों रतूबतें [द्रवे, स्निग्धता) जो ग़िज़ाके प्रथम परिवर्तन द्वारा उत्पन्न होती हैं। ह्यूमर्स Humours-इं०।

अख़लीलुल मलिक [akhlilul malik]-अ०, राजपादशाही।

अख़शम [akhsham] اخشم अ०, घ्राण नाश प्राणज रोगी। वह रोगी जिसकी घ्राणशक्ति नष्ट हो गई हो अर्थात् जो वस्तुओं की गन्ध को न मालूम कर सके। अनास्मैटिक [ano smatic]-इं०।

अख़सह (akhsah) اخثہ-अ०, गोबर, गू। डङ्ग Dung, फीसेज़ Fæces-इं०।

अख़सामुलऐन (akhsamulain) अ०, احماء العين पलकों के किनारों के मिलने का स्थान।

अख़सीनह (akhsinah) अङ्गली राई। Brassica Juncea (Wild)-ले०।

अगः(agah)-सं०, पु०, पहाड़, पर्वत,-हिं० माउण्टेनMountain। पहाड़ आग्नेय व सौम्य गुण भेदसे दो प्रकारके होते हैं। इनमें विन्ध्य पर्वत आग्नेय गुणयुक्त और हिमालय सौम्य गुणयुक्त है। आग्नेय गुण विशिष्ट पहाड़ों में होने वाली ओषधियां अग्निगुण विशिष्ट होती है और सोमगुण विशिष्ट पर्वतों में होने वाली औषधें सोमगुण बाहुल्य होती हैं। मा० वृक्ष, सर्प, सूर्य्य। Tree, Serpent, Sun-इं०। है० च०।

अगजः (agajah), सं०, पु०, आर्द्रपत्तिया, मै पाती पत्तियाँ-हि० । तुम्बुरु, आर्द्रधान्य-सं० । कौंवाधने-सं० । Excoaria agallocha (seeds of) वंग्ला, मारुद्रूश, परगाछ-बं० । वै० श०।

नोट—तुम्बुरु तेजबल वृक्ष का बीज है।

अगजन (agajan)-पं०, अपानी बूटी।

अगजम [agajam]-सं०, क्लीं०, शिलाजतु, शिलाजीत। Bitumon। र० मा०।

अगस्ति (Agatti) ता०, गु०, मरा०, हि०, अगती (Agati) Agati Grandiflora 'अगस्तिया' अगस्त (स्य) वृक्ष।

अगतिहुन (Agatihun)-सं०, एक दवा है जो मय जड़ और पत्तों के ज्वर में दी जाती है। मु० आ०।

अगथिया (Agathiya)-हि० अगथियो (Agathiyo)-गु० अगस्तिया, अगस्त वृक्ष, हथिया हि०। Agati Grandiflora,

अगदः (Agadah)-सं०, पुं०, (१) रोग (disease), (२) औषधि (a medicament) रा० नि० व० २० चा० सू० ३५ अ० (३) दद्रुघ्न वृक्ष, 'चकवड़' हि० (Ringworm Shrub)। चक्रमर्द-सं०।

(४)-त्रि०, रोगमुक्त, आरोग्य, निरोग, सुस्थ (healthy) रा० नि० व० २०।

अगदम् (Agadam)-सं०, क्लीं०, (१) आरोग्य, स्वस्थ, निरोग (health, healthy) (२) प्रतिविष, विषघ्न औषधि-हि०। फादेज़हर (فادزهر) फा०। 'तिर्याक़' (تریاق)-अ०। एण्टिडोट Antidote इं०।

अगदंकारः, ङ्कारः (Agadankarah, ...ntah)-सं० पुं०, वैद्य, चिकित्सक। A physician। रा० नि० व० २०।

अगदतन्त्रम् (Agad tantram)-सं० क्ली० विष चिकित्सा विषयक तन्त्र, निर्विष रूपाय व जङ्गम विष चिकित्सा, विष तन्त्र (इल्म इल्मुस्सुमियात् (علم السميات), इल्मुस्सुमूम (علم السموم)-अ०। टॉक्सिकोलॉजी Toxicology इं०) यह शल्य आदि अष्टविध तन्त्रान्तर्गत वैद्यक का एक अंग विशेष है। सु० सू० १ अ०।

यह शास्त्र जिसमें विषों के वर्गीकरण, उनके मनुष्य शरीरावयवों पर होने वाले प्रभाव एवं लक्षण तथा उपचार और चिकित्सा का वर्णन प्रभृति का पूर्ण विवेचन किया जाये।

अगदनस्यम् (Agad nasyam)-सं०, क्लीं०, सर्पदष्ट प्रभृति विषयक नस्य विशेष, विषघ्न नस्य। Sternutatory used in snake poisoning। सु० कल्प।

अगदाञ्जनम् (Agadanjanam)-सं०, क्लीं०, विष द्वारा मूर्च्छित हुये प्रभृति का अंजन, विषघ्न अंजन। Collyrium used as antidote to poison। सु० कल्प।

अगन (Aghan) اغن अ०, मिनमिना, वह व्यक्ति जो नाक में बात करे अर्थात् नाक से बोले।

अगन चस्मा-चोका (Agan Chasmanoka) आतशी शीशा, सूर्यकान्तमणि, अग्निगर्भ। The sun-stone।

अगनस (Aghanas)-पंज० 'इज्जा'० नौसादर, नुसार-हि०। Ammonii Chloridum।

अगना (Agana)-उ० प० सू०, धामन।

अगनाद (Aganad)-म०, आकनादि, वनतिक्तिका-सं०। Stephania hernandifolia, wall, Wight फा० इं०, १ भा०।

अगनिन (Agnin)-इं०, जलीय ऊर्णवसा। Adeps Lanae Hydrosus, (इं० मे० मे०)

अगनीयूस (Aghaniyus)-सिरि०, 'किर्मिज़ मसूर के दाना के बराबर रक्तवर्ण का एक जानवर है Cochineal.

अगनीस (Aghanis)-यु०, संभालु, निर्गुण्डी हिं०। Vitex negundo

अगन्धिकम् (Agandhikam) सं० क्लीं० सौवर्चल लवण, सोंचर लवण-हिं०। सञ्चल लवण बं०। Sochal salt। भा०, मद०, देखो-सौवर्चलम्।

अगबर (Aghbar) اغبر अगबार اغبار-अ० गुब्बार (गर्द) आलूद, गुब्बारी, खाकी रंग, मटियाला-उ०। धूलिपूर्ण, धूसर वर्ण, मटमैला हिं० डर्टी Dirty-इं०।

अगम (Agham) اغم अ०, जिसके ललाट और गुद्दी पर अधिक रोम हों।

अगमकी (Agamaki)-हिं०, 'अहिलेखन' (सांप के समान चित्रित), घण्टाली (घुंघरू की तरह चित्रित)-सं० Mukia Scabrella Arr (Bristly Bryony)। फा० इं० १ भा०। इं० हैं० गा०।

अगया (Agaya) } हिं०, (१) रोहिषतृण, गंध
अगयाघास(Agaya-ghas) }
तृण, गंधेज। Andropogon Schoenanthus, linn। फा० इं० ३ भा०, इं० मे० मे०।

देखो अगिया। २-जलधनियाँ, देवकाडर-हिं०। स्वरूप हरा। स्वाद कड़ुआ और तीखा। परिणाम, प्रसिद्ध बूटी है। रासायनी लोग इसको ढूंढने में बहुत रहते हैं, प्रकृति तीसरी कक्षा में गरम और दूसरी कक्षा में रूक्ष है, हानिकर्ता त्वचा को और खुजली उत्पन्न करता है। दर्पनाशक मुर्दासंग और गाय का घी। मात्रा २ रत्ती। गुण, कर्म, प्रयोग, (१) यदि इसके स्वरस में चालीस दिन गंधक भिगोकर धूप में रक्खें फिर उस गंधक को २ रत्ती पान में रखकर खावें तो अत्यन्त क्षुधा लगती है, (२) अति कामोद्दीपन कर्ता, (३) यदि बंग को इसके स्वरस में भस्म करे तो श्वास कास को अत्यन्त शुद्ध करती है और किसी प्रकार का अवगुण नहीं करती (निर्विषैल)। मु० मु०।

अगर (Agar) हिं०, कालोअगर, अगरसार। अगुरु, वंशिका, राजार्ह, लोह, कृमिज, क्रिमिज जोङ्गक (अ०) अनार्य्यक (टी०) वंशक द्रा० लघु, पिच्छिल (के०) भृङ्गज, कृष्ण, लोहाख्य अर्थात् लोहे के सम्पूर्ण नाम (र०), दाह, वर्णप्रसादन, अनार्य्यक, असार, अतिकाष्ठ, क्रिमिजग्ध, और काष्ठक, लोह, प्रवर, योगज पाचक, सं। अगर, अगुरुचन्दन, अगु बं०। ऊद (عود) ऊदुल्बखूर (عودالبخور) ऊद गर्क़ी (عودغرقی) अगरे हिन्दी (اغلوجی) अ०, फा०। एक्किलरिया एगेलोचा Aquilaria Agallocha, Roxb, ए० मलक्सिस A. Malaccensis, Lamp ए० ओवेटा A, Obata से०। एलोवुड Aloewood ईगल Eagle wood इं०। बायस डी कैलम्ब Bois de Calambac फ्रां०। अगर,

अगरीचन्दनम्, ता० । दरुगुदयेट्टु ते० । कृष्णागरु, अगरु, ता० ते० कना० । कृष्णागरु शिशवांचे काष्ठ म० । अगरु, गु० । अकयन, बर० । आकिल-मलाया । हागलगंध, हु० । चिन-शिंगचौम । गरु, चर्यागहरु, मला० । सासी, आसा० ।

थाइमलेसीई वर्ग (N O Thymelaeceae)

उत्पत्तिस्थान—आसाम पूर्वीहिमालय, पश्चिमी मलय पर्वत, खसिया पर्वत, भूटान, सिलहट, टिपेरा पहाड़ी, मर्तबान पहाड़ी, बंगाल प्रांत दक्षिण मायद्वीप, मलक्का और मलायाद्वीप ।

इतिहास—अगर का सुगन्धि तथा औषध तुल्य उपयोग आजका नहीं वरन् अत्यन्त प्राचीन है । इसकी प्राचीनता का पता तो केवल एक इसी बात से लग सकता है कि इसका वर्णन सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथों सुश्रुत, चरक, आदि में आया है । इतना ही नहीं, बल्कि लोबान और तेजपात प्रभृति के साथ अहलाद तथा अहलौम नाम से इसका ज़िकर यहूदी धर्म ग्रन्थों में भी पाया जाता है (साम ४५-८ कहा ७-१७) । डीसकूरीडूस (Dioscorides) के कथनानुसार यह भारत वर्ष एवं अरब से यूरूप में लाया गया । ईटियस (Aetius) काल से पश्चात् कालीन लेखकों ने एलोवुड (Aloe wood) नाम से इस औषधि का उल्लेख किया है और इसी नाम से यह अब तक यूरूप में प्रसिद्ध है । अगर का संस्कृत नाम अनार्य्यज या अनार्य्यक है । अस्तु, विलियम डाइमाक महोदय का निश्चय है कि भारतीयों से प्रथम कदाचित् पूर्वी एशिया के मूलनिवासियों को इसके उपयोग का ज्ञान हुआ । प्राचीन समय में खुश्की के राह यह मध्य एशिया और फारस में लाया गया और वहां से अरब और यूरूप पहुँचा । राजनिघंटुकार ने कृष्णागुरु (कालाअगर) काष्ठागुरु (पीली अगर) दाह काष्ठम्, मङ्गल (गु) रु (गुजरदेश प्रसिद्ध अगर विशेष) तथा स्वादुगुरु (मधुर स्वादगुरु) नाम से इसे पांच प्रकार का लिखा है (विस्तृत विवरण के लिये इन नामों के अन्तर्गत देखिये ।

ऐसा विदित होता है कि अरब यात्रियों ने इसके व्यापार एवं उत्पत्ति स्थान के सम्बन्ध में काफी समाचार संग्रह किया है ।

योहन्ना-बिन—सेरापियन ने हिंदी मंडली सिम्फी और कमारी नाम से इसके चार भेदों का वर्णन किया है । इयवो अशाभिद में इब्न सीना इसके सम्बन्ध में निम्न विवरण देते हैं मंडली हिंदी या (पहाड़ी) समंदूरी, कमारी, सम्फी और काकुली, किस्मूरीये दामों मृदुल मधुर होती हैं । इनमेंसे सबसे उत्तम प्रकार हुआई, कम्ताई, मन्ताई लवणी या रक्तायी है । मंडलीसर्वोत्तम है, इसकेबाद समंदूरी धूसरवर्ण युक्त, वसायम एवं तैलीय, भारी श्वेतधारियों से रहित और धीरे २ जलने वाली होती है । कोई २ भूरे से काला अगर को उत्तम स्थान देते हैं और सबसे अधिकतर काली, श्वेत धारा रहित वसायम तथा तैलीय और धीरे धीरे जलनेवाली "कमारी" होती है । संसार में सर्वोत्तम अगर वह है जो काली, भारी, जल में डूबनेवाली, चूर्ण करने पर रेखा रहित होवे,

तथा जो जलमें न डूबे यह अच्छी नहीं । अरब वाली भी अगर को लगभग इन्हीं नामों से पुकारते हैं ।

हाजी जैनुल अत्तार (१३६८) इसे ऊदुल बूज कहते हैं और इसका फारसी नाम यूल ब्लूज बतलाते हैं ।

मीर मुहम्मद हुसेन (१७७०) लिखते हैं । ऊद जिसे हिन्दी में अगर कहते हैं, यह एक वृक्ष की लकड़ी है जो कि सिलहट के निकट खसिया की पहाड़ियों में उत्पन्न होता है । ये वृक्ष बंगाल में दक्षिणस्थ टापुओं में जो जो कि विषुवत् रेखा के उत्तर में स्थित हैं, पाये जाते हैं । इसके वृक्ष बहुत ऊंचे होते हैं, और प्रकाण्ड एवं शाखायें वक्र होती हैं और काष्ट मृदु होता है । इसकी लकड़ी से घड़ी प्याले तथा अन्य वर्तन बनाते हैं । यह सड़ता गलता भी है और इस दशा में विकृत भाग सुगंध युक्त द्रव्य से व्याप्त हो जाता है । अत उक्त परिवर्तन लाने के लिये इसे नम पृथिवी गर्भ में गाड़ देते हैं । अगर के जिस भाग में उक्त परिवर्तन आ जाता है वह तैलयुक्त भारी एवं काला हो जाता है । पुनः इसे काटकर पृथक कर जल में डाल देते हैं । इनमें जो जल में डूब जाता है उसे गर्की (डूबने वाला) जो आंशिक जल मग्न होता है उसे नीमगर्की (आधा डूबने वाला) या समालहे-आला, और जो तैरता रहता है उसे समालह कहते हैं । इनमें से अन्तिम सर्व सामान्य होता है गर्की काला होता है तथा अन्य काले और हल्के धूसर वर्ण के होते हैं ।

औषध कार्य के लिये ऊदे गर्की जो सिलहट से प्राप्त होता है सर्वोत्तम होता है । इसे तिक्त सुगंध मय तैलीय तथा किञ्चित् कसैला होना चाहिये, इससे भिन्न भिन्न कोटि के क्वाथ किये जाते हैं । चूंकि ऊदकी लकड़ी को कुचल कर जल में भिगोकर अथवा इसे बादाम के साथ मिला के पुनः कुचल दबाकर इसका तैल निकाल लेते हैं, इसलिये दोनों में प्रायः ऊदे खाम (कच्चा ऊद) ही लिखा जाता है । और क्योंकि "चूरा अगर नाम से अगर के टुकड़े भारतीय व्यापारिक द्रव्य हैं । अस्तु इसमें चन्दन, तगर, अथवा एक सुगन्धित काष्ठ के टुकड़े मिला दिये जाते हैं ।

राक्सबर्ग तथा अन्य वनस्पतिशास्त्रियों ने सिलहट में अकिलेरिया (aqwilaria) अर्थात् अगर की परीक्षा की और हालही में यह निश्चय किया गया कि यह मर्गुई आर्चिप लेगो द्वीपों में उत्पन्न होने वाले एक वृक्ष की लकड़ी है । गेम्बल Gamblo के कथनानुसार इसका बर्मी नाम 'अक्याघु" हैं और यह टेनासरम तथा मर्गुई आर्चिपलेगो में उत्पन्न होता है ।

अगर (aloowood) धूप देने के लिये अथवा सुगंध हेतु समस्त पूर्वीय देशों में व्यव हृत है और पूर्वकाल में यह यूरूप में उन्हीं व्याधियों के लिये व्यवहारमें आता था जिनके लिये आजभी यह भारतवर्ष में प्रयुक्त होता है

वानस्पतिक विवरण—अगर के बेडौल टुकड़े होते हैं जो उनमें रालके परिमाणानुसार धूसर या गहरे धूसर वर्ण आदि विभिन्न रंग के होते हैं, इनके [illegible] दोनों रंगों के [illegible]

[illegible] के नसों है

मिश्रित होते हैं, ये जलमें डालने से जलमग्न हो जाते हैं। इसे चबानेसे ये दांतों में चिपक जाते हैं तथा मृदु प्रतीत होते हैं। स्वाद तिक्त तथा सुगंधयुक्त। जलाने से इसमें से भाग्य गंध।

प्रयोगांश—काष्ट।

रसायनिक संगठन—एक उड़नशील तैल, जो ईथर में लयशील होता है, राल जो मद्यसार (अलकुहाल) में घुलनशील तथा ईथर में अघुल होता है।

औषध निर्माण—क्वाथ (१० में १) मात्रा—४ से १२ ड्राम, चूर्ण तथा कल्क, अनेक औषधियों से युक्त पाक आदि मात्रा-१० से ३० रत्ती।

गुणधर्म आयुर्वेदीयमतानुसार—अगर शीत प्रशमन और कासघ्न है। च०।

अगर वात, कफहर, वर्णप्रसादक, (देह का रंग सुधारनेवाली) सुगंधी लायक और कुष्ठ नाशक है। अगरकी लकड़ी को जल में औटा कर उस पानीके पीने से ज्वर में लगने वाली तृषा न्यून होती है और यह मृगी एवं उन्माद आदि रोगों में परमोपयोगी है। सु०।

अगर तिक्त, उष्ण, चरपरी, लेप करनेसे रूक्षता उत्पन्न करनेवाली, त्वचा को हितकर, तीक्ष्ण, पित्तकारक और हलकी है। तथा व्रण कफवात, वमन, मुखरोग एवं चक्षु और कर्ण रोग नाश करने वाला है। भा० नि० भ० १९। शा० नि० ७ अ०।

जो अगर काले रंग का होता है उसे कृष्णा गुरु कहते हैं। यह अधिक गुण वाला और लोहे के सदृश है। अगरसे समाये हुये तैल में जो काले अगर के सदृश ही गुण हैं। भा० प्र० पू० ।

कृष्णागर गंधि, गरम, तिक्त, कटु, स्निग्ध, मंगलदायक, रुचिकारी, धूप के योग्य, पित्त जनक, तीक्ष्ण है तथा वात, कफ,कर्णरोग और कोढ़ का नाश करता है। लेप में और लगाने में श्रेष्ठ है। नि० र०।

यूनानी मत के अनुसार-प्रकृति दूसरी कक्षा में गरम और तीसरी कक्षा में रूक्ष है। किसी २ के मतानुसार दूसरी कक्षा में गरम व रूक्ष है हानिकर्ता-उष्ण प्रकृति को इसका पीना और धूनी देना। दर्पघ्न गुलाब, कपूर, सिकंजबीन। प्रतिनिधि-दालचीनी, लौंग, केशर, चन्दन, बालछड़, रूमीमस्तगी। गुण, कर्म, प्रयोग (१) हलकी, अपनी सुगंधि एवं प्रकृत्योष्मा प्राण वायु को बलप्रद होनेके कारण आमाशय यकृत, हृदय तथा इंद्रियों को बल देती है और इसी कारण मस्तिष्क के लिये अत्यन्त लाभदायी है, (२) अपनी सूक्ष्मता एवं उष्मा से रोधउद्घाटक है, [३] इसका चबाना मुख को सुगंधि प्रदान करता है और [४] वायु लयकारक है। मफ़ो० [५] हृदयको प्रसन्न करता, [६] पाव [illegible] को बलप्रद [७] [illegible] [८] मूत्रलेप [illegible] [

अनेकन ही फलदायक, वायुनि सारक तथा उत्तेजक औषधियों का यह एक अवयव है। निक़रस (Gout) तथा संधिवात एवं वमन निग्रह हेतु भी इसका उपयोग होता है। अथ चिकित्सा सम्बन्धी व्रण एवं घावों की वेदना शमनार्थ इसको अंगमर्दनप्रमाथ धूनी रूप से उपयोग में लाते हैं। बालकों की खांसी में अगर तथा ईश्वरी (Indian birthwort) के फलक मालती के साथ पस स्थल पर लगाते हैं। और शिरःशूल में इसे सिर में लगाते हैं। धूप बत्तियों के बनाने में भी यह प्रयुक्त होता है और इसे अगर की बत्ती कहते हैं।

अयारस रूप में भी यह पड़ता है (अस्तु देखो वहाँ) इसकी मात्रा १० से ३० रत्ती तक है। गुप्त-गुप्त सम्बन्धी निर्बलता, सिर में चक्कर आना तथा श्वेतप्रदर में यह भारी फलदायक औषध है। ई० मे० मे०।

अगर (Agar) ﺍﺟﺮ फा०, सुरीन, चूतड़-उ०। नितंब-हिं० | Hip ।

अगर-अगर (Agar-agar) ई०, लंका०, चीनी घास। (Gelidium cartila ginoum or G Cornoum) ई० मे० मे०।

अगरता (Agharata)-पर य० छोटी झाई का वृक्ष (फ़राशवृक्ष) Tamarix gallaca, Linn।

अगर तेलियह (Agar-teliyah)-हिं० ,अग़र गर्की (ﻣﻮﺭﻭﻗﻰ) अर्थात् पानी में डूब जाने वाली 'अगर' या जो तैलीय एवं श्यामवर्ण की तथा उपरोक्त गुणवाली अर्थात् डूब जाने वाली हो। Aquilaria Malaccensis, Lamk।

अगरधत्ता (Agardhatta) स० पुं०
अगरधाक (Agardhak) } गूमा

द्रोणपुष्पी, । Lcuoas Cophalotes फल० ई० मे मा०।

अगरलयूस (Aghar larus) यू०, इन्द्रायन का फल हिं०। Citrullus colocynthis, Sohrad (Fruit of Colocynth) ।

अगरस (Agharas) यू०, वृक्ष विशेष, इसके गोंद को कहरुबा कहते हैं। Succinum Amber [tree of]

अगरसत (Agar sat) हिं०। 'अगर'। Aquilaria agallocha।

अगरस्त (Agharas tas)यू० वेद, गयाह। एक गांठदार वृक्ष अथवा घास।

अगर सोमिनह् (Agar sominah) अर य०, 'गाफ़िस' ﻏﺎﻓﺚ के नाम से प्रसिद्ध है।

अगरा-री (Agara ri) सं० स्त्री० 'देवताली' देवदाली हिं०। a kind of grass, Dootar फा० टी० म०। [२] पीत 'देवदाली'। मा० पा० नि० च० ३।

अगारिया [aghariya] यू०, मिट्टी का नाम है। a knid of earth।

अगरियूस [aghariyus]-यू०, [१] 'गाजर' Daucus carota (carrot)। [२ 'विमाल' Luffa Echinata।

अगरी [agari]-सं० स्त्री०, देवताड़ वृक्ष। ई० गां०। द०, 'अपामार्ग' हिं०। achyranthes aspera ई० मे० मे०।

अगरु [agaru]-सं० क्लीo, 'काली अगर, अगुर चंदन, कृष्णागुरु हिं० । अगराइ-चंदन बं० । aloe wood (the black variety) फा० इ० २० भ० । देखो—अगुरु ।

अगरु गंध काष्ट (agaru gandh kashtha) सं० क्लीo, 'रक्तचंदन' Pterocarpus santalinus, Linn (wood of—Redsandal -wood) सं० फा० इं० ।

अगरु गोलीतूस (agharu ghoulitus) यू०, 'बोल' हिं०, फा० इं०, म० । गंध रस सं० । मुर, अ० । Myrrha ।

अग़रूस [agharus]-यू०, खरहा, खरगोश हियर Hare, रैबिट Rabbit-इं०

अगरुसारः (agaru-sarah)-सं०, पु०, कालीअगर, कृष्णागुरु । काला अगुरु-बं० । aloe wood [the black variety]

अगरेतुर्की (agare turki)-फ़ा०,'बच' हिं० । वज ( ) बच ( )अ० acorus calamus, Linn (Root of-sweet flag) नोट—बहुधा समस्त वर्णानुसार अंगरेजी कोषों में बच (Sweet flag) को पुष्करमूल (Orris root) के साथ मिलाकर भ्रम कारक बना दिया गया है। अतिरिक्त इसके अरबी शब्द वज या वज्ज रिचार्डसन (Richardson) शेक्सपियर [Shakespear] और फोर्बीज [Forbes] प्रभृति कोषों में प्रमादवश पुलिंजान [Gallangal] के लिये प्रयोग किया गया है। अतीस प्रकरण स्थगत फारसी नाम "चर्ज तुर्की" के संबंध का नोट को देखिये । सं० फा०, इं० ।

अगल [agal]-ता०, चिकरस्सी-बं० । चीगापोमा, आसा० ।

अग़लसोलीस [aghal solis]-यू०, एक वृक्ष है जिससे कमाक ( ) नामक गोंद निकलता है ।

अगलाकोष्ट (agala koshta) सं० (anterior chamber)

अगलागल (agalagal) हिं०, कचौरा, किंगली ।

अग़लान अश्शी (aghalan ashi) यू०, जुंद बेदस्तर । Castaoreum ।

अगलाय (agalaya) ता०, चिकरस्सी बं० । चीगापोमा-आसा० ।

अगलीक़न (aghaliqan) यू०, गैफ़ूस्तज दोशाब के नाम से प्रसिद्ध है ।

अगलीक़श (aghaliqash)यू०, दोसर (एक बूटी है जिसके पत्ते गेहूँ के पत्तों के समान होते हैं और उसके फल पर दो तीन पर्दे होते हैं और ऊपर से घास के समान दीखता होता है) ।

अगलीक़ो (aghaliqo) यू०, मूली का तेल, (२) गैफ़ूस्तज ।

अगलीतूस (aghaalitus) यू०, फ़ासरा । शिवलिंगी हिं० । Bryonia ।

अगलैया एड्यूलिस (aglaia edulis, a Gary) ले० । लतेमदपा-नेपा० । सिंगब्रंग लेप० । सुमी_गारा की पहाड़ी तथा सिलहट में पाते हैं । इसका फल खाने के काम में आता है । मे मा० ।

अगलेयाकुमायू (aglaia kumayun) ले० गिरवन, गिरक्टूक, कांमक पं० ।

अगलेया पॉलिस्टेक्या कीन (aglaiaPol yatsohya-ohino Dr wall) ले० । थांदूरपाला । इं० हि० सा० ।

अगलेया रॉग्ज बर्घान (aglaia Rox Burghiana,Miq) ले० । प्रियंगू सं० हि०, ब० । इसका फल ओषधि काम में आता है मेमो० । फा० इं० १ भा० ।

अगवन्त (agavant) सं० अरनी । Prem na Integri folia ।

अगवर (aghavar) पु०, खीस, प्यूसी, पीयूष The milk of a cow during the first seven days after calving ।

अगवोसी (agavose) इं०, यह एक प्रकार का निष्क्रिय शर्करा है जो राकसपता (agave americana) नामक वृक्ष के डंठल के रससे पृथक किया जाता है । इं० मे० मे० ।

अगशि (agashi) कना०, अगस्त वृक्ष, अगस्तिया । agatigrandiflora. फा० इं० १ भा० ।

अगसतामरेरय (agasa tamre-raya) ता० जलकुम्भी, हि० । कुम्भिका सं० । Pistia Stratiotes, Linn इं० मे० मे०, फा० इं० ३ भा० ।

अगसाक (aghasaq)-[illegible] अ०, कुलाग स्याह (खेत का कौआ), Blackcrow.

अगसीगिदा (agasi-gida,) कना०, चकवड़ हि० । चक्रमर्द सं० दादमर्दन द० Cassia alata Ringworm shrub इं० मे० मे० ।

अगसेयमरनु (agaseya maranu) क अगस्त, अगस्तिया, agati grandiflora

अगस्त (agasta) हि०, } अगस्ति Sesbania Grandiflora Pers
अगस्ति (agasti) सं० पु० }

अगस्तिकुसुमः (agasti kusumah) सं० पु

अगस्तिद्रुः, मः (agasti-druh, druma) सं० पु० शि

अगस्तिया (agastiya) हि०, अगस्त, वस्त, चासमा, हथिया ।

पर्याय—अथागस्त्योवंगसेनोमुनिपुष्पोमुनि अगस्त्यः, वङ्गसेनः, मुनिपुष्पः, मुनिद्रुमः, वर्णी, पाशुपतः, एकाष्ठीलः, वृकः, वंगुकः, वसुकः, वसूकः, वकपुष्पः, शिवप्रिय शिवमल्ली, काकनामा, काकशीर्षः, स्थूलपुष्पः, सुपुष्पकः, रक्तपुष्पः, मुनितरुः, अगस्त्यः, व सेनः, शीघ्रपुष्पः, व्रणारि, व्रणापहः, दी फलकः, वक्रपुष्पः, सुरप्रियः, शिवापीडः, व्रतः, शिवाह्वः, शिवेष्टः, शिवाह्वयः, ग्राम्य क्रमपूरकः रविप्रियः, शुक्रपुष्पः, कल्प वारुणसी और पवित्र सं० । बक [बो] बा कुकेर-गाछ बं० । अगस्त म० फा० बं० सिस्बेनिया ग्रांडिफ्लोरा Sesbania Grandiflora.

Pers , अगेटि ग्रांडिफ्लोरा agati Grandiflora , Linn

इस्कीनॉमेनी ग्रां० aesohynom ene Linn ले० ।

लार्ज फ्लावर्ड एगेटी Largeflower agati इं० ।

अकत्ति, अगती, अगाति, अगति, ता०

आनिसे, मविसि, बस्यविसे चेड्, मे०। म.पि, मल० । अगशी [सी] बमा०। हदगा, अगस्ता, मैद०। अगथियो गु०। अगसेयमलु का०। अगासेल पाय०। वगफल, पुष्प० प०।

पग्युमिनासी [शिम्बी] वर्ग [N. O Leguminosae

उत्पत्तिस्थान—दक्षिणी तथा पश्चिमी भारत बंग, गंगा की घाटी और बंगदेश।

वानस्पतिक विवरण—अगस्तिये का मूल निवास स्थान पूर्वीद्वीप समुदाय है, पर अब यह समस्त भारतवर्ष में विशेषकर पुष्पोद्यानों में अधिक होता है। इसकी अवस्था बहुत थोड़ी होती है। यह थोड़े वर्षों में ही लगभग ३० फीट की ऊँचाई तक पहुँचकर पुनः मृत प्राय हो जाता है। पत्ते बबूलके समान किन्तु इससे बड़े एक डंठल की दोनों ओर २१-२१ अथवा इससे न्यूनाधिक संख्या में लगे होते हैं। ये १-१॥ इ० लम्बे और अंडाकार, स्वाद में कुछ अम्ल और कसैले होते हैं। पुष्प बाह्य कोष [Calyx] घंटाकार, द्विओष्ठीय और हरितवर्ण का होता है, पुष्प, तितलीरूप श्वेत या रक्तवर्णीय (आयुर्वेद में नील और श्याम दो अधिक लिखे हैं (३॥-२ इं० लम्बा, वक्र तथा गूदा दार होता है। पुष्पाभ्यन्तर कोष [Corolla] में चार पंखड़ियाँ होती हैं, जिनमें से ऊपर ध्वजा [Standard] और दोनों बगल १-१ पक्ष (wing) तथा नीचे तरणिका [keel] होती है। तरणिका [keel] के भीतर, परागकेशर [१०] तथा स्त्रीकेशर [१] ढके होते हैं। प्रतीक गुच्छा में २ या ४ पुष्प कक्षस्थ डंठल में लगे होते हैं। इसका स्वाद कुछ खारी तथा तिक्त होता है। फली लटकनेवाली १-१॥ फीट कम लगभग लम्बी पृष्ठ चिपटी तथा बीजों के मध्य में दबी होती है। प्रत्येक फली में लगभग ४०-४१ बीज होते हैं। वृक्ष त्वचा लम्बाई पर कुछ चिड़चिड़ाई और बाहर से देखने में धूसर-वर्ण की प्रतीत होता है। इसका काष्ठ मोटाई में ताजे काष्ठ के बराबर होता है। ताजी दशा में दरारों के मध्य, असंख्य सूक्ष्म २ मधुदस्त लालवर्णी के निर्यास बीज पड़ते हैं किन्तु वायु में खुले रहने से ये पुनः शीघ्र श्यामवर्ण के हो जाते हैं। नवीन त्वचा का भागीतल रक्तवर्ण का और इसी प्रकार का मर्म गोंद से लदा रहता है।

इतिहास तथा नाम विवरण—अगस्त्य मुनि के नाम पर इस वृक्ष के नाम अगस्ति और अगस्त्य प्रभृति रक्खे गये हैं। कहते हैं जब अगस्त्य मुनि का उदय होता है, तभी अगस्तिया के फूल खिलते हैं। इसका औषधीय उपयोग आजका नहीं वरन् अति प्राचीन है।

प्रयोगांश—त्वचा, पत्र, पुष्प, मूल और निर्यास।

रासायनिक संघटन—त्वचा में कषायिन (Tannin) और निर्यास होता है।

औषधि निर्माण—त्वक् क्वाथ (२० भाग में १ भाग) मात्रा-१॥ तो० से २॥ तो०। मूल (स्वरस) २॥ मा० से ५॥ मा०। इसकी जड़ की छाल-और पत्र का पुल्टिस स्थानीय रूप से उपयोग में लाया जाता है। पत्र की मात्रा १-मा०। ज्वर में वायु उत्पन्न करता है। पर्यायक—सोंठ और मिर्च।

गुण धर्म तथा प्रयोग—आयुर्वेदिक मतानुसार, अगस्तिया पित्त कफ नाशक, गर्मी को शांत करने वाला, शीतल, योनिशूल, तृष्णा, कोढ़ तथा शोथ नाशक है। पक अर्थात् अगस्त अत्यन्त शीतल, तिक्त, मधुर और मदगंध युक्त (कहीं २ "मधु गंधक" पाठ आया है जिससे अभिप्राय मधु गंध युक्त है) तथा पित्तदाह, कफ, श्वास एवं श्रम नाशक और दीपन है। रा० नि० व० १०।

अगथिया, शीतल, रुक्ष, वातकारक, कडुवा है, और पित्त कफ चातुर्थिक ज्वर 'चौथिया' तथा प्रतिश्याय को नष्ट करता है।

अगस्त पुष्प के गुण—अगस्तिया पुष्प, शीतल और गौल्य है, तथा त्रिदोष श्रम, श्वास कास, विषमता, मूत्रबाधा और बल को नष्ट करता है। रा० नि० वा० १०।

अगस्तिया के फूल शीतल, चातुर्थिक ज्वर निवारक, रतौंधे, को दूर करने वाले, कडुवे कसैले पचने में चरपरे हैं तथा पीनस रोग कफ पित्त, और वात को दूर करते हैं। आ० पु० १ भ० शा० व०।

अगस्त पत्ते के गुण—अगस्तिया के पत्ते चरपरे, कड़वे, भारी मधुर, किञ्चित् गरम और स्वच्छ हैं तथा कृमि, कफ, कण्डू 'खुजली' विष और रक्त पित्त को हरते हैं। चै० निघ०।

अगस्तियाकी फली के गुण—अगस्तिया की फली सारक (कुछेक दस्तावर) बुद्धिदायक, रुचिकारक, हलकी, पचने में मधुर, कसैली स्मरणशक्ति वर्धक है तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पांडुरोग, विष, शोथ, (कहीं २ शोफ पाठ है) और गुल्म को दूर करती है, इसकी पकाई हुई शाक रूक्ष एवं पित्तकारक है।

अगस्त के सम्बन्ध में यूनानी एवं डाक्टरी मत।

यूनानी ग्रन्थकार अगस्तिया को दूसरी कक्षा में शीतल और रूक्ष मानते हैं। फारसी द्रव्य गुणशास्त्र के प्रसिद्ध लेखक मीर मुहम्मद हुसेन लिखते हैं कि सरे कर्मा अथवा मस्तक दुखता हो तो इसके पत्तों का रस निकाल नाक में २ बूंद टपकायें तो छींक आकर नासिका द्वारा जल स्राव होकर मस्तक का भारीपन दूर हो जायेगा।

बम्बई के निवासी इसके पत्ते और पुष्प के निचोड़े हुये रसको प्रतिश्याय एवं मस्तक शूल में नस्य रूप से उपयोग करते हैं। इससे नासिका द्वारा अत्यन्त जलस्राव होता है तथा सिर की वेदना एवं भारीपन सर्वथा दूर होता है। वि० डायमोक।

फूल का साग करके खाते हैं। छाल पाचन शक्ति बढ़ाने को दी जाती है। पत्तों को गरम जल में भिगोकर उस जल को पीने से जुलाब लगता है। आंख में जाला पड़ गया हो तो अगस्तिया के फूल का रस आंख में डालने से फायदा होता है। म० अ०।

यह उष्ण तथा विषहरण कर्ता है इसका पुष्प पित्तनाशक, आंखशक्ति को बलप्रद और नक्तांध्य अर्थात् रतौंधे को दूर करता है।

लाल फूल वाले अगस्तिये की जड़ को जल के साथ पीसकर बनाई हुई लुगदी का संधि वात में उपयोग होता है। १ से २ तो० तक इसकी जड़ का रस प्रतिश्याय में

मधु के साथ उपयोग में लाने से यह श्लेष्मा निस्सारक प्रभाव करता है। एक भाग अगस्तिये की जड़ तथा इतनी ही धतूरे की जड़, इन दोनों से तय्यार की हुई लुगदी का येपना युक्त शोथ में पतते हैं। इसके पत्ते को मृदु भेदक पतलाते हैं। विशाडमोंक।

चेचक की प्रथमावस्था तथा अन्य स्फोट कीय ज्वरों में इसकी त्वचाको शीत के कषाय का लाभदायक उपयोग होता है। टी० एन० मुकर्जी०।

डाक्टर बानेविया (Dr Bonavia) के कथनानुसार इसकी छाल अत्यन्त सङ्कोचक है। और वे इसको धमकारक रूपसे उपयोग में लाने की सिफारिश करते हैं।

डाक्टर रम्फियस (Romphius) के कथनानुसार इसके पत्ते की पुलटिस चोट लगने अथवा कुचल जाने के लिये एक प्रसिद्ध औषधि है।

सहज कास अथवा बच्चों की सर्दी में दो बूंद अगस्त के पत्ते के रस को ८ या १० बूंद शहद में मिलाकर इसे अंगुली के सिरे पर लगा शिशु के मसूड़ेपर दाई लोग चतुरता -पूर्वक लगाती हैं। (ई० मे० मे०)

इसके पुष्प को निचोड़ कर निकाले हुये रस को चक्षुओं में डालने से दृष्टि मांद्य अथवा धुंध को लाभ होता है। (डा० मुरे)।

अगस्त की ताजी छाल को कूटकर इसका रस निचोड़ कपड़े की बर्तिका इसमें तर कर योनि में रखने से श्वेत प्रदर तथा योनि कण्डु नाश होता है। (लेखक)

अगस्त्यः [Agastyah] सं० पु० } अगस्तिया
अगस्त्याजय [Agastya jaya] } हिं० ।

Sesbania grandiflora Pers (मिकाo।

अगस्त्यतामरय [Agastya tamaraya] ता० जलकुम्भी हिं० । Pistia Stratiotes, Linn

अगस्त्यमोदकः—हड़ ३ पल, त्रिकुटा ३ पल, तेजपत्र आधा पल, गुड़ आधा पल ले मोदक प्रस्तुत करें। इसे सेवन करने से शोथ, अर्श, प्लीहाशोथ, उदावर्त तथा कास का नाश होता है। वंग० स० अर्श० यो० श्लो० ४५

अगस्त्यरसः -पुं । पारा, गंधक जयपाल बीज, लोह, शिलाजतु, ताम्रभस्म, हल्दी समभाग लेकर त्रिकुटा, भांगरा, अदरख, नीम की छाल, सम्भालु, स्वत बल्ली के एकत्र क्वाथ में एकबार मर्दन कर रक्खें। मात्रा १ रत्ती प्रमाण गुड़, हरड़ कसीला के साथ देने से उदररोग का नाश होता है।

र० सा० सं०

अगस्त्य सूतराज रसः—पारा, गंधक सिंगरफ, प्रत्येक १–१ तो० धतूर का बीज २ तो० अफीम ४ तो०, इनका चूर्णकर भांगरे के रस की भावना देवें। अनुपान—सोंठ, मिर्च, पीपर और शहद के साथ देने से वमन, शूल, कफ, वातविकार, मन्दाग्नि, तथा घोर निद्रा को दूर करे, घृत और मिश्र के चूर्ण के साथ प्रवाहिका तथा छः प्रकार केअतिसार में और और जायफल इसके चूर्ण के साथ देवे।

अगस्त्यहरीतकी } दशमूल, कौंच, शंखपुष्प
अगस्त्यावलेह } कचूर, खीरबला, गज-पीपल, पीपला
मूल, चित्रक, भारंगी, ५ ... मास

२ तोले ले और जय २२६ तो०, हर्र १००, इन्हें १२०० तो० जलमें पकाये जब सीज जावे तो उस पदार्थ को यत्न से छान के सौ १०० हर्रों में ४०० तो० गुड़ और १६ तो० गो घृत मिलाय पकावे, और तैल, पीपल का चूर्ण भी १६-१६ तोला मिलावे, जब सिद्ध होके शीतल होजावे तो इसमें १६ ता० शहद मिलाकर यत्न से रक्खे। दो दो हर रसायन विधि से खाने से बली व पलित पांचों खांसी, क्षय, श्वास, हिचकी विषमज्वर, अर्श, संग्रहणी, हृद्रोग, अरुचि, पीनस को नाश करता है। यह अगस्त्यमुनि का रचा रसायन है। वंग सं०, च० द० सं० कास० अ० या० र०, या० सं० चि० अ० ३।

बड़ो हर्र १००, अजवाइन १ आढ़क, दश मूल २० पल, चित्रक, पीपलामूल, चिरचिरा, कचूर, कपोंच, शंखपुष्पी, भारंगी, गजपीपर, बरियारा, पुष्करमूल, प्रत्येक २-२ पल ५ आढ़क जल में पकाय छानले तिनमें १०० हर्र, तैल, घृत ८ पल, गुड़ १ तुला देकर पकावें जब ठंडा होजाय तो इनमें शहद, पीपल का चूर्ण १-१ कुडव डालें, इस तरह इस सिद्ध अवलेह के संग दो हर्र नित्य खावे तो, क्षय, कास, श्वास, ज्वर, हिचकी, अर्श, पीनस, अरुचि, और संग्रहणी का नाश हो, यह अगस्त्यमुनि की कही हरीतकी प्रत्येक रोगों का नाश करती है। शा० सं० म० ख० अ० ८

दशमूल, गजपीपल, चौंचके बीज, भारंगी, कचूर पुष्करमूल, कौंछ, पाढ़, मिलाय पीपला मूल, शंखपुष्पी, रास्ना, अग्नि, चित्रक, अपा मार्ग, पथा, जवासा, ये प्रत्येक २-२ पल लेवे, तथा यव (जौ) १ आढ़क लेवे, बड़ा हर्र १०० लो लेवें, प्रथम १ द्रोण १६ सेर अथवा एक आढ़क (४ सेर) जल लेके उसमें हर्रो को औटावे जब चौथा हिस्सा जल शेष रह जावे तो उतारे फिर एक तुला (५ सेर) गुड़ लेकर उसमें औटाकर, तैल, शहद, घृत, ४-४ पल डाले और पीपर का चूर्ण ४ पल डाले, फिर पूर्वोक्त हर्र डाले इस प्रकार पाक कर शीतल कर उसमें ४ पल शहद और डालें तो सुन्दर हरीतकी पाक तैयार होता है। यह रसायन है नित्य दो हर्रो को चर्व युक्त खावें तो राजयक्ष्मा, संग्रहणी, सूजन, मंदाग्नि, स्वरभेद, पांडु, श्वास, शिरोरोग, हृद्रोग, हिचकी और विषमज्वर को नष्ट करता है, और बुद्धि, बल, तथा उत्साहशक्ति को बढ़ाती है यह हरीतकी पाक सब में श्रेष्ठ है। यो० चि०, छ० सं० उ० तं० श्लो० ४५।

अगारधूमाद्यतैलम् घरका का धुयासा (घरका १ भा० हल्दी २ भा० सुराकिन ३ भा० इन्हें डालकर तैल पाक करें, यह खुजली शोथको दूर करे, तथा उपदंश के व्रण को शोधन व रोपण कर उसे नष्ट करे। भै० र० चमा० द० भा० प्र०।

आगस्थिओ [agasthio] म०, अगस्तियाः अगस्त हिं०।

Sesbania Grandiflora, Pers फा० इं० १ भा०

अगादा [agada] हिं०, अपामार्ग Achyranthes aspera, Linn.

अगात्ति (agatti) ता०, अगस्तिया, अगस्त हिं०।

अगाथियोस (agathiyos) सिरि० इसका शाब्दिक अर्थ „अत्यन्त पवित्र" है, पर शामी द कोमगण इसे मज़ार के लिये प्रयोग करते थे। इसी का अपभ्रंश इजाथियूस अरबी शब्द है।

अगाधम (agadham) सं० ग्रीक, अस aqua दे० प० ४ रा० छिद्र पोल hole vacuity a perforation।

अगानी (agani) उ० प० पु०, बिमारा, पेंसिर गुग्गुल।

अगारह (agharah) माघ वृक्ष। Common lemon tree इ० हि० गा०।

अगारधूमः (agardhomah) सं० त्रि०, गृह धूम वा० उ० उ० अ०।

५-अगारधूमाथवैतम्—

अगा (गे) रिक (agaric) इं०, अगारकून, गारीकून, अ०। सांप की छत्री कुम्भी कुकुरमुत्ता हि०। Boletos Ignisrius यह एक पराश्रयी (Parasite) पौधा है जिसमें रक्तस्थापक गुण विद्यमान है इं० हिं० गा०।

अगा (गे) रिक एसिड (agaric acid) इं० खुम्बीन, छत्री सत्व agaricin, Dr Stowdrt देखो गारीकून।

अगा (गे) रिकस ऑफिशिनेलिस (agaricus officinalis) ले० गारीकून सफ़ेद। mushroom। मेमा०।

अगा (गे) रिकस अमेनेटा (agaricus amanata) ... Fly agaric इं०

मात्राय अमार्कुर हि०। गारीकून सुमाप مارزل عکس ... गारीकून मगस (مارزل عکس) तिo। (Not)

इस प्रकार का गारीकून भी फिरंग के पर्वतों में उत्पन्न होता है। यदि इसको दुग्ध में उबाल लिया जाय तो यह मक्खियों के लिये घातक होता है। इस प्रकार के गारीकून में से एक अत्यन्त विषैला सत्व निकलता है जिसे मस्करीन (घातक) कहते हैं। इस प्रकार के गारीकून को कहीं २ अफीम तथा भंग के सदृश उपयोग में लाते हैं।

अगा(गे) रिकस ऑस्ट्रीएटस [agaricus ostreatus, Jacq] ले० फतस, आसान्बे, फसलारूप, पतसलब्बे, मह०, कों०। Agaric of the oak, Touchwood Oyster mushroom

इं०। इं० मे० मे०।

अगा(गे)रिकस ऐल्बस [Agaricus albus] ले०। गारीकून सफेद, अं०, फा०। सांप की छत्री, कुम्भी हि०। White agaric, Touchwood, Mushroom मेमो०, इं० मे० मे०

अगा (गे) रिककैम्पेस्ट्रिस (Agaricus campestris, Linn) ले०। मशोम्बे, फुटम्बर, मोरा चम्प सुम्बर, बाम्बूर, छत्री अफ़०, बाज़ा० मांस ओल काग़० ।,सुम्बर०, सम्मारोग [stewart] बाजा०। बयार [विषैला] रूप बाघर, औषध। Mushroom मेमा०।

अगा (गे) रिकसाबिगोरम [Agaricus subhirtigorum] ...

अगा (गे) रिकसचिरर्जिअन [Agarious chirurgeon]
लै० । गारीकून जर्राही । फा० ६० ३ भा० ।

अगा(गे)रिकस पामेलस [Agarious pal malus] लै० । पातालस्थे मह०, भा० । agaric of the oak, Touchwood Oyster mush Room ई० मे० मे० ।

अगारी [Aghari] } Rough Achyranthes ई० हि० भा०
अगारा [Aghra]

अगारीकून [Agarikon] } गारीकून अ० खुम्बी, सांप की छत्री, कुकुरमुत्ता, हि० । Agarious
अगारीकून [Agariqun]
Albus लै० । Purging Agaric, Large agaric, Boleti ई० ।
नोट—पोलीपर्स् अङ्क के रूख्य एक वस्तु है जो किसी २ वृक्ष की जड़ों के भीतर से निकलती है, पर वास्तव में एक प्रकार की खुम्बी होती है ।

अगा (गे) रीसीन [Agaroin] ई० यह गारीकून [Agarious] का एक रसायनात्मक सत्व है । यह शक्तिमान स्वेदघ्न औषध है जो यक्ष्मा रोगी के रात्रिस्वेद स्राव को रोकता है मात्रा-$\frac{१}{५}$ ग्रेन । इसके मृदुरेचनीय प्रभाव को रोकने के लिये इसे "डोवर्स पाउडर" के साथ मिलाकर उपयोग में लाते हैं । ई० मे० मे० ।

अगारूस अमरसी-(Agarose amarase) मु०, आल विलायती, आलयागी ब० । आल, आच्छी-हिं० । Morinda citrifolia Linn

अगालूजी (Agaloge)-मु०, अगर हि० । a r wood

अगास्त (Agasta)-मह०, अगस्त, अगस्तिया हि० । Sesbania grandiflora pers. । फा० १० १ भा० ।

अगि (agi)-लै०, लालमिर्च से बनी हुई चटनी । फा० ६० २ भा० ।

अगिकेसु, सी (Agikesu, si)-पर, बड़ी अरण्डी का तेल Oleum ricini obtained from the seeds of large seeded castor oil plant)-लै० स० फा० ई० ।

अगिन, ना (agin-na)-हि०, एक छोटी पक्षी है । a bird, a sort of lark

अगिन घास (Agin ghas)-अगिया घास, रोहिष, Andropogon Schoeranthes.

अगिन बाव (Agin bav) हि०, पु० अग्य वात विशेष । मनुष्य में फोड़ा फुन्सी निकलने की बीमारी ।

अगिन बूटी (Agin buti)-द०, बम्ब०, दादमारी जंगली मेंहदी-हि० । Ammonia Baccifera, ई० मे० मे० ।

अगिना लीगडी (agina ligadi) बम्ब०, फकाणिनी, हरिणपदी-हि० । Manisuris granularis ई० मे० मे० ।

अगिया (agiya) हि०, (१) रोहिष (andropogon Schoeranthes) पक्षी विशेष a bird (alanda aggiya) (३) अग्निमिया, (४) धान एवं ज्वार-प्रभृति खेतों में होने वाला घास विशेष । देखो अगया ।

अगिरः (Agirah) सं० म० चित्रक वृक्ष, (Plumbago Laylanica) मरा

अगिरेटम् अक्वेटिकम् (Ageratum aquaticum, Roxb)-लें०, बड़ी किस्सी। ई० हि० मा०।

अगिरेटम कॉनिजांइडीज (Ageratum conyzoides, Linn)

अगिरेटम कार्डिफोलिअम (Ageratum cardifolium, Roxb)-लें०, सहदेवी हि०। फा० ई० २ मा०।

अगीकर (Agikar)-लें०, घार करेला-हिं०। किपर पं०। Momordica Dioica

अगीरस (Aghiras)-यु० एकवृक्ष है जिसका गोंद कहरवा के नाम से प्रसिद्ध है। Succinum (Tree of—)-लें०।

अगीरातून (aghiratun) यु०, परेरा (एक प्रकार की बूटी है जो जल में लगती है और जिससे चारियां प्रभृति बुने जाते हैं।।

अगीरिया (aghiriya) यु०, पृथ्वी, जमीन। The earth

अगुरु (aguru)-सं० पुं० अगर। aloe wood गुग्गुल वृक्ष (amyris agattocha)

अगुरु (aguru)-सं० पु० अगुरु वृक्ष, अगर हिं०। (aloe wood) यथा—"अगुरुः श्री वासकं कुंकुमम्।" या० सू० १५ अ० पलाणि म०। कपिलपर्ण शीसम, सीसम-हिं०। कपिल शिंशिपा-सं०। Dalbergia latifolia मा० पू० १ म० वटादि-व०। सीसम, सीसो शिंशिपा वृक्ष हि०। शिंशपाक्ष-पं०। Dalbergia sisu। मे रत्रिक। इसका, भारी मही, लघु। लाइट Light ई०।

अगुरु गन्धम (aguru gandham)-सं०, क्री०, हिंगु, 'हींग', हि। हिङ्-पं०। assafoetida.

अगुरुसार (aguru sarah)-सं०, पु०, कृष्णागुरु वृक्ष, काली अगर हिं०। काल अगरु-पं०। aloe wood (the black variety) (२) लौह (Iron) रत्ना०, पदार्थ

अगुरु सारा—(aguru sara)-सं०, स्त्री०, शिंशपा वृक्ष। सीसो, सीसम-हिं०। Dalbergia Sisu। मा०।

अगुरु शिंशपा (aguru shinshapa) सं०, 'शीशम' (व) सीसा-हिं०। Dalbergia sisu। अ० टी० स्वामी।

अगुड़ः -[Agudhah] सं०, पुं०, [सफेद] एरण्ड या अरण्ड हिं०। श्वेत भेरेन्दा पं०। The castor-oil plant [Ricinus communis] पं० निघ०

अगुड़—गन्धम् [Agudh Gandham] सं० क्री०, हींग, हिंगु, हिं। [Ferola assa foetida] रा० नि० व० ६।। [१] पलाण्डु [२] सुगन्धि [३] लशुन, लहसुन

अगृद्धिः (Agridhih) सं०, स्त्री०, अभिलाष इच्छा। (wish, Desire) चा० चि० ७ अ०।

अगेथ [Ageth
अगेथुथू [Agethuthoo } हिं०, अरनी अग्नि मन्थ। Premna integrifolia।

अगेट (Agate) लें०। सातगत।

अगेटिग्रांडिफ्लोरा (Agatigrandif lora) सं० ।

पर्यास्तथा अगस्त हिं० । Grot Flowerede Aguti इं० । फा० इं०, इं० मे० मे० ।

अगेनोस्मा कैर्योफाइलेटा (Agannosma caryophyllata G. Don) ले० । इसके पत्र औषधिकार्य में आते हैं । मेमो० ।

अगेनोस्मा कैलिसिना [Agdnsma calycina, A. Do] ले०, मालती हिं०, बं०, सिं०, गन्धोमालती-बं० । इसके पत्र औषधि कार्य में आते हैं ।

अगेरिकस (Agarious) ले०, अगारिकस ।

अगेरिकब्लैंक (Agarioblanok) फ्रां०, गारीकून ।

अगेवि अमेरिकेना (Agave americanaLinn, Roxb) ले०, राकसपत्ता, पत्ताकेवार, केटला घास केवड़ा,(मेमो० इ० मे० प्लां), जंगली केवार, हाथी सींगाड़ (स० फा० इं०) हिं० । रकस पत्ता द० । आनैक कट्राजे (स० फा०, इं०, इं० मे० प्लां०) पिथकल पुण्य (मेoमा० इं० मे० प्लां०) ता० । राकाशि मट्टलु ते० । पनम कट्राज मला० । भुत्ताळी, धुडुफड्डो मार फमा० । जंगली या विलायती आनानास (स) विलाति पात, कोयन मुर्गा, आनारस (अप ध्रुंश) बं० । जंगली कोमारी, गु० । जंगली कुँवार, पारकाद, बम्ब । विलायती केटकी, पं अमेरिकन एलो (american aloe) केरेटा Carata-इं० ।

नोट—(१) हैदराबाद के किसी २ जिले में अगेवि अमेरिकेना के लिये केतकी शब्द प्रयोग में लाया जाता है, किन्तु यही नाम भारतवर्ष के अन्य भागों में केवड़ा अर्थात् केतकी (Podanus odoratissimus) के लिये व्यवहृत होता है ।

(२) किसी २ ग्रंथ में उपरोक्त पौधे के लिये यमीं पर्याय "कोयाळि" लिखित किया जाता है, किन्तु ये नाम बड़े कवार अर्थात् सुख दर्शन (Crinum Asiaticum) के हैं जो अमेरिलिडीई अर्थात् सुख दर्शनवर्ग—(N. O. Amaryllideoe)

उद्भवस्थान—इस पौधे का मूल निवास स्थान अमेरिका है, पर अब यह भारतवर्ष के अधिक भागों में आ बसा है ।

प्रयोगांश—मूल, पत्र और निर्यास ।

रसायनिक संगठन—इसके डंठल के रस में एक शर्कराजनक एक द्रव 'मधसार' होता है जिससे एक संधानित मादक पेय प्राप्त होता है जिसको मेक्सिको (Mexico में पल्की [Polquo] कहते हैं । अगेवोस एक निष्क्रिय शर्करा है ।

प्रभाव—मूल-मूत्रल और उपदंशघ्न है । रस मृदुभेदनीय , मूत्रल, रजःप्रवर्तक और स्कर्वनाशक [Antiscorbutic] है ।

औषधि निर्माण—क्वाथ, पत्र स्वरस, मूलीय रस एवं निर्यास ।

प्रयोग—इसका मूल सारसापरिला के स[्थान]ीय रूप से उपदंश रोग में प्रयुक्त होता है [लिण्डले] ।

अमेरिकन डाक्टर इसके पत्ते से निर्मित

हुये रस को शोथघ्न और परिवर्तक प्रभाव के लिये विशेष कर उपदंश रोग में उपयोग करते हैं।

इसका रस कोष्ट मृदुकर मूत्रविरेचनीय और रक्त प्रधतक २ फ्लुइड आउन्स की मात्रा में स्कर्वी नाशक है। (यु० एस० डिस्पेन्सरी) जनरल शरीडन (Genl Sheridan) का वर्णन है कि उन्होंने अपने आदमियों पर जो स्कर्वी से व्यथित थे इसका उपयोग किया और इसे बहुत लाभदायक पाया। (इयर बुक फार्मे० १८७४ २३२)

यकृ, तर और गूदादार पत्तों का पुल्टिस रूप से उपयोग अत्यन्त गुणदायी है। इसका ताजा रस कुचले हुये स्थान पर लगाया जाता है।

पत्तों तथा प्रकाण्ड के निम्न भाग से निकलता हुआ निर्यास मैक्सिको में दांत के दर्द के लिये वर्ता जाता है। इसके पत्ते का गूदा मलमल के तह में रखकर आंख आने में चक्षुओं पर बांधा जाता है। और शर्करा के साथ दिन में दो बार सूजाक में प्रयुक्त होता है। (एच० एस० पी० जिन्सले, मद्रास)

देशी लोग इसे पुरातन सूजाक में वर्तते हैं। (सर्जं० मेज० आर० एम० बोरह० पाशा सोर]।

अगेविप्लेनीफोलिया [agave Planifolia] ले०।

अगेवि कैण्टयूला (agave cantula, Roxb) ले०, विलायती अननास ई० ई० गा०।

अगेवि विविपेरा (agave vivipara, Linn) ले कंटल सं०। कठाली ता०। पेठाकलबंड ते०। मे मो०।

अगेरिक आफ दी ओक (agaric of the oak) ई०, खुम्बी, गारीकून बलूती agaricus ostreatus ई० मे० मे०।

अघोर (aghor) पु०, प्यूसी खीस, हिं। पीयूष सं। दुग्ध देने वाले पशुओं तथा गो, भैंस, प्रभृति के ब्याने के प्रथम दिवस से लेकर ४-६ रोज बाद तक का दुग्ध जो अग्नि पर रखने से थक्का २ जम जाता है।

अगौका (agoukah) सं पु a fabulous animal with eight legs शरभ (२) पक्षी, (३) सिंह। मे।

अग्गई (aggai) पंच, परकोट, पं।

अगज़ब (aghzab) أغضب (ए व) अगाज़िब أغاضب (ए ब) अ। लिंग और उसके मध्य की दूरी, वंक्षण, जंघासा, निम्न कक्ष। मौरम Groin ई।

अगज़ल (aghzal) أغزل अ, सर्द मौसम का। मौसमी बुखार, बारी का बुखार, उ। पर्याय ज्वर, हिं। Intermittent fever

अग्ज़ियह [aghziyah] أغذية ए ब ग़िज़ा غذا (ए. व) अ। आहार्य खुराक مأكولات आहार्य पदार्थ, भोज्यपदार्थ, खाद्य, आहार खाने की वस्तु, हि। डाइट्स Diets ई।

अगतम (aghtam) أغتم अ० वह व्यक्ति जो शब्द पात न कर सके

अग्तश (Agtash) أعطش अअ़तश अ। रोज़कोर روزکور फा। दिवसांध, दिन अंधा, दिनौंधी का रोगी, वह व्यक्ति जो दिन में भली भाँति न देख सके। हेमेरीलोप (सिया) Hemeralopo-pia

अग्दीदूस (Agh didus) اغديدوس खुस्यह् फ़ौक़ानी حصیه فوقانی अ०। उपांड हिं०। Epididymus,

अग्नाशय (Agnashaya) सं०। अग्न्याशय Pancreas।

अग्नि. (Agnih) सं० पु० The fire of the stomach जठराग्नि। यह मन्द, तीक्ष्ण विषम और सम भेद से चार प्रकार की होती है। यथा मनुष्य के कफ की अधिकता से मन्दाग्नि, पित्त की अधिकता से तीक्ष्णाग्नि, वात की अधिकता से विषमाग्नि तथा तीनों दोषों की समता से समाग्नि होती है। विषमाग्नि वातज रोगों को, तीक्ष्णाग्नि पित्तज रोगों को और मन्दाग्नि कफज रोगों को उत्पन्न करती है। तत्तज-समाग्नि वाले का किया हुआ यथोचित भोजन सम्यक रूप से पच जाता है। मन्दाग्नि वाले मनुष्य का किया हुआ थोड़ासा भी भोजन अच्छे प्रकार नहीं पचता और विषमाग्नि वाले मनुष्य का किया हुआ भोजन कभी भली प्रकार पचता और कभी नहीं पचता तथा जिस मनुष्यको अत्यन्त किया हुआ भोजन भी सुख पूर्वक पच जावे उसको तीक्ष्ण अग्नि कहते हैं। इन चारों प्रकार की अग्नियों में समाग्नि उत्तम है, मा० नि० अग्निमा० (२) पाचक रंजक प्रभृति पञ्चपित्त [देखो पित्त] (३) तेज पदार्थ विशेष। आग० हिं०। फायर Fire इं०। नार यरह आतश अ० फ़ा०। आगुन बं०। इसके संस्कृत पर्याय— वैश्वानर, वह्नि, वीतिहोत्र, धनञ्जय, कृपीट योनि, ज्वलन, जातवेदा, तनूनपात्, तनुनपा, बर्हिशुष्मा, बर्हि, शुष्मा, कृष्णवर्त्मा, शोचिष्केश, उषर्बुध, आश्रयाश, आशयाश, बृहद्भानु, कृशानु, पावक, अनल, रोहिताश्व, वायुसखा, वायुसख, शिखावान, शिखी, आशुशुक्षणि, हिरण्यरेता, हुतभुक, हव्यभुक, दहन, हव्यवाहन, सप्तार्चि, वसुता, शुक्र, चित्रभानु, विभावसु, शुचि, अप्पित, (अटी) वृषाकपि, ऊष्मवान, कपिल, पिंगल, अरणि, अगिर, पाचन, विश्वप्सा, छागवाहन, कृष्णार्चि, भास्कर, सुहृपार, उदर्चिष, वसु, शुष्म, हिमाराति, तमोनुद, सुशिख, सप्तजिह्व, अपपरिक, सप्तदेवमुख, (अ)।

अग्नितापके गुण वात, कफ, स्तम्भता, शीत तथा कम्प नाशक, आमाशयकर और रक्त पित्त को कुपित करने वाला है। राज० भा०।

आग्नेय द्रव्य आग्नेय द्रव्य, रूक्ष, तीक्ष्ण, उष्ण, विशद (सूक्ष्म आदों में आनेवाले) और रूप गुण बहुत होते हैं। ये दाह, कान्ति वर्ण और पाक कारक होते हैं। वा० सू० अ ९। द्रव्यों का तीसरा रूप जिसे गेसियस (Gaseous) कहते हैं। इसे वाष्पीय (भापसा) कहते हैं। यह हमारा प्राचीन तैजस तत्व है। हवा, पानी की भाप, इत्यादि इसके उदाहरण हैं। किसी पदार्थ को जब बहुत

गर्मी दी जाती है तो यह अंत में इस रूपको धारण करता है। सेमस द्रव्यों में कुछ तो दृश्य है अर्थात् देख पड़ते हैं और कुछ अदृश्य, इसमें दो विशेष गुण हैं, एक तो अपना इ सका कोई आकार नहीं होता, जैसे बर्तन में भर दीजिये उसी आकार का हो जायगा, गोले, चौखूटे, तिखूने आकार के धारण कर ने में इसे कोई कठिनाई नहीं होती। दूसरी बात जो इसमें पाई जाती है वह यह है कि इसका कोई अपना परिमाण नहीं होता। एक इत्र की शीशी लीजिये। अभी उसमें गंध के परमाणु वाष्प रूप से हैं। किंतु उनका परि माण उतना ही है जितना कि शीशीमें खाली जगह है यदि आप शीशी की डाट खोल दीजिये तो अभी गंध सारी कोठरी में फैल जायगी अर्थात् अब वही परमाणु बढ़कर कोठरी के बराबर हो गया। अतः वाष्पीय द्रव्य वे हैं, जो अपना स्वयं कोई परिमाण या आकार नहीं रखते प्रत्युत जिस पात्र में रक्खे जाते हैं उसी के आकार और परिमाण [illegible] ग्रहण कर लेते हैं भी० वि०।

[illegible] चित्रकचीता (Plumbago Zeylanica) [illegible]यो० महयीषि० पिप्पल्या घृत, भा० सू० १५ [illegible] आरग्वधादि व०। (६) अग्निजारवृक्ष। [illegible]o नि० ध० २३। (७) पीतघातक। (८) केशर (६) पित्त (Bile) (१०) [illegible] (११) निम्बुक, (Citrusmedica) [illegible]o नि० ध० २१। (१२) स्वर्ण, सुवर्ण Aurum। रा० नि० व० १३। (१३) भल्लातक, भिलावी Semecarpus anacardium रा० नि० व० ११। (१४) रक्त चित्रक, लालचीता Plumbago zeylanica (the red variety) रा० नि० व० ६। च० द० ग्रहणी चि० कपित्थाष्टक।

अग्निकुमार मोदक—यह १३ तरह का है

भै० र० ग्रहण्यधि०। भै० र० ज्वराधि० रस० रा० सु०। भै० र० अग्निमा० अधि०। भै० र० ग्रह० अधि०। भा० म० मध्य खण्ड २ अजीर्ण चि०। रस० सं० सु०। रस० रा० सु०। अमृ० सा०।

अग्निकुमार लौहम्—

वृ० रस० रा० सु०, सौ० रा० चि०।

अग्नि घृतम्—

चक्र० द०, यह सेo सं०, अजीर्ण चि०, अंश चि०।

अग्नितुण्डी रस—र० सा० स० शाङ्ग० खंड अ० १२ भै० र०। वृ० रस० रा० सु०।

अग्निदीपनी वटी—गन्धक, सोंठ, मिर्च,

सोंचा लवण, इमली, पाठविडंग इनका चूर्ण कर नीबू के रस में खरल कर चने प्रमाण गो लियां बनावे। वृ० रस० रा० सु०।

अग्निप्रदीपकानि—चक्र० द० अग्नि० मा० प्र०।

अग्नि मुख—वृ० रस० रा० स० शूल० चि०।

अग्निमुख चूर्ण

यह सेo सं०, यो० त०, अजी० प्र०।

अग्निमुख मंडूरम्—लौह कि इ ४८ तो० कर्प

अठगुने गोमूत्र में पकावे पुनः चित्रक, भाङ्गी, सोंठ, पीपर, पीपरामूल, देवदारु, नागरमोथ त्रिकुटा, त्रिफला, वायविडंग इनका चूर्ण १ पल लेकर उक्त मंडूर में मिलाकर उपयोग क[illegible]

इनका पत्ती बनाय नेत्राञ्जन करने से, अप स्मार, चातुर्थिक ज्वर, और उन्माद दूर होता है।

च० द० उन्माद० चि०

(७) तगर, मिर्च, जटामांसी, शिलारस, इन्हें समान भाग ले, सर्वतुल्य मैनसिल, व मज ४ भाग (तगरकादिसे चौगुने) तथा सब से त्रिगुण शुद्ध सुर्मा, और उतने ही मुलहठी लेकर बारीक पीस अञ्जन बनावे।

सु० सं० उ० अ० १२

(८) हल्दी दारु हल्दी, मुलेठी, लाख, देव दारु, इन्हें समान भाग ले बकरी के दूध से अंजन करने से अभिष्यन्द दूर होता है।

भै० र०

अञ्जनगुटिका सोंठ, मिर्च, पीपर, करंजफल, हल्दी, बिजौरे की जड़, इनकी गोली बना छाया में शुष्क कर नेत्राञ्जन करने से विष्च्चिका [हैजा] दूर होता है।

(२) महुआ पुष्प, श्वेत अपराजिता, अपामार्ग मूल, त्रिकुटा, इनकी गोली बना नेत्राञ्जन करने से विषूचिका दूर होता है।

भैष० र० अग्नि मा० चि०

अञ्जन गुटिका (१) मेनसिल, देवदारु, हल्दी, दारु हल्दी, आमला, हर्र, बहेड़ा, सोंठ मिर्च, पीपल, लाख, लहसुन, मंजीठ, सेंधा लवण, इलायची, सोना माखी, सावर लोध, लोह चूर्ण, ताम्र चूर्ण, काकातुण्डिका, मुर्गी के अण्डे का छिलका, इन्हें समान भाग लेकर स्त्री के दूध में घोंटकर गोली बनावे, इसका अञ्जन काच, तिमिर, शुक्रार्म, तथा नेत्र के रक्त रेखा को दूर करता है।

(४) कासे के पात्र के रगड़ने से उत्पन्न स्याही, मुलेठी, सेंधा लवण, तगर, एरंड की जड़, इन्हें बराबर लें, तथा इनमें से एक से द्विगुण बड़ी कटेली मिलावें, इनको बकरी के दूध से पीस कर ताम्र पात्र पर लेप करे इसी तरह सात बार बकरी के दूध में पीस २ के उक्त पात्र पर लेप करे और छाया में शुष्क कर बटी बनावे तो यह अञ्जन नेत्र रोग को दूर करे।

सु० सं० अध्या० १२ नेत्र० रो० चि०

अञ्जन वटी पारा १ टंक, गंधक २ टंक, मिर्च ६ टंक, सबको पीस कज्जली करें, पुनः करेले के रस की २१ भावना देकर मर्दन कर एक रत्ती प्रमाण गोलियां बनावें, इसका जल से घिस अञ्जन करने से हर प्रकार के ज्वर दूर होते हैं। किसी २ जगह करेले के पत्र के रस से २१ पुट देने को कहा है।

वृ० रस० रा० सुं० ज्वर० चि०

अञ्जन ताडनाद्युपाया शुद्ध मनुष्य के आ चार के नष्ट हो जाने पर तीक्ष्ण नस्य तीक्ष्ण अंजन, ताडन, तथा मन, बुद्धि, स्मृति इनका संवेदन, ये हित हैं। उन्मादसे विस्मृति हो जाने पर तर्जन, दुःखदेना, सान्त्वना, हर्ष (आनन्द) भय दिखाना, विस्मय (आश्चर्यान्वित) कर मन को प्रकृति में स्थिर करें। काम, शोक, भय, क्रोध, आनन्द, ईर्षा, तथा लोभ से उत्पन्न उन्माद में परस्पर प्रतिद्वन्द्व क्रिया से शांति करे। वांछित द्रव्य के नष्ट होने से उत्पन्न उन्माद में तत्तुल्य द्रव्य प्राप्ति शांति, तथा आश्वासन से उसकी शांति करें।

चक्र० द० उन्माद चि०।

अञ्जनादि मैनशिल, पारावत, (कबूतर) का बीट का अंजन करे तो अपस्मार तथा विशेष कर उन्माद का नाश हो। मुलहटी, हींग, वच, तगर, शिरिष बीज, कूट, लहसुन, इन वस्तों क मूत्र में पीस नेत्राञ्जन करने से तथा नस्य देने से अपस्मार और उन्माद दूर होता है। पुष्य नक्षत्र में कुत्ते का पित्त लेकर अञ्जन करे तो अपस्मार दूर हो या उसी पित्त में घृत डाल कर धूप देवे तो अपस्मार (मृगी) दूर हो। चक्र० द० अपस्मार० चि०

त्रिफला, वच, रोन्धू, तगर, इन सबी के चूर्ण में बकरी के मूत्र में पिस अञ्जन करे तो प्रत्येक सन्निपात में शुक्ला दूर हो। शङ्ख, (शंख) दन्त (हाथी दांत) धातु (कसा) त्रिफला, बड़ी इलायची, करंज क बीज, लहसुन, इन सबों का अञ्जन फूलो क मल को दूर करता है तथा अञ्जनगुण नाश कि मल शुरु नयनान शुभ हैं भी दूर कर। बृह० नै० नम रो० चि०

अञ्जनगुटिका नेत्र १ माशा, मैंना वमन २ मा० मालर ३ माशा तगर ४ माशा, इस प्रकार से इनके त्रिगुण जल से घरस करे, गुना गोली बनाकर नेत्राञ्जन करने से नेत्र रोग दूर होता है। भै० र० नम रो० चि०

अञ्जन दृष्टि प्रसादनी शलाका सोने का बारहवां भाग कर १६, १२, ८ का पता क रगड़े, का थे, मायूम से, ताम्र से तथा करते हैं दूध में बुझावें, पश्चात् इस सोने को सलाई बनाकर नेत्रों में फेर तो नेत्र सम्बन्धी तमाम रोग नष्ट होते हैं। अ० द० दृष्टा का० नै० रो० चि०

अञ्जन भैरव पु० पारा, लोह भस्म, पीपर, गंधक इन्हें एक २ भाग लें, जमाल गोटा के बीज ३ भाग, इन्ह जम्भीरी के रस से अच्छी तरह पीस नेत्राञ्जन करने से सन्निपात ज्वर दूर होता है।

भैर० १०

अञ्जन रस —पु० पारा, मिर्च, इन्हे बराबर ले पीस कर नस्य दें तो सन्निपात ज्वर दूर हो।

र० रा० सं० ज्वर० चि०।

(२) हींग, फिटकिरी इन्हे पीस कर नस्य दन से सन्निपात ज्वर दूर होता है।

र० रा० सं ज्वर० चि०

अडूसा क्वाथ अडूसे क पत्र या मूल १ तोला जल १६ तोला में क्वाथ करे जब चतुर्थांश शेष रहे तो उस में शहद डाल कर पीने से रक्त पित्त तथा क्षय का नाश होता है।

शा० स०, शा० स०

अडूसा पुटपाक अडूसे क पुट पाक का रस निचोड़ कर शहद मिला पीने से रक्त पित्त, खांसी क्षय तथा ज्वर का नाश होता है।

अ ह० सं० म० म० १ ख०

अग्निआर (Agniar) मैदा०, मदप्रम सपार।

अग्निउ (Agniu) कुमा०, कालीट, बड़गाम।

अग्निउम (Agnium)-हि०, कालोट बड़गाम। अग्निद्गु, कोमलाहिर्ट, सं०।

अग्निर (Agnikah) सं० पु० इन्द्रगोप कीड़ विट। बीरबहूटी हि०। कच्छ का का

पं० an insect of a bright scarlet colour (Mutelia occidentalis) सु० सि० ३अ०, हे० च० ४ का० ।

(२) चित्रकवृक्ष । Plumbago zeylanica पा० चि० ७ अ० । भिलावाँ, भल्लातक वृक्ष । Semecarpus anacardium भा० पू० १ भा० ह० व० ।

अग्निकर्णी (Agni karni) सं० स्त्री०, वृक्ष विशेष । वै० निघ० २ भा० सन्निपातज्वर चि० ।

अग्निकर्म (agni karm) सं० क्ली०, अंशादि रोगों में अग्नि में लालकिये हुये शलाका आदि से किये जाने वाले दाह क्रिया को अग्निकर्म कहते हैं । क्षार से दाह कार्य श्रेष्ठ है गुण के विचार से न कि क्रिया के विचार से । काल—इसके लिये शरद और ग्रीष्म ऋतु को छोड़कर अन्य समस्त ऋतु में श्रेष्ठ हैं । इसके लिये पात्र अर्थात् योग्य रोगी दुर्बल बालक, वृद्ध और डरपोक प्रभृति के अति रिक्त, अन्य समस्त । सु० सू० १२ अ०, वा० चि० १५ अ० ।

अग्निका—(agnika)-सं०, कपास-हिं० । Gossypium Indicum-ले० ।

अग्निकाष्ठम् (agnikashtam) सं०, क्ली०, अगुरु, अगर agallochum-ले० । "अग्नि काष्ठ कटीरेस्यात् ।" रा० नि० व० २३ । शमी काष्ठ । Acacia suma ले० । रा० नि० व० १२ ।

अग्निकील: (agni kilah)-सं० पु० अग्नि शिखा, अग्निज्वाला वं० । Gloriosa Superba ले० ।

अग्निकुक्कुट: (agni kukkutah)-सं० पु० अलातग्नि, तृणोल्का, विद्युत् । ज्वलंत चूड़ा-व० पं० श० । Lightning ।

अग्निकुमार: (agni kumarah)-सं० पु० ।

(१) अग्निकुमार मोदक

(२) अग्निकुमार रस

(३) अग्निकुमार लौहम् [agni kumar louham]-सं० क्ली०, लौहाधिकार में वर्णित रस । योग इस प्रकार है ।

यथा—तूतिया, हींग, सुहागा, सैन्धव व मिर्चा, जीरा, अजवायन, मिर्च, सोंठ, लौंग, इलायची, विडंग प्रत्येक १-१ तो० । इन सबों के समान लौह तथा पारद ४ तो० व गंधक ४ तो० । निर्माण विधि-सर्व प्रथम पारद व गंधक की कज्जली कर पश्चात् शेष औषधों को मिला कर भली भांति घोंटे पुनः इसको शीशी प्रभृति में सुरक्षित रक्खें । मात्रा-अव स्थानुसार । अनुपान घृत और मधु । र०सा० सं० ३३३ योग ।

अग्निगर्भ [agni garb]-सं० दाहमारी । इं० मे० मे० । ammannia Baccifera Linn ले० ।

अग्निगर्भ (agni Garbh)-सं० पु०, अग्नि जार वृक्ष A Medicine used in medicine of stimulant properties रा० नि व० (२) आतशी शीशा, सूर्यकान्तमणि । The sun stone ।

अग्निगर्भा [agni garbha] सं स्त्री (१) शमी वृक्ष-हिं, मं. । शाई गाछ-बं । acacia Suma.

गुण— तिक्त, कटु, कषाय, शीत वीर्य, लघु, रेचनी कफ, कास, श्वास, कुष्ठ, कृश तथा कृमिना शक । भा पू १ भ । (२) महा ज्योतिष्मती लता-सं. । बड़ लता फटकी बं । Cardios permum Helioacabum से रा. मि ।

अग्नि घृतम् (agni Ghritam) सं क्ली

अग्निचार (agni-char) सं एक औषधि है जो पश्चिमी समुद्र के किनारे होती है । [Phasianus Gallus]

अग्निचूड़ (agni chudah) सं पु a cook ताम्र चूड़ पक्षी । दा हिं कोमड़ा, कुक्कुट मुर्गा दि । कुकड़ा-बं । ग्राम्य व वन्य भेद से ये दो प्रकार के होते हैं इसमें (१) ग्राम्य हृदय, वृष्य, बल्य, गुरु शुक्र वर्द्ध कफ कर्ता स्निग्ध उष्णवीर्य और रसमें कषैला होता है (२) आरण्य (जंगली) स्निग्ध, बृंहण, श्लेष्मा कारक, गुरु, वात, पित्त, क्षत क्षय तथा विषम ज्वर नाशक । भा । क्षय, श्लेष्मा नाशक तथा लघु । रा मि. व ११ । रस स्वादु (मधुर) कषैला और शीतल । राज । A plant used in medicine of stimulant pro perties रा मि व ६ ।

अग्निज (Agnijah) सं. पु अग्निजार वृक्ष महातक (भिलावां) सुवर्ण Aursum मांस धातु musolo वे श । Someoarpus anaoar dium से ।

अग्निजननी (Agni janani) सं स्त्री ।

अग्निजात (Agnijatah) सं० पु०, अग्निजार वृक्ष । (See agnijar) रा० नि० व० ६ ।

अग्निजारः (Agnijarah)-सं०, पु०, A plant used in medi cine of stimulant properties (१) पश्चिम समुद्र में उत्पन्न नाम की प्रसिद्ध सागर सम्भूत औषधि विशेष । इसके पर्याय निम्न हैं, यथा—अग्नि निर्यास, अग्निगर्भ, अग्निज, वडवाग्निमल, जरायु, अर्णवोद्भव, अग्निजात और सिन्धुफल । ये चार प्रकार के पर्यायवाले होते हैं, इनमें रस हितकर का श्रेष्ठ होता है । गुण—कटु उष्ण, उष्णवीर्य, लघुपाकी तथा कफ वायु, सन्निपात शूल रोगनाशक और पित्त कारक है, यथा—"स्यादग्निजारः कटुरुष्णवीर्यः गुल्मामय वातकफमयघ्नः । पित्तप्रदः सोऽधिक सन्निपातघ्न्‌ आर्ति शीतामयनाशनश्च ॥" रा. नि. व ६ ।

(२) (अम्बर आवहय)

अग्निजाल (Agnijalah)-सं पु अग्निजार see agnijar रा नि व. ६ ।

अग्निजिह्वा-जिह्विका (Agnijihva jihvika) सं स्त्री. Gloriosa superba लाङ्गली वृक्ष । रसा । कलिहारी हिं । बच्छनागी-मं. । ईषलाङ्गलिया बं गुण—दस्तावर, तिक्त, कटु, चरपरी, कसैली, तीक्ष्ण, उष्ण, हलकी, पित्तकारक और खारी, गर्भको गिराने वाली । कुष्ठ, शोफ (सूजन), अर्श (बवासीर) व्रण, शूल, श्लेष्म तथा कृमि का नाश करने वाली, कफ वात नाशक और अल्प गन्ध विसर्पक है । भा० पू० १ भ० गु० व० ।

कुसुम्भपुष्प:, Saff o wer (carthamus tinctorius) ले० । (२) कुंकुम केशर Saffron इं०

अग्निमुख (agnimukhah) सं० पु० चित्रक वृक्ष, चीता । चिते गाछ बं० । Plumbago Zeylanica ले० । (२) भिलावाँ वृक्ष हिं० । भेला गाँछ बं० । The marking nut tree इं० । वि० ।

अग्निमुखचूर्णम् (agnimukh churnam) सं० ।

अग्निमुखताम्र (agnimukh tamrah) सं०-पु० ।

अग्निमुखमण्डूरम् (agnimukh manduram) सं० क्ली० ।

अग्निमुखरस (agnimukh rasah) सं० पु० ।

अग्निमुखलवणम् (agnimukh lavanam) सं० क्ली० ।

अग्निमुखलौहः (agnimukh lauhah) सं० पु० ।

अग्निमुखा (agnimukha) सं० स्त्री० भल्लातक, भिलावाँ (अ) । भेला बं० The marking-nut tree [Semecarpus anacardium Linn] इं० (२) लाङ्गलिका सं० कलिहारी-हिं० । Gloriosa Superba, Linn ले० ।

अग्निमुखी (agnimukhi) सं० स्त्री० भल्लातक, भिलावाँ । भेला ब० Semecarpus anacardium, Linn ले० । मे० मचतुष्क । रत्ना० । च० सू० ४ अ० शोणितस्थापन दशक । (२) लाङ्गलिका: । ईषलाङ्गलीया बं० । मे० मचतुष्क । भा० पू० २ भा० अनेक व० । (३) कश्मीर स० अग्नीशिखा-हिं० । कलिहारी-हिं० । Gloriosa superba Linn ले० । पाँचुड़ा-बं० । रा० नि० व० ४ । भा० पू० ८० व० । (४) गुडूची, गुरुच, गिलोय । Tinospora Cordifolia ले० ।

अग्नियूम (agniyum) हिं० बकार, बकर्ण, बसौटा । प्रेम्ना लैटिफोलिया Premna Latifolia, Roxb ले० अग्निक कुमा० । बन, बार, गियान बं० । N. O. Verbenaceae ।

उत्पत्तिस्थान—उत्तरी भारतवर्ष कमायूँ से भूटान तक और खसिया पर्व्यंत तथा सामान्यतः बंगदेश के मैदान ।

प्रयोग—उपरोक्त पौधे के पत्तों का क्वाथ सूजन पर लगाया जाता है, और पशुओं के उदर शूल में इसका रस प्रयुक्त होता है । ("मेटकिल्सन") पञ्जाब देश में इसका रस औषधतुल्य प्रयोग में लाया जाता है । "स्टुअर्ट" । इं० मे०

अग्निरजा (... सं०

अग्निरजः (...

इन्द्रगोपकीट ...

च० ४ । an i...

colour. (...

अग्निरुहा (agni ruha) स ०, स्त्री मांसरोहिणी रा० नि० व० १२। Sovmida Febrifuga (The indian red wood tree) ले०।

अग्निरोहिणी (agni rohini) स ० स्त्री (१) मांसरोहिणी स ० हिं, बं०। Soymida Febrifuga ले० (२) उक्त नाम का क्षुद्र रोग विशेष। यह त्रिदोष जन्य होता है। क फ-पित्ताधिक्य वातादि दोषों के कारण व पल में, ज्वर पैदा करने वाली, मांस को विदीर्ण करने वाली अग्नि के समान तीक्ष्ण का फुंसियां हो जाती हैं उन्हें अग्नि रोहिणी कहते हैं। ये पांच या सात या पन्द्रह दिन में रोगी का प्राय नाश करदेती है। भा० क० २१ अ०।

अग्निलौह (agnilouhab) स ०, पु०।

अग्निवक्त (agni vaktrah) स ०, पु०, भल्लातक वृक्ष, भिलावां का पेड़ हिं०। भेला गाछ० बं० । Semecarpus anacardium, Linn ले० मद० व० १। (२) चित्रक (चीता) क्षुप-हिं०। चिते गाछ-बं०। Plumbago zeylanica ले०।

अग्निवण्डा (agni vanda)-सं० अग्नि ज्वाला [एक गरम दवा है] See-agni jvala।

अग्निवती (agni vati)-स ०, स्त्री अ गिया घास। यह एक प्रसिद्ध औषधि है। Andropogon Schoeranthes ले०।

अग्निवधू [Agnibadhu] अग्निमन्थ। वै० श० । See-arani

अग्निवर्धकः न (Agni vardhakah, nah) स ० त्रि०, अग्नि उद्दीपक मरिच प्रभृति आग्नेय द्रव्यमात्र। अग्निवृद्धि कर। देखो दीपक [न]। राज। Stomachic

अग्निवल वृद्धि [Agnibal vridhih] स ० स्त्री जठराग्नि वृद्धि। च० द० अर्श चि०।

अग्निवल्लभ [Agni vallabhah] स ० पु० राल, धूप, सर्ज, योनिस्राव विशेष। धूना बं० रेज़िन (Resin) इं०। हिं०। रा० नि० व० ६१२। मद० व० ३। See-Sarjah

अग्निवल्ली [Agni valli] स ० स्त्री लता विशेष र० सा० स ० अग्निन्यास ज्वर स्वच्छ न्दनायक रस। a Creeper turning or climbing plant इं०।

अग्निवास्त [Agnivas]—स ०

अग्निवाह हु [(Agnivah-hub) स ०, पु०, धूम। स्मोक Smoke इं०। हे० च० ४ का०।

अग्निविकार (Agnivikarah)-स ०, पुम, जलनाम के रोग का एक भेद। यह चार प्रकार का होता है। शार्ङ्ग० पू० ७ अ०। देखो अग्निः।

अग्निविवर्द्धनः (Agni vivarddhanah) सं०, त्रि०

अग्निवर्द्धक दीपन, यवानी (अजमाइन) प्रभृति । वै० श० । Stomachic

अग्निविसर्पः (Agnivisarpah) सं०, पु० अग्निमयीसर्प, विसर्पभेद Pain from a boil ।

अग्निवीजम् (Agni vijam) सं०, क्ली०, सुवर्ण । gold aurum त्रिका० ।

अग्निवीजः (Agni vijah) सं०, पु० अग्नि मन्थ, अरनी । Premna Serratifolia.ले० ।

अग्निवीर्यम् (Agni viryam) सं० क्ली० स्वर्ण।सुवर्ण । gold (Aurum) रा० नि० व० ३।

अग्निवीसर्पः (Agnivisarpah) सं०, पु० द्वन्द्वज विसर्पों का एक भेद । देखो विसर्प (Pain from a boil) अग्निविसर्प के लक्षण वात पित्त विसर्प में ज्वर, वमन, मूर्च्छा, अतिसार, तृषा, भ्रम, अस्थिभेद, अग्निमांद्य, तमकश्वास, और अरुचि ये लक्षण होते हैं। इसमें सम्पूर्ण शरीर जलते हुये अंगारों की भांति प्रतीत होता है। शरीर के जिस २ अवयव में विसर्प फैलता है वहीं २ अंग बुझे हुये अंगार के समान काला, नीला, अथवा लाल हो जाता है अग्नि से जले हुये, स्थान की तरह वह फुंसियों से व्याप्त हो जाता है और शीघ्रगामी होने के कारण हृदय प्रभृति मर्म स्थानों पर शीघ्र ही आक्रमण करता है। इसमें वायु अत्यन्त प्रबल होकर शरीर में पीड़ा, संज्ञानाश, निद्रानाश, श्वास और हिचकी उत्पन्न करता है। विसर्प रोगी की ऐसी दशा हो जाती है कि वेदना से ग्रस्त होने के कारण भूमि शय्या या आसन पर कहीं भी इधर उधर लेटने से सुख प्राप्त नहीं होता और देह मन और श्रमजनित वेदना से ऐसा दुःखित होजाता है कि दुष्प्रबोध अर्थात् चिरस्थायी निद्रा में लीन हो जाता है। इन लक्षणों से युक्त विसर्प को अग्निविसर्प कहते हैं। वा० नि० १३ अ० ।

चिकित्सा—अग्निविसर्प में सौवारधुला हुआ घी या केवल घृतमण्ड अथवा मुलहठी का शीतल क्वाथ, कमल का जल, दूध या ईखका रस, इनका परिषेक करे और महातिक्त घृत को पान लेपन और परिषेक के काम में लावे वा० चि० १८ अ० ।

अग्निवृद्धिः (Agni vriddhih)-सं० स्त्री० अग्निदीप्ती, क्षुधावृद्धि । Increase of digestive fire or appetite

अग्निवृद्धिकर (Agni vriddhikar)-सं० पु०, अग्निवर्द्धक ।

अग्नियेण्ड पाकु (Agnivendupaku)-ते०, वाद्मारी चक्रयङ्ग ।

अग्निवेन्द्र पाकु (Agni vendra paku) हिं० । अग्निगर्भ सं० । (Ammannia Baccifera, Linn) । -फा० इं० २ भा०, इं० मे० मे० ।

अग्निशिखम् (agnishikham)-सं० ,क्ली०, (१) सुवर्ण, सोना । Gold (aurum) रा० नि० व० १३ । (२) कुसुम्भ पुष्प-सं० । कुसुम फूल-हिं० । Safflower (Carthamus tinctorius) । (३) कुङ्कुम, केशर ।

Saffron (Crocus Sativus) । भा० पू०
२ भा०, म०० व० ३ ।

अग्निशिख (agnishikhah)-स० पुo
(१) कुंकुम, केशर । Crocus sativus
(Shrub of) । रा० नि० व० १२ ।
(२) लांगलिका वृक्ष-स० । कलिहारी-हिं० ।
विषलांगलिया गाछ बं० । (Gloriosa sup
erb Linn) । रत्ना० । (३) कुसुम्भ वृक्ष
स० Safflower (Carthamus Tinctori
us) । रा० र० । (४) पूति करञ्ज स० ।
'कट करञ्ज'-हिं० । नाटा-बं० । (Caesal
pinia Bonducella) । (५) सूरण (म)
स० । 'जमीकंद'-हिं० । ओल गाछ-बं० ।
(amorphophallus campanulatus) ।
प० मु० ।

अग्निशिखा (agni shikha)-स० स्त्री,
लांगलिका औषधि-स०, 'करि [लि] हारी
हिं०, [Gloriosa superba] पू० १ भा०
म० व० ।

अग्निशिष (agni shisha) बं० मरट का
पच्छभाग, । कलिहारी, कांगली । Gloriosa
Superba बं० । इं० मे० मे० ।

अग्निशिषा (agni shisha) स० स्त्री (१)
चौलाई, (२) कलिहारी, (३) चित्रक ।

[अग्]निशेखरम् [agni shekharam] स०,
[क्ली]० पु० Saffron (Crocus Sativus)
कुंकुम, केशर । रा० नि० व० १२ । कुसुम्भ
पुष्प, Safflower (Carthamus tincto
rius) [३] लांगलीवृक्ष, स०, कलिहारी
हिं० । Gloriosa Superba बं० । [४]
विषलत्या शाक नामक भेद ।

अग्निष्टोम [agni-shtomah] स०, पु०,
The moon plant सोमलता । सु० चि०
२६ अ० ।

अग्निष्ठ [agni shthah] सं०, पु० तावा
तंडुल आदि अथवा कोई भी शाक आदि भू
जने का लोह पात्र ।

अग्निसंस्कार [agni sanskarah] स०
पु० अग्निदाह कर्म Funeral ceremonies

अग्निसस्पर्शा [agnisansparshah] स०
स्त्री०, पपटीनामक सुगन्ध द्रव्य, पपावती ।
यह सूरत में प्रसिद्ध है । भा० पू० १ भ० क०
व० पपड़ी [री] नदी [डी] हिं० ।

अग्निसदीपन [agnisandipanah] स०
त्रि०, अग्निवर्द्धक, क्षुधावर्द्धक, । Increasing
appetite

अग्निसंदीपन रस [agnisandipana
rasah) स० पु० ।

अग्निसम्भव [agni sambavah] स०
पु० Wild Saffron जंगली कुसुम, अरण्य
कुसुम्भ वृक्ष । वनकुसुम-बं० । रा० नि० व०
४ (२) अग्निजार वृक्ष । रा० नि० व० ६ ।

अग्निसहाय [Agnisahayah] स०, पु०
Wild pigeon जंगली कबूतर-हिं० । वन्य
पारावत स० । घुघु बं० । डोमकापखी मं० ।
रा० नि० व० १६ । २ वायु । air, wind.

अग्निसादः [Agni Indigestion sadah] स० पु० अग्निमान्द्य आम्य, अजीर्णता, कफ द्वारा जठराग्निका शिथिल होना। मन्दाग्नि। सा० कौ० ज्व० चि०।

अग्निसाध्य [Agnisadhyah] स० त्रि० अग्नि साध्य, अग्नि से जलाने से जो ठीक होवे। च० द० अर्श० चि०।

अग्निसारम् [Agnisaram] स०, क्लीo, रसाञ्जन, रसवत। A sort of collyrium या० नि० व० १३।

अग्निसारा [Agnisara] स०, स्त्री०, Fruitless branches फलशून्य शाखा, फल रहित डालियाँ। रा० नि० व० २। मञ्जरी, बौर, मुकुल। The blossom

अग्निसुन्दर रस [Agni sundar rasah] स० पु० अजीर्णाधिकार में वर्णित रस, यथा सुहागा, १ भाग, मरिच २ भाग,। इनके चूर्ण में आदरक के रस की भावना देवे। अनु० प्रसंग। भैषज्य०।

अग्निसूनुरसेन्द्र

अग्निसेवनम् (Agni sevanam) सं०, क्लीo अग्निसेवा अग्नि प्रयोग, अग्नि तापना। इसके गुण शीतवात, स्तम्भ, कफ, कम्पन, प्रभृतिको नाश करने वाला और रक्त पित्त, कर्ता तथा आम और अभिष्यन्द का पाचक हैं। भा० प्र० ११ प०

अग्निस्थापनीय [Agni sthapaniya] अग्निवर्द्धक, दीपन। Stomachic.

अग्निहानि. [Agni hanih] स० पु०, Indigestion, Loss of appetite अग्नि मान्द्य, अजीर्णता, अपच मन्दाग्नि वा० नि० १३ अ०।

अग्निहोत्र [Agni hotrah]-सं० पु० Ghee घृत।
(२) (Fire) इ०। अग्नि। मे०।

अग्नीका [Agnika] स० कपास। Gossypium Indicum ले०।

अग्न्या [Agnya] स०, स्त्री० तीतर चिड़िया, तित्तर पक्षी। (a) Partridge Perdix Francolinus इ०। accor गाय इलो०।

अग्न्याशय [Agnyashayah] स० पु०, पैंक्रियास Pancreas इ०। क्लोमग्रंथि हि०। १ इन्क्रियास, انقراس २ बानक्रास, بانقراس ३ उनफुत्तिहाल, عنق الطحال ४ लयलबदा, لبلبه अ०। यह एक ग्रन्थि है जो प लम्बी लम्बी चिपटी और प्रवाल सदृश होती है। यह नाभिसे ३-४ इंच ऊपर आमाशय के पीछे कटि के पहले दूसरे पर्व कशे के सामने आड़ी पड़ी रहती है। इसका बांयां तंग सिरा प्लीहा से मिला हुआ रहता है। इसकी लम्बाई ६ से ८ इंच चौड़ाई १॥ तथा मुटाई १ या १। इंच के लगभग - भार १ छटांक से ३ छटांक तक होता। इस ग्रंथि में एक प्रणाली होती है, जो वामपार्श्व से आरंभ होकर दक्षिण सिरे ओर आकर पुनः पित्तप्रणाली से मिलकर द्वादशांगुलान्त्र में आ खुलती है। इसके द्वार

—बने हुये पाचक रस को क्लोमरस (Pancreatic juice) कहते हैं, इस रसका प्रधान कार्य यह है कि यह आहारस्थ वसा Fats आदेकी सफेदी के सदृश पदार्थ Albumnin और सरेशीय पदार्थ को पाचनयोग्य बनाता है।

अघ्घर (Aghbar)-اغبر अग्बर اغبر आ० -गुब्बारआलूद, गर्दआलूद, गुब्बारी, खाकीरंग मटियाला, फा०। धूलिपूर्ण, धूसरपूर्ण-हिं०।

अग्मस् (Aghmas) اغمس आ०। चेपड़ो फा०। जिसके नेत्र में गमस غمص अर्थात् चेपड़ (कीचड़) आती हो।

अग्रम् (Agram) सं०, क्ली० पलपरिमाण यथा—"परिमाणेपलस्य च" एक पल ८ तोले के बराबर होता है। मे० द्विकं। (१) वृक्ष आदि का अग्रभाग। (२) पहले, आगे आदि (The forepart of a thing, adj, anterior prior, first) मुक़द्दम, क़ुद्दामी आ०।

अग्रकाण्ड: (Agra kandah) सं० पु० कांडाग्र, तने का अग्र भाग। The forepart of the stem

अग्रकोण (Agra kona) सं०।

अग्रखण्ड (Agra khanda) सं० उरोस्थि के तीनों टुकड़ों में से तीसरा नीचे का पतला टुकड़ा जो कौड़ी देशमें दबाने से स्पर्श किया जा सकता है। जीफॉइड प्रोसेस Xiphoid process.

अग्रगामी (Agra gami) हिं०, पु० } अग्रगामी। Preceding, going before.

अग्रग्रास [Agra gras] हिं० पु० प्रथम कवल The first morsel।

अग्रसर्वणक: (Agra pharvan akah) सं० वृक्ष विशेष।

अग्रज: (Agra jah) सं०, पु० काक विशेष, वायस, कौआ a crow (२) ग्रासपक्षी, कौवे के समान एक पक्षी है।

अग्रजंघा (agra jangha) सं० स्त्री० जंघा अग्रभाग, टांग का अग्रभाग, The fore part of the leg। हे० च०।

अग्रधान्यम् (Agra dhanyam) सं० क्ली०, धान्य विशेष, ज्वार, बाजरा।

अग्रपर्णी (agra parni) सं०, स्त्री० (१) एकविमती [illegible] हिं०। [illegible] सं०। a plant cowhage। प० मु०। [illegible] मालसूता। (२) अजलोमा वृक्ष (र०)।

अग्रपर्विका (Agra parvika) सं० स्त्री० पोर्वाग्र, अगला पोर्वा। Anterior phalanx

अग्रपाणि (Agra panih) सं० पु० हस्ताग्र, हाथ का अग्र भाग। The forepart of the hand,

अग्र पुष्प: (Agra pushpah) सं०, पु०, Calamus rotung (Common cane) वेतस वृक्ष। बेंत-हिं०। बेत गाछ-बं०। प० मु०

अग्रबाहु (agra bahu) फार आर्म Forearm-इं०। कोहनी के नीचे अथवा कोहनी से कलाई तक का भाग अग्रबाहु या प्रकोष्ठ कह-

जाता है। अग्रवायु फाइनों के स्थान पर वायु के ऊपर शुरू आता है।

लाइन, — मिग्रसम् — कलार्ह كلى अ०।

अग्रभाग (gra bhag)-हिं०, पु०, अगला हिस्सा, पहिला हिस्सा, आगे का भाग The preceding part।

अग्र मांसम् (Agra maansam)-सं०, क्लो० The heart हृदय। गुर्दा। हृदय के भीतर होने वाला मांस वृद्धि रूप रोग विशेष। सु० शा०।

अग्रया (Agrayah)-सं०, स्त्री०, त्रिफला। The three Myrobalans-इं०। वै० श०।

अग्रयून (gr yun)-اگريون फा०। खारिश, खुजली। कंडु, खाज हिं०। प्रुरिगो Prurigo प्रुराइटिस Pruritis।

अग्रलोड्यः (Agra lodyah)-सं०, पु०, 'चिञ्चोटक' क्षुप, चेचुनां-हिं०। चेंचको, चि ञ्चोड़ मूल प०-गुण-यह पाक में गुरु, शीतल तथा अजीर्ण करने वाला है। राज०। Marsilia dentata.

अग्रलोहिता (Agra-lohita)-सं०, स्त्री०, चिल्लीशाक, चेकारी हिं०। रा० नि० व० ७।

अग्रबीज (agra vijah) सं० पु०, बीजाग्र वृक्ष भ, यथा कुरण्ट आदि। हे० च०। Aviviparous plant as the Gomphroena globosa etc.

अग्रब्रीहि (agra vrihih) सं०, स्त्री० मसा-लेदार, कोषद, र० मा०।

अग्रशृङ्ग (Agra shringa)-Anterior fornix।

अग्रहायणः (Agra hayanah) सं० पु०
अग्रहण (Agrahana) हिं० प्र०

मार्गशीर्ष मास अर्थात् अगहन महीना।

अग्रास (Aghras) اغراس अ०, हुक्कुक अमृयात اغراس मुख्यान्तरीय श्लेष्मा हिं०। म्युकस Mucus इं०।

अग्राह्य (Agra-hya) ग्रहण करने के अयोग्य तुच्छ, निस्सार। Un agreeable,

अग्रिमा (Agrima) सं०, स्त्री०, लवली वृक्ष हरफरी हिं०। शोणागच्छ-सं०। श० च०।

अग्रिमोनियम् (या) युपेटोरियम् (Agrimonium Eoupatorium, Linn)-ले०, गाफिस घासकीस, गाफिस-अ०। Agrimony। फा० इं० २ भा०।

अग्रिमोनी (Agrimony)-इं०, गाफिस अ०। See-Ghafis।

अग्रुः (agruh)-सं० स्त्री०, अंगुली। अंगुश्त फा०। फिंगर Finger।

अग्रेस्टो (agreato) रू० अपक्व-द्राक्षारस, कच्चेदाख का स्वरस Juice of grapes फा० इं० १ भा०। दे

अग्रोपाइरम (agropyrum) दूर्वा, ग्रन्थि, सफेद दूब। Couch (Triticum)।

अग्रोपाइरम रिपेंस (agropyrum

pons)-से० । सफेद दूब-हिं० । Couchgr ass.

अग्रोस्टिस एल्बा (agrostis alba, Linn) से० श्वत दूर्वा, सफेद दूब ।

अग्रोस्टिस डाइएण्ड्रा (Agrostis diandra, Roxb)-से०, येनाकोमो, Diandrous bent grass इं० इं० हिं० गा० ।

अग्रोस्टिस लिनीएरिस (Agrostis linearis Roxb)-से० 'दूब,' अनेपा (Thread like bent grass) इं० हिं० गा० ।

अग्रोस्टिस साइनास्युरिआइडीस (Agrostis cynasurcoides)-से० दूब । हरी दूब ।

अग्लफ (aghlaf)-أغلف अ० बेमुखना, खतना न किया हुआ, जिसका खतना न हुआ हो । अनतर्कसाड़ृज Uncircumcised.

अग्लूकूमा (aghlukuma) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] । [illegible] मोतिया, [illegible] हरित [illegible] मानिया । यह सबसे बुरे प्रकार का मोतिया बिन्द है जिसमें नेत्र [illegible] हो जाता है और [illegible] हो जाता है । यदि [illegible] में [illegible] [illegible] यह [illegible] होता है, [illegible] (Couching) [illegible] है, [illegible] (Glaucoma) ।

अग्शियह (aghshiyah) [illegible] (अ० ब०) [illegible] ।

[illegible] मेम्ब्रेन्स Membranes इं० ।-देखो 'गिशाअ' ।

अग्शियह जुलालियह (aghshiyah zulaliyah)-أغشية زلالية अ० ।, देखो, 'अग्शियह बल्गमियह' । Mucous membranes ।

अग्शियह बल्गमियह (aghshiyah balghamiyyah)-أغشية بلغمية अग्शियह जुलालियह أغشية زلالية अ० । बल्गमी झिल्लियाँ, लुआबी झिल्लियाँ-उ० । [illegible] कला, श्लैष्मिक कला, वह पतली चमकदार झिल्ली जिसकी सतहें एक चिपचिपादार तरल (स्नेह) बनाती हैं जिससे संधियाँ फिसलती और [illegible] हैं, इससे उनकी गति में सरलता होती है । [illegible] Synovial membranes इं० ।

अग्शियह माइयह (aghshiyah maiyah)-أغشية مائية [illegible] [illegible] ।

[illegible] । [illegible] Serous membranes ।

अग्शियह मुख्ातियह [illegible] [illegible]

[illegible]

की झिल्लियाँ, दिमाग के परदे-उ० । मस्तिष्क कलायें, मस्तिष्कावरण-हिं० । मेनिन्जीज़ Meninges इं० ।

नोट—यह दो झिल्लियाँ हैं जो मस्तिष्क पर लिपटी हुई हैं। इनमें प्रथम को अंतरावरण जो एक पतली झिल्ली है मस्तिष्क के चारों ओर लिपटी है, उम्म रक़ीक़ أم رقيق (Pia mteor) कहते हैं, और दूसरे बाह्यावरण जो स्थूल होती और अस्थियों से चिपकी रहती है, उम्म ग़लीज़ أم غليظ [Duramator] कहलाती है।

नोट—यह उपरोक्त वर्णन यूनानी हकीमों का है, किन्तु अर्वाचीन शरीरशास्त्रविदों के अन्वेषण के अनुसार उपरोक्त दो झिल्लियों के अतिरिक्त एक झिल्ली और मालूम हुई है जो उक्त दोनों के मध्य में स्थित है जिसे हिन्दी में मध्यावरण और अरबी में अङ्कबूती عنكبوتي तथा अंगरेज़ी में अरकनॉइड (Arachnoid) कहते हैं विशेष विवरण यथा स्थान देखिये।

अग्शियतुन्नुखाअ [Aghshiyotunnu khaa] أغشية النخاع अग़्शिय नुखाइयह أغشية نخاعية अ० परवाहाय नुखाअ پرده هاى نخاع हराम मग़ज़ के गिलाफ़, झिल्लियाँ उ०। सौषुम्नावरण हिं०। मस्तिष्क के सदृश सुषुम्ना पर भी तीन झिल्लियाँ हैं। इनके नाम वही हैं जो मस्तिष्क की झिल्लियों के हैं Spinal membranes.

अग्शियतुल् जनीन (Aghshiyotul janin) أغشية الجنين अग़्शियह जनीन أغشية جنين अ०। जनीन के परदे, जनीन पर की तीन झिल्लियाँ-उ०। गर्भकला भ्रूणावरण हिं० फीटस मेम्ब्रेन्स Foetal membranes डेसिडुअस Decidus इं०।

ये तीन कलायें हैं जो जरायु के भ्रूण के चारों ओर लिपटी रहती हैं। इनमें से प्रथम को हिन्दी में भ्रूण बाह्यावरण, अरबी में अम्नफ़स (أنفس) और अंगरेज़ी में कोरिऑन Chorion और द्वितीय को क्रमशः भ्रूणांतरावरण, मशीमह (مشيمه) तथा एमनिऑन amnion और तृतीय को क्रमशः भ्रूणमध्यावरण, सफ़ाइफ़ी لفائفى और एलनटाइस allantois कहते हैं।

अग़सान (aghsan) أغصان अ० ब०, गुस्न غصن-ए०। शाखाएं, टहनियाँ। ब्रांचेज़ Branches।

अघनम् (aghanam) सं०, क्ली० दधि, दही, हिं०। दई-बं०। कर्ड Curd इं०। इलां०।

अघडोड़े (aghadode)-सं० अडूसा, अरूस, हिं०। adhatoda vasika लैं०।

अघविष (aghavishah) सं०, पु० सर्प, साँप। Serpent, snake.

अघाट. (aghatah) सं०, पु०, अपामार्ग। achyranthes aspera लै०। फा०।

अघाडा—ड़ा (aghada ra) हिं०, ... काँचघाली। achyrantes aspera →

अघोड़ी—ड़ो (aghare,-ri) गु० मार्ग।

अघोरनृसिंह रस (aghor nrisinha rasah) सं०, पु० सन्निपातिक ज्वर में प्रयुक्त होनेवाला रस।

अघ्ना (aghna) सं०, स्त्री० गति, गउ । गउ वं० ।

अघ्न्या (aghnya) सं०, स्त्री० स्त्रीवाचि गाय । काउ Cow ई० । गाभी-बं० ।

अङ्कः (ankah) स० पु०, Limb of the body शरीरावयव । कोलो वं० । रा० नि० व० १८ । धा० वि० ७ अ० । (२) चिह्न रेखा Mark, spot (३) Sin पाप, Pain दुःख । मं० कट्टिकम् । (४) number आंक, सङ्केत, संख्या ।

अङ्कडास (Ankadas) बं० कुकुर जिह्वा बं० हिं०, Leea styphylea लै० । कुकुर जिह्वा हिं० बं० । L. Sambucina Willd Staphylea Indica लै० । ई० मे० मे० ।

अङ्कतिः (Ankatih)-स० पु० Air, Wind वायु । नि० । Fire अग्नि । वि ।

अङ्कनः (Ankanah) स० पु० आंकोल, आ कोटरूप ढेर । आंकोड गाछ-बं० Alangium decapetalum लै० म० ।

अङ्कना (Ankana) हिं० लिखना, छापना मोलभाव करना, चिह्न करना ।

अङ्कपादम् [Ankapadam] स० क्ली०, पादचिह्न पैर का निशान । Footprint

अङ्कपाली [ankapali) स०, स्त्री०, Midwife धात्री, दाई । यथा वेदिकार्थं यत्न प्रय विशेष "धात्री वेदिकयोरपि । मे अ दुष्क । (२) Embracing आलिङ्गन ।

अङ्कब [aankab] عنکب अ० मछली भेद । a kind of fish ।

अङ्कबूत [Anka but] [عنكبوت] अ०, मोर मगस [شبوركس] फा०, मकड़ी हिं । a Spider

अङ्कबूतिय्य (aankabutiyyah) عنكبوتيه अ० । मकड़ी के जाले का सा परदा । नेत्र का चतुर्थ परदा । देखा—तबकये अंकबूतिय्यः ।

अङ्करी (ankari) } हिं०, स्त्री akind of vc
अकरी (akari) } tch [Viola sativa]
रयाड़ी वांड़ी ।

अङ्कलिगे [ankalige] कना०, अंकोल, ढेरा Alangium decapetalum लै० । फा० ई० २ भा० ।

अङ्कलेख्य Anklekhyah } सं०, पु० वि
अङ्कलोद्य Ankalodyah } आंड़ पुष्प हि०
कॅकफोमूल-बं० [Marsilea dentata] लै० । बं० श० ।

अङ्कशः [ankashah] सं०, पु० कोड़स्थ बालक । कोलेर छेले बं० ।

अङ्का, ङ्की [anka, nki] सं०, स्त्री मृदङ्ग विशेष । शब्द ।

अङ्कना (ankana)-हिं० परखना, अवधान, दाम कूतवाना । To cause to value, to examine, as cloth, toapprove of ।

अङ्कालन (ankalan)-हिं० ।

अङ्काव (ankava)-हिं०, पु० निरख, दर, माल का अन्दाज़ । (Valuation) ।

अङ्कित (ankit) चिह्न किया हुआ, मुद्रित, चिह्नित (Marked, examined, valued, paged) ।

अङ्कडु (Ankudu)-तेo कुरा, कुटज, कुरैया Holarrhena anti dysenterica, Linn तेo । सo फाo इo ।

अङ्कडु'कर्र (Ankudu karra) तेo गम्बीर, कत्था । Uncaria gambir, Roxb (wood of) सo फाo ।

अकुंडु कोडिश (ankudu kodish) तेo तेo मीठा इन्द्रयव, इंद्रजौ । Wrightia tinctoria, R Br (Seed of) सo, फाo इo ।

अकुंडु—चेट्टु (amkudu-chettu) तेo (पo वo)

अकुंडु—चेट्लु (amkudu chetlu) ते (प व)

अकुंडु—मानु (amkudu manu) ते (प व)

अकुंडु-मानुलु (ankudu manulu) ते (प व)

कुड़ावृक्ष, कुटजवृक्ष, कुरैया । सo फाo इo । Holarrhena anti dysenterica (Tree of)

अकुंडु—वित्तु (amkudu vittu(तेo पo वo)

अकुंडु—वित्तनमुलु (amkudu vittanamulu) तेo (पंo वo) ।

अकुंडु—वित्तुलु (amkudu vittulu) कड़ुआ इन्द्रजौ, इन्द्रयव तिक्त-हिo । Holarrhena anti dysenterica R Br Seeds of । सo फाo इo ।

अंकुर (Ankurah सं०, पुo a plantlet, a seed bud, a shoot, or sprout, a germ प्ररोह । अँखुआ, कुनगी, अंकुरा । पौक पo पाo उo ६६ श्रo । इसकेपर्य्याय—अभिनवोद्भिद् (अ) । उद्भिद, पुरोह, अङ्कुर, [रा] रोह [ह] । जल । रुधिर । लोम । मुकुल । फल । सर्व्वत्र मेo रत्निर्क । अभिनवोद्भिद् । मेo ।

अंकुरआना (ankur ana) उगना, जमना, कह । Germinate, sprout ।

अंकुरक (Ankurakah) संo, पुo पक्षि वास स्थान, घोंसला । पंo शo । a nest ।

अंकुरित (ankurit)-हिo-पुo अंकुर सहित कुनगी वाला ।

अंकुरितयौवना [ankurit vouvana] संo स्त्रीo युवती स्त्री, युवा अवस्था की प्रथम दशा ।

अंकुर-विशिष्ट-आवरण [ankur vishishta avarana)

अंकुल [ankul] हिo ढेरा, अकोल । alangium decapetalum, Lam ।

अङ्कुले (ankule)-हिo अंकोल' ढेरा alangium decapetalum, Lam तेo ।

अंकुशग्रह (ankush grah)-हिo सo, पुo महावत, फीलवान ।

अंकुशः(ankushah)-सo, पुo process इo । मo शाo हo शo रोo १ अंकुश-सo । दवाo । हिo, पुo, (शo, मo, आंकड़ी, लोहे का एक छोटा शस्त्र -जिससे हाथी चलाया जाता है ।

अंकुश्त (ankusht)।

अंकुसा आफिसिनेलिस (anobusa officinalis)—लै० 'गावजुबान'।

अंकुसा टिंकटोरिया (anchusa tinctoria, deav)—लै० एक पौधा है जिसका तैल औषधि कार्य में आता है। मेमो०।

अंकुर—कु [ankur ku]—स० पु० अंकुर हि०। a sprout, a germin-इं०। दे० च० ४ का।

अंकूलग [ankulang]—ता० असगंध Withania Somnifera लै०

अंकूलिया[ankuliya] }
अंकूली [ankuli] } गु०।

अंकेरिया गेम्बियर (Uncaria Gambier)—लै० कत्था वृक्ष, 'खैर वृक्ष'। Gambier—इं० । इं० मे० मे०।

अंकोएड [Ankoed] }
अंकोएल [Ankoel] } स० ढेरा, अंकोल Alangium decapetalum—लै०। इं० मे० मे०।

अंकोट—ठ [Ankotah thah]—स०, पु० 'अंकोल' अंकोटक वृक्ष, ढेरा। Alangium decapetalum—लै०। र० मा०, सु० चि० अ० ३५, शा० पू० १ अ०, सु० च०।

अंकोढ (ankodha) हिं० ढेरा, अंकोल। See ankol

अंकोरना (ankorana)—अकोरना, घूस, भेंजना

अंकोटक (ankotakah)—स० पु० ढेरा आकोड़गाछ, घला आँकोड़-बं०। alangium Hexapetalum। भा०। रा० नि० व० ६

अंकोट गुटिका देखो अंकोल।

अंकोठ वटक (ankotha vatakah)—स० पु०।

अंकोल (ankol)—हिं० }
अंकोल (ankolah) } —स० पु० अंकोटक वृक्ष ढेरा। alangium Hexa detalum रत्नी०, भा०, म०, च० १ म० अतिसार चि० अंकोल मूल कल्कः। वा० ३ ३८ अ०।

अंकोलक (ankolakah)—स० पु० अंकोटा वृक्ष, ढेरा। कांकरोल, आंकड़ा-बं०। र० सा० सं०। alangium Hexapetalum लै०।

अंकोल कल्क।

अंकोल तैलम् (ankola tailam) स०, क्ली०, ढेरा के बीज का तैल। गुण-अंकोल तैल वात नाशक और इसकी मालिश चर्म रोग नाशक तथा पूर्व वैद्य एवं महर्षि लोग इसको कफ नाशक बतलाते हैं। वै० निघ०।

अंकोल [ankol]—हिं०, अकोला, अङ्कुल, काला अकोला, टेरा, ढेरा, थैल आङ्कल, हिं०, द०।

संस्कृत पर्य्याय—अंकोठो दीर्घकीलः स्यादंकोलश्च निकोचकः" अंकोटः, दीर्घकीलः, अंकोलः, निकोचकः, [म०] ...

कटिशूल, अतिसार और विशाच पीड़ा को दूर करने वाला है। (नि० र०)

अङ्कोल के बीज—शीतल, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मन्दाग्नि कारक, भारी, रस और पाक में मधुर, बलकारक, कफकारी, सारक, स्निग्ध वृष्य (वीर्यवर्द्धक) तथा दाह, वात, पित्त, क्षय, रक्त विकार, कफ, पित्त और विसर्प का नाश करने वाले हैं। (नि० र०)

अङ्कोल का अर्क—शूल, आम, सूजन, ग्रंग्रह और विष को नष्ट करता है।

अङ्कोल तैल—इसको पूर्व वैद्य एवं महर्षियों ने वात कफ नाशक और मालिश करने से चर्मरोग नाश करने वाला कहा है। (वै० निघ०)

विषैले अंजन से नेत्रोंमें अंधता उत्पन्न होने पर अकोल के फूलों का अञ्जन नेत्रों में लगाने अन्धता दूर होती है। (सुश्रु०)

अंकोल की जड़ की छाल बकरी के मूत्र में पीस कर पीने व लेप करने से चूहे का विष नष्ट होता है। (वा०)। इसकी जड़ की छाल दुग्ध के साथ पीस कर पीने से कुत्ते का विष दूर होता है। (भाव०)। इसकी मूल त्वचा का चूर्ण चावलों के जल के साथ सेवन करने से अतिसार और संग्रहणी में लाभ होता है। (च० द०)

अङ्कोल के सम्बंध में यूनानी म

यूनानी ग्रंथकार इसे पहिली
(किसी २ के मत से दूसरी कक्षा
तर मानते हैं।

हानिकर्ता—श्लेष्मा अधिक उत्पन्न करता है। दर्पघ्न-काली मिर्च और शीतल व रूक्ष वस्तुयें। प्रतिनिधि किसी २ रोग में पुनर्नवा है। मात्रा-४ या ५ मा० तक। विशेष प्रभाव विपाक व शोथक्षय कर्ता।

हृदय को बलप्रद, कफ और वायु के विकारों को हरण करता, उदर की पीड़ा को हरण करता, एमिघ्न और इसकी जड़ के छाल का चूर्ण १ माशा कालीमिर्च के साथ बवासीर को बहुत गुण कारक है।

इसके अत्यधिक उपयोग से आमाशय निर्बल हो जाता है, और शिर में झनझनाहट के साथ मीठा दर्द शुरू हो जाया करता है। गुदा स्थान में जलन मालूम होती है। नेत्र पीले पड़ जाते हैं, निद्रा कम आती है। एवं मास्तिष्क कार्य करने की इच्छा अधिक बढ़ जाती है। ऐसी अवस्था होने पर शंखपुष्पी चूर्ण ४ मा० दुग्ध पावभर में उबालकर ठंडा करके स्वाद के अनुसार मिश्री मिलाकर पिलाने से तत्काल समस्त विकार नष्ट होते हैं। अङ्क उष्ण और चरपरी होती है। फल ठंडा पौष्टिक शरीर को मोटा करने वाला होता है। यह आहार कार्य में आता है। किन्तु अधिक खाने से गरमी मा म होती है।

अङ्कोल के विविध नाम

अङ्कोल

देशी

रेचक तथा

आती है।

करने के

हित व्यवहार में आता है। (डा० सखाराम) अर्जुन।

मि० मोहीदीन शरीफ़ के पर्यामानुसार उक्त औषधि कुछ एक गुप्त योगों का, जो दीर्घ रोग, स्वचारोग तथा कुष्ठ रोग की चिकित्सा में अर्काट तथा बैंगलोर प्रभृति स्थानों में अत्यधिक प्रचार पा चुके हैं, एक प्रधान अवयव है। और यह स्वानुभव का वर्णन करते हुये कहते हैं कि मैंने उक्त छाल को कुछ कुष्ठ रोगियों को प्रयोग कराया और अनेक व्याधियों में मैंने इसे १॥ रत्ती की इतनी कम मात्रामें भी वामक प्रभाव युक्त पाया। अधिक मात्रा (अर्थात् २५ रत्ती) में उपयोग में लाने पर यह योग्य और बेख़तर वामक तथा थोड़ी मात्रा में मलशोधक और ज्वरघ्न औषधि सिद्ध हुआ। इससे भी न्यून मात्रा में यह भारत वर्ष के सर्वोत्तम परिवर्तक वल्यप्रद औषधियों में से है।

इसकी त्वचा अत्यन्त तिक्त है, अतः त्वचा रोगों में इसकी प्रसिद्धि बिना आधार के नहीं। यदि इसको पर्याप्त काल तक लगातार उपयोग में लाया जाय तो मदार की अपेक्षा वमन पर इसका प्रभाव अधिक होता है।

वे पुनः वर्णन करते हैं कि यह इपिके काना (Ipoonounnha) का एक उत्तम प्रतिनिधि है और प्रवाहिका के अतिरिक्त उन समस्त रोगों में लाभ दायक सिद्ध होता है, जिनमें कि इपिकेकाना व्यवहृत है।

ज्वरघ्न तथा स्वेद जनक होने के कारण ज्वर नष्ट करने में यह उपयोगी पाया गया है। मलशोधक, मूत्र जनक और ज्वरघ्न प्रभाव हेतु इसकी जड़ के छाल की मात्रा ३ से ५ रत्ती तक और परिवर्तक रूप से १ से २॥ रत्ती तक है। यह कुष्ठ एवं उपदंश में प्रयुक्त होता है। देशी लोग इसे विशेषतः विषैले जानवरों के काटने में विषघ्नतया प्रयोग करते हैं।

औषधि निर्माण—अंकोलचूर्ण, जड़ की छाल छाये में सुखाकर चूर्ण कर बारीक छान लेवें और बोतल में सुरक्षित रक्खें। मात्रा वमनहेतु २५ रत्ती (५० ग्रेन)। (मा० रा०)

इसकी जड़ की छाल चावल के पानी में पीस कर थोड़ी सी शहद के साथ अतिसार में बरता जाती है। आमातिसार और रक्तातिसार में मूल त्वचा का चूर्ण ५ रत्ती दिन में २-३ समय सेवन कराना चाहिये।

यह विषम ज्वरों में भी उपयोगी है। ज्वर की अवस्था में १॥ से ४ रत्ती देने से स्वेद आकर ज्वर वेग कम हो जाता है व तृषा, दाह आदि ज्वर के उपद्रव शमन होते हैं।

इसकी जड़ का शीत कषाय तथा क्वाथ घी के साथ श्वान विष नाशक है। यह उदर शूल, कृमि, प्रदाह और उपदंश (२॥ माशे का चूर्ण) प्रभृति विषों का शमन करने वाला है। इसकी मूल त्वचा द्वारा निर्मित तैल का संधिवात में बाह्योपयोग होता है। कम मात्रामें यह रसायनिक गुणोंको करता है।

मसूढ़े और ओष्ठ सूजने पर मधु के साथ प्रलेप करने अथवा इसके काढ़े से कुल्ली करने से लाभ होता है एवं मसूढ़ों से खून बहना बन्द होता है। विषविकार नाशक तथा कुकर खांसी की प्रथमावस्था में प्रयोग करने से लाभ करता है।

इसपर रखकर कायलों की आग करें, इसकी गरमी से तैल टपक कर प्याले में आवेगा इसी को व्यवहार में लावे।

यदि किसी धारदार शस्त्र से क्षत होजाय तो अंकोल तैल में रुई भिगा कर पट्टी बांध देवें तो बहता हुआ रक्त भी रुक जाता है और घाव भी शीघ्र सूख जाता है।

अंकोल तैल १ पाव, मोम १ छ०, अग्नि पर जलाकर रख दो, २ मा० भुना तूतिया मिला दो, और ठंडा होने पर भली प्रकार मिला कर किसी बर्तन में रख दो। यह मलहम दाद, खुजली, भगंदर, नासूर, क्षत, फोड़ा, फुन्सी प्रभृति समस्त त्वचा सम्बन्धी रोगों को नष्ट करता है।

५ बूंद तैल मिश्री में मिलाकर विसूचिका रोगी को उपयोग कराने से उसे लाभ होता है।

५ से १५ बूंद तक तैल उष्ण दुग्ध में मिला कर मिश्री डाल कर प्रति दिन पीना शरीर को बलवान बनाता है और प्रमेह, शिथिलता, सिर में चक्कर आना तथा आंखों में अंधेरा आना आदि को दूर करता है।

३॥ मा० तैल उष्ण जल से पीना खूब दस्त लाता है और पेट के दर्द व बद हजमी को दूर करता है।

सिर में दर्द हो और किसी तरह अच्छा न होता हो तो उक्त तैल को २० बूंद की मात्रा में बकरी के दूध में थोड़ा सा शहद डालकर पिलाना लाभदायी है। इससे मस्तिष्क पुष्ट होता है।

इसके तैल को तिल के तेल में मिला कर लगाना बालों को बढ़ाता है और सिर के जुओं को दूर करता है।

गरम पानी में तैल डाल कर कुल्ली करना मसूढ़ों की सूजन, दर्द, खून बहने का आराम करता है।

चेचक के दाग पर गेहूं के आटे में हल्दी और अङ्कोल का तेल मिलाकर पानी से गीला करके उपटना रंगको ठीक करता है और कुछ खूबसूरती करता है।

नोट—प्रायः निघण्टुकार अंकोल को रेचक मानते हैं पर कई प्राचीन आचार्य इसे संग्राही कहते हैं। चरक सुश्रुत ने विषघ्न माना है पर संग्राही विरेची गुण का उल्लेख देखने में नहीं आया।

अङ्कोल फल सङ्काश (Ankol phal-sankashah)-सं०, पु०, फल विशेष। संसार में "पिस्ता" नाम से प्रसिद्ध है। वै० श०।

अङ्कोलम् (Ankolam)-मल०, ढेरा, अंकोल Alangium decapetalum, Lam से०। इं० मे० मे०।

अङ्कोलमनचर (Ankolam nachar)

अङ्कोलम् चेट्टु (Ankolam ch...) अकोला, अंकाल, ढेरा। Alang... ... capetalum, Lam-ले०। स० फा०

अङ्कोलमु (Ankolamu)-ते०, ढेरा अंकाल A decapetalum, Lam। इं० मे० मे०।

अंकोला (Ankola)-म०, अंकोली (Ankoli)-कना० अंकोले [Ankole] कना० अंकोल्य [Ankolya]-गु० अंकोलुम [Ankolum] ता० — ढेरा, अंकोल अकोला Alangium decapetalum, Lam से० । स० फा० इं० ।

अंकोल्ल० [Ankollah]-सं० पु०, Cedrus deodara से० । देवदारु । र० नि० । व० २३, धा० ३, ३८ श्लो० ।

अंकोल्लक (Ankollakah)-सं०, पु०, अंकोल वृक्ष, ढेरा मद० व० १ । Alangium Hexapetalum Lam

अंकोल्लसार (Ankollasarah)-सं०, पु०, मालव प्रसिद्ध स्थावर विष भेद । A kind of poison वै० श० ४ का० । अफीम, संखिया प्रभृति । औ० श० ।

अंकोहर (Ankohar)-हिं०, ढेरा, अंकोल Alangium decapetalum Lam से० ।

अंखुरा-विरई (Ankhura virai)-ता०, पुनीर के बीज । तुख्मे काफ्नजे हिन्दी-फा० । Withania (puneeria) Coagulans, Dunal से० । स० फा० इं० ।

अङ्गम् (Angam)-सं०, क्ली० (१) (My rrha)बाल हिं० । सुगंध बोल-बं० । रा० नि० व० ६ । [२] शरीर, शरीरावयव, तन, अ० An organ-इं० । शरीर के छोटे २ भागों को अंग कहते हैं, जैसे हाथ, पैर, अंगा, हृदय, मस्तक, चक्षु । कुछ अंग पोले होते हैं और थैली के समान होते हैं । जैसे-मूत्राशय, शुक्राशय आमाशय, गर्भाशय । कुछ अंग नली के सदृश होते हैं । जैसे-रक्त की नलियां पाचक रसों की नलियां, शुक्र की नलियां, मूत्र की नलियां रा० नि० व० १८ । [३] उपसर्जनभूत । हे० च० मानार्थ पु० [an earth]. भूमि । हिं० पु०, मित्र ।

अङ्गक [Angaka]-सं०, [१] Body शरीर[२] अगर Aloe wood ।

अङ्गकर [Anga kara]-बं० घारकरेला, किरार । Momordica Dioica, Roxb से० । फा० इं० २ भा० ।

अङ्गगौरवम् [Anga gouravam]-सं० क्लीं० शरीर का भारीपन, शरीर गुरुत्व । गा भार बं० । वा० नि० ११ अ० । Heaviness of the body

अङ्गग्रह [Anga-grahah]-सं० पु०, गठिया अंगवेदना । वा० नि० १६ अ० । शरीर का दर्द शारीरिक व्यथा शरीर पीड़ा, अकड़ाई, वात रोग । [Bodily pain]

अङ्गग्लानि [Anga glanih]-सं० स्त्री० देह की जड़ता, देह आलस्य, शरीर का जड़ हो जाना (Langour) वा० चि० २२ अ० ।

अङ्गघात [Anga ghatah]-सं० पु०, देह में चोट का लगना, अङ्गाघात । Bodily pain से० श० ।

अङ्गच्चय [Anga-chayah]-सं०, पु०, पेरी नियम [Perineum] गुदा और वृषण का मध्य भाग । [illegible] श० । वै० नि० ।

गात्रतोद, गात्रशूल, शारीरिक वेदना। वै० श० Bodily pain।

[अं]गशोथः (Angashothah)-सं०, पु० (Swelling of the body) कायशोफ, शरीर की सूजन।

[अं]गशोषः (Anga sheshah)-सं०, पु०, धातुक्षयरोग विशेष, गात्रक्षीणता, देह का सूखना, क्षय।

[अं]गशोषणम् (Anga-shoshanam)-सं०, क्ली०, अंग की शुष्कता (रूक्षता) शरीर का सूखना वा० उ० ३ अ०।

[अं]गस (Angas)-सं० पक्षी। A kind of bird.

[अं]गसंगम् (Anga-sangam) सं०, क्ली०, मैथुन, स्त्रीप्रसङ्ग, (Coition, Copulation)

[अं]गसदनम् (Anga sadanam) सं० क्ली० शरीरावसाद, अंग की शिथिलता, अवसन्नता जड़ता। वा० नि० १२ अ०। (Depression)

अंगसाद (Anga sadah)-सं० पु०, अव सा[द], अवसन्नता। हारा०। (Depression)

अंगसुन्दर (Anga-sundarah)-सं०, पु०, (१) (Cassia Tora) चक्रमर्द, चकवड़, हिं०। दादमर्दन-बं०। अम (२) (Aloe wood) अगर।

अंगसुप्ति (Anga-snptih) सं०, स्त्री०, (Anæsthesia) काय स्पर्शाज्ञता, शरीर स्वाप, अंग का सुन्न अथवा जड़ हो जाना। गात्रेर असाड़ता-बं०।

अंगसेनः (Anga-senah)-सं०, पु०, अग स्तिद्रुम। वाकस गाछ-बं०। रत्ना०।

अंगस्तूरा छाल (Angastura chhal) हिं०।

अंगस्तूरा त्वक् (Angastura tvak) हिं०

अंगस्तूरा बार्क (Angustura bark) इं०।

अंगस्तूरा बार्क (Angustura bark)-इं०

अंगस्तूरा छाल (Angustura Bark)-इं०

अंगस्तूरा छाल (Ousparim cortex) -ले०।

अंगस्तूरा छाल—Angastura chhal हिं०, कृष्ण अङ्गस्तूरा पोस्त अंगस्तूरा-हि०। अंगस्तूरीत्वक्—हिं०। कस्पेरीई कार्टेक्स (Casparice Cortex) ले०। कस्पेरिया बार्क Ousparia bark, अङ्गस्तूरा बार्क (Angustura bark-इं०। रयूटेसीई अर्थात् नारङ्गी वर्ग N. O. Rutaceæ
(आफीशल official)

उद्भव स्थान—दक्षिणी अमेरिका के उष्ण प्रदेश।

लक्षण—उपरोक्त औषधि कस्पेरिया फ़ेब्रिफ्यूगा Ousparia Febrifuga वृक्ष की छाल है जो औषधि मुख्य प्रयोग में आते ये सपाट, वक्राकार या एक दूसरे पर [...] हुये टुकड़े हैं जो ६ इं० या इससे अधिक लम्बे, $\frac{१}{१२}$ इं० मोटे स्थूल होते हैं।

त्वचा का बाह्यतल चिन्हयुक्त एवं पीताभायुक्त धूसरवर्ण का होता है, यह ऊपरी त्वचा सरलता पूर्वक भिन्न की जा सकती है। और इसके निम्नतल से श्याम धूसरवर्ण का रेज़िन (राल) जैसी वह निकल आती है। भीतरी तल सूक्ष्म धूसर वर्ण का होता है। यह कुल बहुधा परत दार और कठोर होती है और इसको जहां से तोड़ें वहीं से टूट जाती है। टूटा हुआ तल रालयुक्त दृष्टि गोचर होता है। गंध—अप्रिय। स्वाद—तिक्त या उग्र।

परीक्षा—कुचला वृक्ष—छाल स्वरूप आकृति में इस उपरोक्त छाल के समान होता है। अतः इस में प्रायः उसका मिश्रण किया जाता है। इसकी एक साधारण परीक्षा यह है कि कुचला वृक्ष के छाल के भीतरी तल पर शोराम्ल [Nitric acid] के लगाने से उसमें मूलीन होने के कारण रक्त वर्ण उत्पन्न हो जाता है। जिससे इसकी ठीक परीक्षा हो सकती है।

रसायनिक संघटन—इसमें ये निम्न चार अलकलाइड्स [क्षारीय सत्व] होते हैं, यथा [१] एक तिक्त सत्व "कस्पेरीन (२) गैलेपीन, (३) गैलेपीडीन, (४) कस्पेरीडीन और एक सुगंधित तैल।

असम्मिलन (संयोग विरुद्ध)। -खनिजाम्ल और धात्व लवण।

गुण—सुगंधित एवं तिक्त, वल्य और ज्वरघ्न। अधिक परिमाण में उपयोग में लाने से यह आमाशय एवं आंतों में प्रदाह उत्पन्न करता है। यूरुप में इसको कैलम्बा के सदृश क्षुधा वर्धन हेतु अजीर्ण तथा निर्बलता में वरतते हैं। परन्तु इस में उग्रगन्ध प्रभाव के कारण अमेरिका में इसे विषम ज्वर और प्रवाहिका में उपयोग में लाते हैं।

आफिशल योग [Official preparations]

(१) इन्फ्यूज़म् कस्पेरी [Infusum Cuspariae] इन्फ्यूज़न आफ़ कस्पेरिया Infusion of Cusparia]-अं० ना०। अंगस्तूरा फांट हि०। खिसांदहे अंगस्तूरा ति० ना०।

निर्माण-विधि—कस्पेरिया बार्क का चूर्ण एक आउंस खौलता हुआ परिस्रुत जल एक पाइण्ट, १५ मिनट तक भिगोकर छान लेवें।

मात्रा—१ से २ फ्लुइड आउंस (२८.४ से ५६.८ क्यु० से०)।

(२) लाइकार कस्पेरी कन्सेण्ट्रेटस [Liquor Cuspariae Concentratus]-ले०। कन्सेण्ट्रेटेड सोल्युशन आफ़ कस्पेरिया [Concentrated Solution of Cusparia]-अं०। अंगस्तूरा घन मद्य-हि०। सा-इल अंगस्तूरा गलीज़ ति० ना०।

निर्माणविधि—कस्पेरिया बार्क का ४० नं० का चूर्ण १० आउंस, अलकुहाल (२०%) २५ फ्लुइड आउंस या आवश्यकतानुसार। कस्पेरिया को ४ फ्लुइड आउंस अलकुहाल से तर करके पर्कोलेटर में जमा देवें और तीन दिन तक पृथक रख दें। पुनः अवशिष्ट अलकुहाल को १० बराबर भागों में विभाजित करके १२-१२ घण्टे के अन्तर से एक-एक भाग अलकुहाल डाल कर इसे पर्कोलेट कर लेवें, यहाँ तक कि एक पाइण्ट द्रव प्राप्त हो जाये।

माशा—आधे से १ फ्लुइड ड्राम (१.८ से ३.६ क्युo सेo)।

परीक्षित प्रयोग।

(१) टिङ्क्चूरा कस्पेरीई आधा फ्लुo ड्राo
टिङ्क्चूरा फेल्लिसाई ५ बूंद (मिनिम)
सोडियाई बाइ कार्ब १५ ग्रेन
इन्फ्युज़म रीहाई आधा आउंस पर्यन्त
ऐसी एक एक मात्रा औषध दिन में ३ बार देवे। एटोनिक डिस्पेप्सिया (आमाशयिक शिथिलता जन्य अजीर्ण) में लाभजनक है।
(२) टिङ्क्चूरा आरन्शियाई ३० मिनिम
स्पिरिटस एमोनिया एरोमैटिक १५ मिनिम
सिरपस ज़िञ्जिबेरिस ३० मिनिम
इन्फ्युज़म् कस्पेरीई १ आउंस पर्यन्त
ऐसी १ १ मात्रा औषधि दिन में तीन बार देवें। पथ्य (टानिक) है।

अंगहर्ष (Anga harshah)-सं०, पु०, (Horripilation) रोमहर्ष, रोंगटे खड़े होना। वा० नि० ३ अ०।

अंगहार (Anga-harah)-सं० पु०, अंग चालन, अंग विक्षेप। (Spasm)

अंगहीन (Anga hinah)-सं०, त्रि०, अंग रहित, विकलांग, जैसे कामादि (काम प्रभृति)।

अंगाकर (Anga-kar.)-हिं०, खारकरेला, किंदार, Momordica Dioica, Roxb, -ले०। फा० इं० २ भा०।

अंगार (Angarah)-सं० पु० (१) (Fire-brand or embors) अंगार, अंगरा, निधूम अग्निपिंड, यथा-"धूमतः काष्ठसम्भूताः ऽङ्गाराः।" वा० सू० ६ अ० अरुणः। (२) अंगार पूर्णपात्र वह वर्तन जिसमें अंगा रखा हुआ हो। हे० मा०। (३) कुरण्टक वृक्ष। कांटी विशेष, पीली कटसरैया, पीतझिंटी, अम्लान वृक्ष। रत्मा०। Yellow amaranth (Musk melon) इं० हैं० गा०।

अंगारकः (Angarakah)-सं० पु०, (१) (Embers) अंगारा, अंगार (२) कुरण्टक हिं०। कांटी जाति-वं०, (Yellow or white amaranth) मे० कचतुष्क। (३)(Wedelia calendulacea) भृंगराज। भंगरा, भंगरैया। रा० नि० व० ४। मा० पू० १ भा० गु० व०। (४) (Barleria Prionitis, Linn) कटसरैया (पात)। (५) कोयला (Coal)।

अंगारक तैलम् (Angarak tailam) सं० क्ली०।

अंगारक मणि (angarak manih)-सं० पु०, प्रवाल, मूंगा-हिं०। कोरल (Coral)-इं० रा० नि० व० १३।

अंगार कर्कटी (Angar karkati)-सं० स्त्री० (Balls or thick cakes of bread baked on coals) अंगार की रोटी अर्थात् लिट्टी, बाटी-हिं०। वाटिका-सं०, ... प्रस्तुत विधि-गोहूं अथवा चना प्रभृति के आटे को जल के साथ संयोग करके कठोर पश्चात् उसमें से थोड़ा २ लेकर चपटी अथवा गोल वटी के आकार की बाटी बनावें, पुनः उन्हें धूम रहित अग्नि के अंगार पर शनैः

शनैः पकावें। बस यही अंगार ककड़ी है। गुण-यह हृदयी, शुक्रल, लघु दीपनी, कफका रक, मलकारक तथा पीनस श्वास और कास को जीतने वाली है। वैद्य० नि०, भा०।

अंगार की वटी हिं० } अंगार कर्कटी
अंगार की लिट्टी हिं० } स०।

अंगारह (Angarah)-उ०, सांसर्गिक कृमि। देखो-अंथ्राक्स (Anthrax) इं०।

अंगारहका टीका (Angarah ka tika) उ०, सांसर्गिक कृमिघ्न सीरम। देखो-एण्ट अंथ्राक्स सीरम स्क्लेवास (Anti Anthrax Serum Sclavos)-इं०।

अंगार कुष्टका (Angar-kushthaka) स०, स्त्री०, हिलावली। हिंगोट, हिंगावली हिं०। (Ingua)

अंगार धानिका (angar dhanika)-स० स्त्री०, अंगार धारण पात्र, अंगार रखने का बर्तन, बोरसी-हिं०, सँझाल-बं०।

अंगार धूप (angar dhupah)-स० पु० (Incense, aromatic vapour) अंगार पर किसी औषधि को डालनेसे जो धूम निकलता है उसे "अंगार धूप" कहते हैं।

अंगार परिपाचितम् (angar-paripachitam)-स० क्लीo, शूलादि पक्वमांस, और शाकों आदि परे पकाया हुआ मांस, Roasted food. नि० अंगार पक, अंगारा पेर पकाया हुआ।

अंगारपर्णी (angar-parni)-स०, स्त्री०, Clerodendron Serratum भार्गी, भारंगी बामन हाटी-बं०। रा० स्वा० स०।

अंगार (का) पुष्प (angar ak pushpah)-स० पु० ओषपुष्पम। जियापुता-हिं०। इंगुदी-बं०। Ingua। रा० र० हिंगु, भा०, गौरी।

अंगारपूरिका [angar purika]-सं० स्त्री० 'रोटक' रोटी। रुटी बं०। Bread।

अंगार मञ्जरी [angar manjari } सं०,
अंगार मञ्जी (angar manji } स्त्री०, करञ्ज

विशेष a species of Bonduc or Bonducella। रा० र०। महा करञ्ज हिं०। डहर करञ्ज बं०। रा० नि० व० ६।

अंगारमणि [angar manih] स० पु० [Coral] प्रवाल।

अंगारवर्णी [angar varni]-स०, स्त्री० 'Clerodendron Serratum' भार्गी, भारंगी। बामन हाटी बं०।

अंगारवल्लरी (angar vallari)-स०, स्त्री०, करञ्ज विशेष (Ovieda verticalata) भाषा में नाटा करञ्ज कहते हैं।

अंगारवल्ली (angar-valli)-स० स्त्री० (Cæsalpinia Bonducella, Fleming) महाकरञ्ज, नाटाकरञ्ज। (२) Clerodendron serratum भार्गी। वा० सू० १५ अ०। सुरसादि। (३) (Ocimum album) तुलसी। भा० पू० १ भ०। (४) abrus precatorius गुञ्जा घूँघची हिं०। कुँच-बं०।

से अंगुलियों की रक्षा दांतों से हो जाती है। इसीसे इसका नाम अंगुली त्राण यन्त्र है। वा० सू० स्था० ।

अंगुली (Anguli)-सं० स्त्री० (१) गज कर्णिका Heliotropium indicum, Linn हाथीशुण्डी मे० स त्रिक (२) A finger अं गुली। अंगुलियों की अस्थियां।

अंगुल्यस्थि (Angulyasthi)-सं० स्त्री०, अंगुलीपर्व, पर्व, पोर्व। Phalanx

अङ्गुश्त [Angusht] انگشت फा० । अंगुली, अंगुठा हिं० । एक माप जो लगभग ६ इंच के बराबर होता है। फिङ्गर Finger ई०।

अङ्गुस्तकोचक (Angusht-koochak) انگشت کوچک फा० । कनिष्ठा, सं० । कानी अंगुली, छोटी अंगुली छगुनी हिं० । लिटल फिंगर Little finger-इं०।

अश्तङ्गु गन्दह् (Angusht-gandah) फा० । हींग हिं० । अंगोज़ह् फा० । बिस्तीत अ० हिंगुः, रामठम् सं० । हिंग म Assafoetida इ० मो० श०।

अङ्गुस्तदराज़ [Angusht-daraz] انگشت دراز फा० । पूर्वांगुरुव, मध्यमा, बीच की अंगुली, लम्बी अंगुली हिं० । मिडल फिंगर MiddleFinger इं०।

अङ्गुश्तदुस्नाम (Angusht-dushnam) انگشت دشنام फा० । अङ्गुस्त सद्दाबह् انگشت سبابه फा० । तर्जनी, प्रदेशिनी, अंगूठे के पास वाली अंगुली । फोरफिंगर Fore Finger इं०।

अङ्गुश्तवर्ग (Angusht—barg)-शीo बधूकर, घृष्यमेद।

अङ्गुश्तबुजुर्ग (Angusht-buzurg) انگشت بزرگ फा० । अङ्गुश्तनर انگشت نر फा० । अङ्गुष्ठा, अंगूठा हिं० । थम्ब Thumb इं०।

अङ्गुस्त हल्क़ह् (Angusht—halkah) انگشت حلقه फा० । अनामिका अङ्गुठी की अङ्गुली, छगुनी [कनिष्ठा] के पास की अङ्गुली-हिं० । रिंग फिंगर Ring finger इं०।

अंगुष (Angushah)-सं० पु०, (१) नकुल नेवला । Mongoose (Viverra mungo) (२) [An arrow] बाण, तीर।

अंगुष्ठ (Angushthah)-सं०, पु०, वृद्धां गुली, अंगूठा Thumb or great toe इं० अंगुश्त बुज़ुर्ग० फ़ा० । पांचों अंगुलियों में से सबसे मोटी अंगुली। रा० नि० व० १८। ३।

अंगुष्ठाना (Angushthana)-सं०, स्त्री० अंगुष्ठ । अंगुलत्राणक, अंगुस्ताना।

अंगुष्ठ० [Angushtha] } [हिं०, पु०, the
अंगूठा [Angutha] } Thumb अंगुष्ठ

अङ्गु [Angu]-अ० प० सू० अङ्गन। मे० मो०

अङ्गूर [Angur]-हिं० फा० इ०, द्राक्ष, दाख हिं० । अंगूर, द्राक्ष-इ० । संस्कृत पर्याय-कृष्ण चारुफला [अ] रसा [शब्दर] मृद्वीका गोस्तनी, स्वाद्वी, मधुरसा [अ], बहुरस [शब्दमा०], प्रियाला, तापसप्रिया, गुच्छ फला, रसाला, अमृतफला, ... ہ हारा, प्राणा, फलोत्तमा और ... ملب द्राक्षा, आंगूर-सं० । इनब عنب अ० । ओज़ुम-तुर० । बादरिस । Vitis Vinifera, Linn, [Fruits Grapes]-ले० । ग्रेप वाइन Grape-vine

ग्रेप Grape, वाइन Vine [tree of] इं०। विग्नी कल्टिवी Vigno, Cultivee फ्रां०। एडलवीनरेबी Edlowoinrebe, रोज़ीनेन Rosinen जर०। दिराक्ष-पज़म, कोटि-मुन्दिरिप-पज़म, दिराक्ष-परम [मो० ग्रा०], कोटि मुन्दि ता० । द्राक्ष पंडु, गोस्तनि पण्डु, द्राक्षा-ते० । मुन्तिरिङ्ङ-पज़म, मुन्तिरि-परम, पचा मुन्तिरिङ्ङ-पज़म [मो० ग्रा०]-मल । द्राक्षि-हरणु [मो० ग्रा०], द्राक्षे-कना० । द्राक्ष, द्राक्षे-महा० । द्राक्ष [मो० ग्रा०] द्रा०, द्राक्ष, मुनक्क-गु० । मुद्र पक्कम मुद्रका (मो० ग्रा०)-सिं० । सबीसी, सब्बासी या तवीसी-बर० । द्राक्षा को० ।

सूर्यताप या कृत्रिम ताप द्वारा शुष्क हुये पक्क अंगूर मुनक्का सूखे अंगूर-हिं० । मुनक्का ब० । गोस्तनी, कपिलद्राक्षा, मृद्वीका, कपिलफला, अमृत रसा, दीर्घफला, मधुवल्ली, मधुफला, मधुलि, हरिता, हराहूरा, सुफला, मृद्वी, हिमोत्तरा, पथ्विका, हैमवती, प्रावृषायणी तथा कालमोदी सं० । मॉनक्क, मवेका, सुक्का द्राक्षा पं० । ज़बीब زبيب मवेज़ مويز मुनक्का منقى अ० । अंगूरे-खुश्क انگور خشک फा० । यूवी Uvæ, यूवी पैसी Uvae passae-ले० । रेज़िन्स Raisins इं०, फ्रां० । रोज़िनेन Rosinen जर० । Monaqqa मोनक्का हिं०, द० फा० । उलर्न्द दिराक्षप् पज़म, उलर्न्दद्राक्ष-परम-ता० । एण्डु द्राक्ष पण्डु, एण्ड-द्राक्ष-पंडु, पण्डु, द्राक्ष-पण्डु ते० । मुन्तिरिङ्ङप् पज़म, उणङ्ङिय मुन्तिरिङ्ङप पज़म (परम)—मल० । वोण द्राक्षि कना० । वेलिञ्ञ-मुद्र-पक्कम, वेलिञ्ञ मुद्रका, सिं० । सबी-सी, सब्बासी या तवी—ति । बीज रहित लघु द्राक्षा किशमिश, बेदाना-हिं०, द० फा० । काकली द्राक्षा, क्षुद्राद्राक्षा, फलोत्तमा, लघुद्राक्षा, निर्बीजा, सुवृत्ता, रुचिफला रिपी, (रसाधिका, लघुद्राक्षा)-सं० । किसमिस, प० गु० म० । किसमिस द्राक्ष-गु० । सुल्टानस Sultanas, रजिन्स Raisins-इं० । किशमिश, अंगूरे द्राक्ष (मो० ग्रा०) फा० । चिक्कुद्राक्षे-कना० । किसमिस पंडु-ते० ।

नोट—पके सूखे हुये खास अंगूर को मुनक्का और छोटे एवं बीज रहित को किसमिस तथा पके और काले वर्ण को गोस्तनी (काली दाख) कहते हैं, काले अंगूरों की काली दाखें और भूरे अंगूरों की भूरी दाखें होती हैं । पर्याय तथा कतिपय नाम से इसके और दो अन्य भेद हैं ।

द्राक्षादिवर्ग अर्थात् द्राक्षावर्ग (N. O. Ampelideae)

उद्भव स्थान—उत्तरी पश्चिमी हिमालय (या भारतवर्ष) अर्थात् पञ्जाब, काश्मीर, काबुल, बलूचिस्थान, अफगानिस्तान, कन्दहार तथा फारस और यूरुप प्रभृति ।

इतिहास—द्राक्षा नाम से अंगूर का वर्णन सुश्रुत और चरक आदि सभी प्राचीन आयुर्वेदीय ग्रंथों में मिलता है । यही दशा यूनानियों तथा अरबी ग्रंथों की है । इसके रूपी एवं उपयोग का ज्ञान इन्हें बहुत प्राचीन काल से रहा है, और मिश्र वालों ने अपने २ दृष्टि-कोण के अनुसार इसके उपयोग एवं गुण धर्म के संबंध में इन्होंने काफी प्रकाश डाला है जैसा कि आगे के वर्णन से विदित होगा । इसके द्वारा प्रस्तुत हुए मद्य के मादक प्रभाव से वे भली भांति परिचित थे । वस्तु आर्यों का 'सोम' तथा यूनानी पुराणों का आरम्भिक मद्य निःसन्देह स्वर्गीय अमृत था ।

शर्बत निर्माण विधि—ताजा द्राक्षा स्वरस १ सेर, जल १॥ सेर शुद्ध स्वच्छ शर्करा २ सेर। सर्व प्रथम शर्करा को जल में डाल कर अग्नि पर रखकर घोलें, पुनः अंगूर स्वरस मिलावें। तत्पश्चात् सम्पूर्ण द्रव का मधुर अग्नि द्वारा यहां तक पकावें कि वह $\frac{२}{३}$ रह जावे। मात्रा—आधा से १ फ्लुइड आउंस (२४ घंटे में ५-६ बार)

डाइमांक—अपक्व अंगूर स्वरस को अरबी में हुस्रम (حصرم) फारसी में गूरह (غوره) अं० मे० वरजूस (Verjuice) तथा रूमी में अग्रेस्टो (Agresto) कहते हैं। यह अपक्व इटलीमें कंठरोगों में व्यवहृत होता है। वसंत ऋतुमें अंगूर की शाखाओं को काटनेसे उनमें से अधिकता के साथ रस निकलता है जो कि त्वचा रोगों में व्यवहार में आता है और यह अब भी यूरप में चक्षु प्रदाह के लिये एक प्रसिद्ध औषधि है।

इसका पत्ता संकोचक है, तथा अतिसार में उपयोग किया जाता है।

मुकर्जी—किशमिश शीतल तथा मृदुभेदक ख्याल किया जाता है और खांसी, प्रतिश्याय तथा पांडुरोग में व्यवहार में आता है।

अंगूर की शकर (Angur ki shakar) हिं०, द्राक्षौज, द्राक्षा खंड, दाख की शर्करा Dextrore।

अंगूरे काबुली (Anguro-kabuli) انگور کابلی फा०, किशमिश काबुली किशमिश। Raisin।

अंगूरे कौली (Angur-kauli)
अंगूरे खिरस (Angur-khiras) (انگور خرس) रीछ द्राक्ष। यूवी अर्साई फालिया Uvao Ursi folia-ले०। ए० मे० मे०।

अंगूरे खुश्क (Anguro khushk) انگور خشک फा०, मुनक्का, सूखे अंगूर, किशमिश। Raisins (Uvae)।

अंगूरे रूबाह (Anguro rubah) انگور روباه फा० मको, काला मको, क़ाकमाची-हिं०। को विदार, कृष्णकाकमाची-सं०। Solanum Nigrum, Bl not Linn ले० फा० इं०।

अंगूरे रूबाहे सुर्ख [Angure-rubāhe surkha]-फा० कोविदार। रक्तकोविदार सं०। मको, रक्त [लाल] मको पं०। हिं०। Solanum Rubrum, Mill।

अंगूरे रूबाहे सियाह [Anguro-rubahe siyah] फा० انگور روباه سیاه। काला मको हिं०। Solanum nigrum, Bl not Linn।

अंगूरेशिगाल (Angur shighal)-फा० انگور شغال मको - Dulcamara ले०। Bittersweet इं०।

अंगूरेशिफा (Angur shifa)-फा० انگور شفا मको। हिं०। Dulcamara ले०।

अंगूरेसग (Angur sag)-फा० انگور سگ Jacquins nightshade। इं० हि०

अंगूरीशकर (Anguri shakar) शकर انگوری شکر द्राक्षौज, द्राक्षखण्ड। Dextrose। अंगूरकी शर्करा।

अंगूरीशराब (Anguri sharab)-हिं०, प०, द्राक्षासव, मद्य। खम्र (خمر), शराब (شراب), अ०। मै (مے), बादह (بادہ), (८ मुल (مل)-फ़ा०। द्राक्षायाम-ता०। द्राक्षाराधि, द्राक्ष रसम-ते०। मुस्तिरिकुम्प पक्कम-कारायम-मल०। द्राक्ष-सुधास्-गु०। मुदिर-का भरकु, मुदिर-क-पान-सिं०। वाइनम (Vinum "Fermented juice of grapes-Wine or port wine) ले०। स० फा० इं०।

अंगूरीसिर्का (Anguri-sirka)-हिं०, द० अंगूरेर सिर्का-बं०। ख़ल्लुल समर حل الثمر ख़ल्लुल अनब (حل العنب) अ०। सिर्कइ अंगूरी (سرکہ انگوری)-फ़ा०। दिराक्ष-कार्डी ता०, द्राक्ष-पुल्लगीलु-ते०। मुन्तिरिङ्ङ-काटि मल०। द्राक्षी-काडी कना०। द्राक्ष सिर्का गु०। विनेगर आफ़ ग्रेप्स (Vinegar of grapes or wine vinegar) इं०। स० फा० इं०।

अंगूरेरसिर्का (Angurer-sirka) बं०। अंगूरी सिर्का। (Vinegar of grapes)। स० फा० इं०।

अंगूलिया-पीपर (Anguliya piper)

(Angez) अंगेज़ अफ़। अफ़ग़ानी में इसका नाम नूरेमालम है। यह एक ... जो गीलान के पहाड़ों में उगता है। ... र व मांदा भेद से दो प्रकार का होता है।

अंगेजअवरतस (Angez avaratas) फ़्रें० (महापुरदचीन मस।

अंगेलिकाआर्केञ्जलिका (Angelica Archangelica) ला० सुम्बुलखताई (سنبل خطائی) पालखइमेद। इं० हैं० गा०।

अंगेलिकागार्डेन (Angelika-garden) इं० सुम्बुल खताई (سنبل خطائی) पालखइ मेद इं०। इं० गा०।

अंगेलिकाग्लाका (Angelica—glauca, Edgw) ले० चार० स्त्रा० प०। मे० मो०।

अंगेलिकारूट (Angelica-root) इं० बेख़ सुम्बुलखताई (بیخ سنبل خطائی) अंग लीका (انجلیقا) पालखइ मूल।

अंगेलिकासीड (Angelica—seed) इं० तुख़्म सुम्बुलखताई (تخم سنبل خطائی) पालखइ बीज।

अंगेलिम (Angelim)—इं० ऑकमारी, औझनी। फा० इं०।

अंगेलिमअमरगोसो (Angelim amar goso) इं० करारोपा। फ़ा० इं० १ भा०।

अंगेलिम आवेन्सिस (Angelim Arvensis) ले०। ऑकमारी, औझनी। फ़ा० इं०

अंगोकर [Angokar]-ते०, पारकरेला, हिं०। फा० इं० च० भा०।

अंगोजह [Angozah]-انگوزه फा०। हींग हिं०। हिंगु, रामठम्-सं०। Assafœtida।

अंगोजहे इलरी [Angozah ilari] الری انگوزه फा० हींग, हिं० Assafœtida।

अंगोद वर्तन [Angoda vartan]-सं०, अंगलेपन। अनुलेपन, लेप। फा० इं०।

अंगोरम [Angoram]-कोंपल नवपल्लव, Bud।

अंगोन [Angoun]-पर, कली। Bud।

अन्गेण्टम् [Unguentum]-लै०, [ए० व०], अन्गेण्टा [Unguenta]। ऑइंटमेण्ट [Ointmont]-इं०[ए० व०], ऑइंटमेण्ट्स [Ointmonts] [ब० व०]। मलहम, अनुलेप-हिं० । मर्हम [ए० व०), मराहम 'ब० व०' अ०,-फा०।

अन्गेण्टम अर्थात् मलहम एक या अनेक औषधों को किसी प्रकार की वसा या तैल प्रभृति में मिलाकर निर्मित किया हुआ एक अर्ध तरल या मृदु यौगिक होता है। जो केवल बाह्यरूप से उपयोग में लाया जाता है। मलहम प्रस्तुतिकरण में निम्नांकित वसामय तैलीय पदार्थ बेसिस (मुख्य अवयव) रूप से अलग से अथवा एक दो मिलकर उपयोग में आते हैं, यथा—(१) विशुद्ध भेड़ की वसा (२) शूकर वसा, (३) शूकर की लाबान युक्त वसा, (४) ह्वेल मत्स्य के शिर की वसा (५) भेड़ ऊर्णवसा, (६) मोम, (७) जैतून तैल, (८) बादाम तैल, और (९) पैराफीन। सूचना—उष्ण देशों में जहां उष्मा धिक्य के कारण मलहमें अत्यन्त मृदु हो जाते हैं वहां पर साधारण बेसिस की स्थान में हार्ड पैराफिन (वसाकर कठोर की हुई) शूकर वसा, विशुद्ध भेड़ की वसा। और श्वेत या पात मोम उपयोग में ला सकते हैं।

अंघ्राल्जी (Anghralgi)—स०, स्त्री० अग्न्यालसी रोग।

अंघ्रि (Anghrih)-सं०, पु० (Root) वृक्ष मूल, जड़। रा० नि० व० २। अम। पाद। श० नि० व० १८।

अंघ्रिग्रन्थिकम् (Anghri-granthikam) सं० क्ली० । पिप्पलीमूल। Piper root।

अंघ्रि जिह्विक (Anghri jihvikah) सं०, पु० दमनक वृक्ष।

अंघ्रि नामक (नामन्) (Anghrinamakah)-सं०, पु०, दमनक वृक्ष, रा० नि० व० ३। अम०।

अंघ्रिपः (Anghripah) सं० पु० वृक्ष। रा० नि० व० २। हला०।

अंघ्रिपर्णिका (Anghri parnika) सं०,

अंघ्रिपर्णी (Anghri parni) सं०, स्त्री० पृश्निपर्णी। चाकुलिया बं०। भा० पू० १ भ०।

अंघ्रिवला (Anghri bala) सं०, स्त्री० पृश्निपर्णी।

अंघ्रिवल्लि (का)सं०, स्त्री० } पृश्निपर्णी।
अंघ्रिवल्ली (सं०, स्त्री० } चाकुलिया

बं०। प्र० टी० र०। Uraria Lagopoides,

अंघ्रिष (Anghri shah) सं०, नाम का खास रोग। देखो-व्याघ्रपा।

अंघ्रिसन्धि (Anghri

अंघ्रिस्कन्ध Anghri

अंघ्रग

M

अंगोरम [Angoram]-कोंपल, नवपल्लव, Bud।

अंगोन [Angoun]-पर, कली। Bud।

अंग्वेणटम् [Unguentum]-लेo [एo वo], अंग्वेण्टा [Unguenta]। ऑइंटमेण्ट [Ointment]-इंo [एo वo]; ऑइंटमेण्टस [Ointments] [बo वo]। मलहम, अनुलेप-हिo। मर्हम (एo वo), मराहम बo वo अo,-फाo।

अंग्वेण्टम अर्थात् मलहम एक या अनेक औषधों को किसी प्रकार की वसा या तैल प्रभृति में मिलाकर निर्मित किया हुआ एक अर्ध तरल या मृदु यौगिक होता है। जो केवल बाह्यरूप से उपयोग में लाया जाता है। मलहम प्रस्तुतिकरण में निम्नांकित वसामय तैलीय पदार्थ वेसिस (मुख्य अवयव) रूप से अकेले अथवा एक दो मिलकर उपयोग में आते हैं, यथा—(१) विशुद्ध भेड़ की वसा (२) शूकर वसा, (३) शूकर की लोबान युक्त वसा, (४) ह्वेल मत्स्य के शिर की वसा (५) भेड़ ऊर्णवसा, (६) मोम, (७) जैतून तैल, (८) बादाम तैल, और (९) पैराफीन। सूचना—उष्ण देशों में जहां उष्मा धिक्य के कारण मलहमें अत्यन्त मृदु हो जाते हैं वहां पर साधारण वेसिस की स्थान में हाइड्रस लार्ड (बनाकर कठोर की हुई) शूकर वसा, विशुद्ध भेड़ की वसा। और श्वेत या पीत मोम उपयोग में ला सकते हैं।

अंघ्रालजी (Anghralgi)—सं०, स्त्री० अपभांकाशी रोग।

अंघ्रि (Anghrih)-सं०, पु० (Root) द्रुम मूल, जड़। रा० नि० व० २। अम। पाद। पा० नि० व० १८।

अंघ्रि ग्रन्थिकम् (Anghri granthikam) सं० क्ली०। पिप्पलीमूल। Piper root।

अंघ्रि जिह्विकः (Anghri jihvikah सं०, पु० दमनक वृक्ष।

अंघ्रि नामकः (नामन्) (Anghrinamakah)-सं०, पु०, दमनक वृक्ष, रा० नि० व० १०। अम०।

अंघ्रिपः (Anghripah) सं० पु० वृक्ष। रा० नि० व० २। हला०।

अंघ्रिपर्णिका (Anghri parnika) सं०,

अंघ्रिपर्णी (Anghri parni) सं०, पृश्निपर्णी। चाकुलिया बं०। भा० पू० १ भ०।

अंघ्रिबला (Anghri bala) सं०, पृश्निपर्णी।

अंघ्रिवल्लि. (का) सं०, स्त्री० } पृश्निपर्णी।
अंघ्रिवल्ली (सं० स्त्री० } चाकुलिया।

पं०। म० टी० र०। Uraria Lagopoides.

अंघ्रिषः (Anghri shah) सं०, पाम का क्षुद्र रोग। देखो-अघ्रुषः।

अंघ्रिसन्धि (Anghri sandhih
अंघ्रिस्कन्ध Anghri skandhah } गट्टा
अंघ्र्यः (Anghryah)
Malleolus इं० वo।

(अपूर्ण)

अनुभूत योगमाला ग्रन्थमाला द्वारा प्रकाशित ग्रन्थरत्न ।

वैद्यक विद्या से प्रेम करने वालों के लिये अमाप्य रत्न; कोई भी वैद्य, कोई गृह इन रत्नों से रिक्त न रहना ही योग्य है। आज ही आर्डर दीजिये।

लिखित गुण न होने पर दाम वापिस होने की प्रतिज्ञा है।

सिद्धौषधि प्रकाश—यह अपूर्व पुस्तक आयुर्वेद चिकित्सा के प्रचार करने के अर्थ प्रकाशित हुई है। इसमें सिर से लेकर पैर तक होने वाले स्त्री पुरुष, और बालकों के रोगों को दूर करने के लिये उत्तम योग प्रकाशित किये गये हैं। पुस्तक प्रत्येक घर में रहने योग्य है। मूल्य १।) रु०

वैद्यक शब्दकोष—यह कोष भाषापारि असे संस्कृत दवाइयों के नाम सरल हिन्दी तथा बतलाने के लिये प्रकाशित किया गया है मू० ।) आना।

स्त्रीरोग चिकित्सा—यह एक अनुपम नई और विशेष उपयोगी विषय युक्त, ६६ पृष्ठों में समाप्त हुई है, स्त्री रोग कैसे पैदा होता है और कैसे दूर होता है। मू० ॥) आना।

फोड़ा—फोड़ा नाश करने के अनुभूत योग लिखे हैं फोड़ा, किन २ कारणों से होतो है। मू० ।-) आना।

राजयक्ष्मा—यह पुस्तक पं० विश्वेश्वर दयालु वैद्यराज सम्पादक अनुभूत योगमाला के परिश्रम द्वारा लिखी गई है जो प्रयाग पर वैद्य सम्मेलन में पास की है और बड़े २ विद्वानों ने प्रशंसा पत्र दिये हैं। मू० ।) आना।

दमा (श्वास)—जो लोग कहते हैं कि जाता ही नहीं वह देखेंगे किइस पुस्तक कहावत को जड़ से मिटा दिया। आना।

रोग—सब प्रकार की बवासीर और मस्से दूर करने के उपाय मू० ॥) आना।

हरिश्चरितिकापरत्न—समस्त रोगों के उत्तम योग मय औषध सहित ।=) आना।

मधुमेह डायबटीज़—यह रोग क्या है कैसे होता है आदि का विवेचन है। यह पुस्तक स्वर्गवासी पं० परशुराम शास्त्री विद्यासागर रचित है। मू० ॥) आना।

व्रणोपचार पद्धति—इस पुस्तक में विद्रधि, नहरवाद, नासूर, आग से जलना, चोट लगने के घाव, विसर्प, गलगंड, गंडमाला, भगंदर, ग्रन्थि, अर्बुद, पामारोग की चिकित्सा लिखी है। मू० ।=) आना।

सिद्ध प्रयोग प्रथम भाग—इस में वही प्रयोग एकत्रित किये गये जो अनुभूत योगमाला में गत ५ वर्षों में निकल चुके थे जिनकी परीक्षा हो चुकी थी उन्हीं को श्लोक बद्ध करके हिन्दी टीका युक्त प्रकाशित किया गया है मू० १) रु०।

सिद्धप्रयोग द्वितीयभाग—यह पुस्तक प्रथम भाग की तरह पर बनाई गई है इसमें सन् १९२७ के परीक्षा में सिद्ध योगों का संग्रह प्रथम के अनुसार ही श्लोक बद्ध और भाषा टीका युक्त किया गया है। मू० ॥) आना।

आत्रेय वचनामृत—आत्रेय वचनामृत पुरुष क्या है, यह नित्य है या अनित्य? पुनर्जन्म क्या है? सत्पुरुष, सदाचार, ब्रा कार्य करने की विधि आदि का वर्णन है। मू० ॥) आना।

विन्ध्यमहात्म्य—विन्ध्यमाहात्म्य यह पुस्तक प्रत्येक सनातनधर्मी के देखने योग्य है मू० १॥) रु०।

कुष्ठरोग—कुष्ठ के भेद और उसकी चिकित्सा। मू० ॥) आना।

स्वास्थ्य विज्ञान—यह अपूर्व ही उत्तम पुस्तक है दैनिक आहार, विहार, वस्त्र, वेश, भूषा का वर्णन है। मू० ॥)

अम्बष्ठ—प्राचीन, अर्वाचीन, स्यात् मूत मोर... रोगों के चिकित्साक्रम युक्त पुस्तक छापी गई है। मू० ॥) है।

भारतीय रसायनशास्त्र—सोना, चांदी बनाने की उत्तम तरकीब लिखी गई है जिससे प्रत्येक मनुष्य लाभ उठा सके। मू० लागत मात्र ॥) आना।

सर्पविष विज्ञान—इसमें सर्पों की पहिचान और उनकी चिकित्सा का वर्णन है। मू० १) रु०।

फेफड़ों की परीक्षा—स्टेथिस्कोप लगा कर डाक्टर लोग कैसे फेफड़ों की परीक्षा करते हैं। मू० १॥) रु०।

...—वैद्यों को घाव धोना और पट्टी बांधना नहीं आता इसमें चित्र देकर समझाया गया है। मू० १) रु०।

मूत्र परीक्षा—इसमें मूत्र का परीक्षा डाक्टरी मतानुसार और आयुर्वेदीय मतानुसार वर्णित है। मू० १)।

पेटेन्ट औषधें और आयुर्वेद—इसमें पेटेन्ट दवाइयों के नाम हैं कि अमुक पेटेन्ट औषधियों में कौन २ वस्तु किस २ प्रमाण में है नाम २ क्या है। मू० ॥) आना।

आंत्ररोगांक—आंतों में कौन २ रोग होते हैं, उनके नाम और चिकित्सा का वर्णन है। मू० १)।

नवरोगांक—कौन २ से नवीन रोग अब पैदा हुये हैं जिनका जिक्र आयुर्वेद में नहीं है। मू० १)।

धूम्रपानांक—गुर्दे में कौन २ रोग होते हैं और उनकी क्या चिकित्सा है। मू० ॥)

यकृतांक—कलेजे में खराबी होने से क्या २ रोग होते हैं उनकी क्या २ चिकित्सा है। मू० ॥) आना।

...यांक—उपदंश [आतशक] क्या है, कैसे होता है, कैसे मिटाई जाती है। मू० ॥) आना।

सुजाकांक—सुजाक कितने प्रकार का होता है कैसे पीछा छुड़ाया जाता है। मू० ॥)

...—पित्तरोग कितने प्रकार के होते हैं कैसे मिटाये जाते हैं। मू० ॥)

प्रमेहांक—प्रमेह रोग आज कल कैसे सब आदमियों पर कब्जा किये हैं। इसका कारण तथा उपचार। मू० ॥)

मधुमेह—औरतों के प्रदर रोग का पूरा वर्णन है। मू० ॥) आना।

...—भारत के प्रसिद्ध २ वैद्यों द्वारा आविष्कृत सन्निपात की चिकित्सा है। मू० ॥) आना।

...—कोकशास्त्र का निचोड़, नपुंसकता नाशक योग, तिला, सुन्दरता के लाने के उपाय। मू० ॥) आना।

मदनीमंजु—मू० ॥) आना।

...र्यांक—मू० ॥) आना।

शिरोरोगांक—मू० ॥) आना।

अनुभूत योगमाला की पुरानी फाइलें—सन् १९२४ की०, २) सन् १९२८ की० ४) सन् १९२९ की० ४) सन् १९३० की० ४), सन् १९३१ की० ४) एक साथ लेने पर १५) में दे देंगे, और पिछली फाइलें समाप्त हैं लिये जितना व्यय होगा।

रोगी रजिस्टर—मू० २) रु०।

चिकित्सक व्यवहार विज्ञान—...

औषधि गुणधर्म विवेचन—मू० ...)

स्त्री चिकित्सा—मू० १) आना।

मिलने का पता—अनुभूत योगमाला आफिस, बरालोकपुर, इटावा।

